॥ प्रयागनारायण विलास ॥

अलङ्कारग्रन्थः ॥

जिसमें

देव, पद्माकर, दत्त, देवकीनंदन, मदनेशादि अनेक प्राचीन व आधुनिक कवियोंकी उत्तमोत्तम कविता यथावत् उदाहरण की रीतिपर संग्रह कीगई है ॥

जिसको

उन्नामप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासी पण्डित बद्रीदीनदीक्षित ने अनेक ग्रन्थोंका मत लेकर संग्रहीत व निर्मितकिया ॥

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी.आई.ई) के छापेख़ाने में छपा

सन् १९०६ ई०
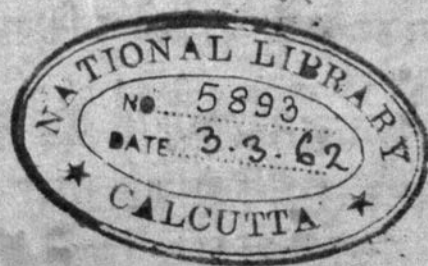
॥ विज्ञापन ॥

प्रकट हो कि यह (श्रीप्रयागनारायणविलास) नामक अ-लंकार का अद्वितीय ग्रंथ मैंने महान् परिश्रम से दूलहकविकृत 'कविकुलकण्ठाभरण, और केशव कविकृत 'कविप्रिया, मदनेश कविकृत फतेविलासादि अनेक ग्रंथों की सहायता और सम्मति लेकर निर्मित व संग्रहीत किया ॥

इसके पहिले भी कई एक ग्रंथ श्रीमान् मुंशीनवलकिशोरजी की आज्ञानुसार मैंने बनाये और वे उन्हीं के छापेख़ाने में छापे गये हैं कुछ समय गत हुआ कि परमात्माने उनको नरलोक से बुलाकर देवलोक में बास दिया तदनंतर उनके स्थानापन्न उनके परमधार्मिक सज्जनानन्ददायी श्रेष्ठ पुत्र श्री मुंशीप्रयागनारायण जी सुशोभित हैं जोकि गुणगाहकता में उन्हीं के समान हैं और विशेषकर कवि व पण्डितों के जीवनप्रानहैं उक्तग्रंथ इन्हीं बाबू जी के नामपर निर्मितकर इन्हीं को अर्पण किया ॥

(स०) श्रीयुत प्रागनरायण के यह नाम कि बंदि विलास बनाई। जाय समीप सुनाई यथा कविता विधि की यहिमें चतुराई ॥ रीझै बनाय कियो परमादर काह कहौं गुणगाहँकताई। चाहते चौगुनी संपतिदै पतिदै अतिशै तब कीन्हीं बिदाई ॥

यावत् अलंकार प्राचीन ग्रन्थों में कहेगये हैं वे सब पूर्ण रीति से लक्षण व उदाहरण सहित इस ग्रंथमें वर्णित हैं तिसपर भी कठिन२ स्थलोंपर वार्तिक व अतिकठिन शब्दों पर नोट करदिया गया है जिसमें अल्पबोध होने में भी सबको समझ पड़ै ॥

अब मैं विशेष और कुछ न कहकर अपने परमप्यारे गुणगा-हँक श्री बाबूप्रयागनारायणजी को अन्तःकरण से आशीर्वाद देताहूं कि जिन्हों ने मेरे परिश्रम को सफल किया ॥

कवित्त ॥

जौलौं सूर्यचंद को अमंद तेज अम्बरमें जौलौं धरा-धर शीशधरे धरातल रहै। जौलौं पंचतत्त्वनमें शुद्धसत्त्व देखियत जौलौं सुरसरिता समुद्र मध्य जल रहै ॥ जौलौं ध्रुवलोक में अशोकध्रुव राजेरहैं जौलौं विधि सृष्टि सब थापी थल थल रहै। बन्दी कवि कहै श्रीप्रयागनारायण जी तौलौं तेरी साहिबी सदैवही अटल रहै ॥

इति ॥

मसवासीनिवासी
पं० बन्दीदीनदीक्षित
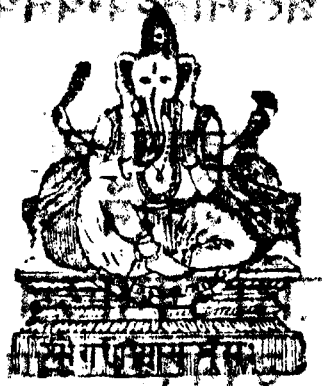
श्रीप्रयागनारायण विलास ग्रन्थः ॥

(दोहा)

सिद्धिसदन जय गजबदन मदनकदनके लाल ।
विघनहरन अशरनशरन जनपर होहु दयाल ॥

(स०) चारिपदारथ दायक हो शुचिता शुभसिद्धि सुभायकहौं । दुखघायक वेद पुराण कहैं स्वइ रीति धरे मन कायकहौं ॥ गुणगायक दासन को सुखरास हुलास विलास पुरायकहौं । द्विजवृन्दि सहायक सत्यसदा सब लायक श्रीगणनायकहौं ॥

(क०) श्रीप्रयागनारायण विलास ग्रन्थ अद्भुत अलङ्कार पन्थ जामें रचत सुभायकै । नायकान लक्षण विचक्षण बतावैं जामें छन्दछन्द गावैं कवि कविता बनायकै ॥ कन्दी कवि सकल कलोन सविधान आन सम्मत सुजानन को उर पुर लायकै । करत प्रारम्भ गुरुगोविन्द मनायकै सुध्यायकै गिरीश गिरा गौरि गणनायकै ॥

अथ अलङ्कार लक्षण ॥

रसादि भिन्नभिन्नत्वेसतिव्यंग्यमर्यादाविनास्पष्टप्रकाशते अलङ्कारत्वम् ॥

(दो०)रसअरुव्यङ्ग दुहूनसों जुदो परै पहिंचानि।
अर्थ चमत्कृत शब्दमें अलङ्कारसो जानि ॥

तत्रादौ उपमालक्षण ॥

(दो०)उपमानहुँ उपमेयकी समशोभा सरसाय।
आकृति शीलकबरणगुण उपमाकहत बनाय ॥

पुनः—(दो०) उपमाजोसादृश्यते बिनदेखे लखिजाय।
उपमासोईकहतहैं सुकविनके समुदाय ॥
उपमानहुँ उपमेयगत धर्मएक अनुरूप।
व्यंग्यविनाशोभाप्रगटउपमागनतअनूप॥
उपमाएकनटीजहां करिकै बुद्धि विवेक।
मायालौंव्यापक रचैआपहि भेद अनेक ॥
उपमानहुँ उपमेय करि वाचकधर्मसहाय।
पूरणउपमाहोततहँकहतसुकविसमुदाय ॥
इनचारिहुके लोपते लुप्ताहोत विचार।
कहुँसोरह कहुँ आठहूँ कहुँचार निर्द्धार ॥

अथ उपमानउपमेय नाम ॥

(दो०)उपमानजु विषयीकहत अरुअवर्णि सो जान।
विषय वर्णिप्राकृतबहुरि है उपमेय प्रमान ॥
जाको उपमादीजिये तहि कहत उपमान।
जाको वर्णन कीजिये सो उपमेय बखान ॥
चन्द्रादिक उपमान हैं वदनादिक उपमेय।

तुल्यअर्थ वाचक कहैं धर्म जौनि गुणलेय ॥
धर्म दुहुनको धर्म है वाचक त्रिविध विधान ।
ज्यहिवर्णत उपमेय सो समता जस उपमान ॥

वाचक नाम ॥

(दो०) जिमि जैसे ज्यों तूलसम सरिसमानलों जानि ।
सोये सोयन आदिइव वाचक विविध बखानि ॥

उपमान नाम यथा भूषणचन्द्रिकायाम् ॥

(दो०) अहिशशि खञ्जन कीरपिक कुन्दबिम्ब दरबील ।
केलिकञ्ज यक बेलिमें देखे सहित सबील ॥
टीकाकछु अबकरहुँ सो सुमहुँ सजन बुधिमान ।
व्यंग्यलक्षणा धुनिदशा गुणरस हाव विधान ॥
औरहु कविता भावबहु थोरो वरण प्रसङ्ग ।
सब गुणवारे रीझिहैं जे कविता के अङ्ग ॥
कालिदास आदिक कियो जोकविता को पन्थ ।
उनहिंन के अनुसार सों करत नयो यह ग्रन्थ ॥
निज लक्षण करि लक्षहू अरु प्राचीनहुँ राखि ।
लगैसरल सबको सुलभ कविता कविताभाखि ॥

अथ पूर्ण उपमा लक्षण ॥

वाचक धर्म उपमेय उपमान ये चारो जिसमें मिलैं उसे पूर्ण उपमा जानिये ॥

उदाहरण-(स०) बिहँसे द्युति दामिनि सी दरशै तन ज्योति जुन्हाई जुईसीपरे । छवि पायँनकी अरुणाई अनूप ललाई जपाकी जुईसी परे ॥ निकरैसी निकाई

१—दुपहरिया

मिहारें मई रतिरूप छोनाई तुईलीगरे । मुकुमाला मञ्जु मनोहरता मुख चाइता चारु चुईसी पो ॥

टी०। द्युति उपमेय दामिनी उपमान सी वाचक दरसाना धर्म ऐसेही चारो तुकमें जानिये याते पूर्णोपमालङ्कार है। सखी का कथननायकप्रति रुचि उपजाना। सुधासारोपा लक्षण। द्युति दामिनी रोप्या रोपक शब्दते सारोपा। विहँसना कारणदर्शना कार्य ते सुधावचन वैशिष्टता अर्थाव्यञ्जना है स्वतःसंभवी वस्तु ते पूर्णोपमा। मालोपमा। अलङ्कारते अलङ्कार अर्थशक्ति के ये बारह भेद हैं माधुर्य प्रसाद गुण है॥

पुनः यथा-(क०) खाई केलि भवनभुलाय भोरी भामिनि को कीन्हीं फूल गन्धकी प्रवास पौन रुखतें। कञ्चन कलित तन कृश रतिरमनीय लीन्हीं पाहि प्रीतम प्रसून सेज सुखतें॥ भनैं पजनेश भुजभरत हहाकै हरि सीबा के समेटि सांस नीवी दाबि दुखतें। आहिकरि उछलि सचोट पन्नगीसी ऐंठि उमिठि अरीरी मैं मरीरी कढ़ी मुखतें॥

टी०। इहां पन्नगी उपमान। भामिनी उपमेय। सी वाचक। ऐंठना उमठना धर्मते पूर्णोपमा। संयोगशृङ्गार। नवोढ़ा नायिका स्वतः सम्भवीवस्तु ते अलङ्कार आलम्बन विभाव। नायिका पन्नगी को रोप्या रोपक नायकको मिलनो कारण। दुःखहोनो कार्य्य याते शुद्धासारोपा लक्षणाहै॥

पुनः-(क०) दत्तकवि जादिन ते बालम विदेश गये ता दिन ते ललना अनङ्गसों डरीरहै। कुञ्जनमें हेरि हेरि आधी निशि टेरि टेरि आँगुरिन छालापरि गनत घरीरहै॥ शोचनकी बतिया सकोच न जनायो जात मोचन चहत प्राण धीर न धरीरहै। चन्दमुखी जम्भालगी

विरह [illegible] लगी [illegible] के [illegible] [illegible] रम्भासी खरी रहै ॥

टी० । इहां चन्दमुखी उपमेय रम्भा उपमान । सी वाचक खरी रहना धर्म ते पूर्णोपमालङ्कार है । वियोगशृङ्गार । इहां चन्द्रमुखसेप्यारोपक । विरह कारण । दुःख होना कार्य्य ऐसे सम्बन्ध ते शुधासारोपालक्षणा । सुमिरणदशा इत्यादि ।

(स०) मगहेरत दीठि हेरायगई जबते तुम आनन्द औधिमदी । बरसौ कलहूँ घन आनँद प्यारे बढावतहौ इत शोचनदी ॥ हियरा अतिओट उदेगकी आँच चुवावत आँशुन मैनमदी । कब आइहौ औसर जान सुजान बहीरलौंजातिहै बैसलदी ॥

टी० । इहां बैस उपमेय । बहीर उपमान । लौं वाचक । लदना धर्मते पूर्णोपमालङ्कार वियोगशृङ्गार । प्रौढा प्रोषितपतिका नायिका । दीठिको हेरानो शोच की नदी बहीरलौं बैसलदनो । ये सब पद असम्भव ते लक्षण लक्षणा वियोग शृंगार सुमिरण । अभिलाष दशा कविनिबन्ध रूपकते पूर्ण उपमा ।

(क०) छहरे छबीली छटा छूटि छिति मंडलपै उमग उजेरी महा ओज उजबकसी । कविपजनेश कंज मंजुल मुखी के गात उपमाधिकात कल कुन्दन तबकसी । फैली दीप दीप दीप दीपति दिपति चारु दीपमालिकासीरही दीपति दबकसी । रहत न ताब लखि मुख महताब आब निरखु सिताब महताब के भभकसी ॥

टी० । इहां मुख आब उपमेय । महताब भभक उपमान । निरखमा धर्म्म । सी वाचक ते पूर्णोपमा लङ्कार है । यदापूर्ति

१-उद्वेग २-सेना के [illegible] [illegible] है

इत्यादि। सखी नायिकसे रुचि उपजावै है चलिदेखो। कविनिर्व-क्ता वस्तुत अलङ्कार। मुग्धानायिका॥

(क०) सखिन को शोच गुरु लोगन सकोच मृग लोचनि रिसानी उन नेक हँसि छुवोगात। देवं वै सुभाय मुसक्याय उठिगये इन ससकि ससकि निशिरोय खोय पायो प्रात॥ जानै कोरी वीर बिन विरही बिरह पीर हाय हाय करि पछितात न कछू सोहात। बड़े बड़े नैनन ते आंसु भरि भरि ढारि गोरे गोरे मुखपर ओरेसे बिलात जात॥

टी०। इहाँ आँसू उपमेय। ओरे उपमान। से बाचक। बिलाना धर्म याते पूर्णोपमालङ्कार है। मुग्धाकलहंतरिता नायिका। चिन्ता सुमिरणदशा। कवि निबन्ध वक्ता वस्तु ते अलंकार।

(क०) कोस लखि ललित भरोस कीन्हो अफसोस रूपहू ते खाली खुली मूठि दरशाति है। निपट नरम जामें जौहर न जाने जात सानधरे कहा एक आनाकी बिसाति है॥ वेनी कवि कहै कुटिलाई उर अंतर में मलिन स्वरूप न कछूक करामातिहै। दान समै ऐसे दुरि जात सूम स्यार सुत कामपरे कच्ची ज्यों कृपान मुरि जाति है॥

टी०। इहारूपक अलंकार ते पूर्णोपमा लङ्कार है याहू में पूर्णउपमा होय है॥

(स०) कुंजगलीन ह्वै आनिकढ़ो झुकि वेणु बजावतही सो गोपालहै। कुन्दकलीन की हाथ छरी उर मंजुल मौलसिरीन कि मालहै॥ आनँदकन्द कि आनँदचन्द चुभी चित मन्द मनोहर चालहै। पैन कढ़ै कबहूँ चित ते वह ताकनि तीरसी वीर दुसालहै॥

टी०। इहां ताकनि उपमेय। तीर उपमान। सी वाचक। दुसाल होना धर्मसों पूर्णोपमाहै। ऊढ़ा नायिका देवरतिभाव ध्वनि॥

(दो०) उड़ी गुड़ी लखि लालकी अँगना अँगना माहँ।
बौरी लौं दौरी फिरै छुवत छबीली छाहँ॥

टी०। इहाँ छबीली अङ्गना उपमेय बौरी उपमानलौं वाचक दौड़ी फिरना धर्म्म ते पूर्णोपमा है॥

(स०) वै नँद गाउँते आये इतै उत आई सुता इक कौन्यहुँ ग्वालकी। त्यों पदमाकर होत जुराजुरी दोउन फागुरची इक ख्यालकी॥ डीठि चली इनकी उनपै उनकी इनपै चली मूठि उतालकी। डीठि सों डीठि लगी इनके उनके लगी मूठिसी मूठि गुलाल की॥

टी०। इहां डीठि मूठि उपमेय। डीठि मूठि उपमान। सीवाचक। लागना धर्म याते पूर्ण उपमा। अन्योन्याभी होता है। संयोगशृंगार। स्वतःसम्भवी अलङ्कारते अलङ्कार जानिये॥

(दो०) चिलक चिकनई चटकसों लफति सटकलौं आय।
नारि सलोनी साँवरी नागिनि लौं डसिजाय॥

टी०। इहां नारिउपमेय। नागिनि उपमान। लौं वाचक। डसिजाना धर्म ते पूर्णउपमा है॥

(क०) जहाँ अम्बुजासन खगासन वृषासन गणेश शेश आसन सिंहासन तरे रहैं। तापर अनन्तरूप सेज ब्रह्मरूपिणी के चन्द लौं वितान छाहँ शीशपै करे रहैं॥ श्रीपति जू रहतहैं चरण शरण ताके चाकर से बाहर विभाकर खरे रहैं। मन्दर से धनाधीश द्वारपै कलंदर से वन्दर से बाहर पुरन्दर परे रहैं॥

टी०। इहां वन्दर उपमान। पुरन्दर उपमेय। से वाचक। परे

रहना धर्म ते पूर्णोपमालंकार। देवरति भावध्वनि। जक्तमाता शक्ति को वर्णन है॥

(दो०) पहुंचत उठि रण सुभटलौं रोंकि सकत कोउ नाहिं।
लाखनहूं की भीर में ये आंखी चलि जाहिं॥

टी०। इहाँ आंखी उपमेय। रणसुभट उपमान। लौ वाचक। चलिजाना धर्म ते पूर्णोपमालङ्कार। विशेषोक्ति विभावनाभीहै॥

(क०) गोरे मुख गोल हरे हँसत कपोल लोने लोचन विलोल लोग लीन्हे लोक लाजपर। लोभा लगि लाल लखि शोभा कवि देव कहै गोभा से उठत रूप शोभा के समाज पर॥ बादले कि सारी जग मग जरतारी दरदावन किनारी भीनी झालरि की साजपर। मोती गुहे कोरन चमक चहुँ ओरन ज्यों तोरन तरैयन के ताने द्विजराज पर॥

टी०। इहां गोभा उपमान। रूप उपमेय। से वाचक। उठना धर्म ते पूर्णोपमा। मोतीकोर उपमेय। तरैयाँ उपमान। ज्यों वाचक। तानना धर्म ते पूर्णोपमा। मुग्धानायिका सखीनायकते रुचिउपजावै है॥

(दो०) नये विरसिये अतिनये दुरजन दुसह सुभाय।
आंटे परि प्राणन हरें कांटे लौं लगिपाय॥

टी०। इहां दुर्जन उपमेय। कांटा उपमान। लौ वाचक। लागना धर्म्म ते पूर्णोपमा॥

(दो०) लख्यो न कन्त सहेट में लख्यो नखतको राय।
नवल बालको कमलसो गयो वदन कुँभिलाय॥

टी०। इहाँ वदन उपमेय। कमल उपमान। सो वाचक। कुम्हिलाना धर्म्म ते पूर्णोपमा है। कवि की उक्ति अथवा सखी की उक्तिहै। मुग्धा विप्रलब्धा नायिका है॥

(दो०) सबही तन समुहाति छन चलत सबनदै पीठि।
वाही ते ठहराति है कबिलनुमा लौं डीठि॥

टी०। इहाँ कबिलनुमा उपमान। डीठि उपमेय। लौं वाचक। ठहरना धर्म ते पूर्णोपमा है। परकीया नायिका है॥

(दो०) कौंहरसी एँड़ीनकी लालीदेखि सुभाय।
पायँ महाउरदेनको आपुभई बेपाय॥

टी०। कौंहर उपमान। एँड़ी उपमेय। सी वाचक ललाई धर्म ते पूर्णोपमा है॥

(दो०) हरिछबिजल जबतेपरे तबते छिन बिसरैन।
भरत ढरत बूड़त तरत रहँट घरीलौं नैन॥

टी०। इहां रहँटघरी उपमान। नैन उपमेय। लौं वाचक। भरना ढरना धर्मते पूर्णोपमा है॥

(दो०) श्याम कामसे सुघरतन राधे रतिसीलोनि।
बिचरत ब्रजबीथिनसदा चखझखमनरुचिरौनि॥

टी०। श्याम उपमेय। काम उपमान। से वाचक बिचरना धर्म ते पूर्णोपमाहै देवरति भाव ध्वनि है। इति पूर्णोपमा।

अथलुप्तोपमा॥

(दो०) इनचारौ के लोपते लुप्ता होन बिचार।
कहुँ सोरह कहुँ आठहूं कहूं चारि निर्धार॥
लोपसों लुप्तोपमा अलङ्कार ह्वैजाय।
उदाहरण कछु कहतहौं सुकबिनको मनभाय॥
जोलोपै सोइ नामह्वै लुप्ताहोत प्रमान।
आठभाँतियौं लिखतसो सुकबिबचनअनुमान॥

१-कबिलनुमा एक पुतली होती है उसका मुख सर्वदा पश्चिमको रहता है—

अथ वाचकलुप्ता ॥

(दो०) छुटी न शिशुताकी झलक यौवन झलक्यो अङ्ग।
दीपति देह दुहून मिलि दीपताफदा रंग॥

टी०। इहां देह उपमेय। ताफदा उपमान। दीप्ति होना धर्म है। वाचक नहीं है याते वाचक लुप्तोपमा है। वैस संधिभीहै॥

(दो०) बिम्बाधर ललित करन कमल अमल रुचिलीन।
चक्रवाक युगजगि रहे परम पयोधर पीन॥

टी०। इहां बिम्ब उपमान। अधर उपमेय। ललित धर्म। और चक्रवाक उपमान। पयोधर उपमेय पीनताजगि रहना धर्म। सखी नायकते रुचि उपजावै है प्रौढ़ा नायिकाहै॥

(दो०) वाही दिनते ना मिट्यो मानकलहको मूल।
भलेपधारे पाहुने ह्वै गुड़हरके फूल॥

टी०। गुड़हर उपमान। पाहुना उपमेय पधारना धर्म। सखी वचन नायक ते उपलम्भाहै॥

(दो०) भरीभाँवरे साँवरे रास रसिक रसजान।
वाही में मनभ्रमतहै ह्वै बौंड़रको पान॥

टी०। बौंड़रको पान उपमान। मन उपमेय। भ्रमना धर्म॥

(दो०) रह बरोठे में मिलत पिय प्राणनके ईश।
आवत आवतकी भई विधिकी घरी घरीश॥

टी०। इहाँ विधि की घरी उपमान। घरी उपमेय आवनाधर्म॥

(स०) कहिबे कि कछू न कहा कहिये मगजोवत जोवत ज्वैगयोरी। उन तोरत बार न लाई कछू तनते वृथा योवन ख्वैगयोरी॥ कविठाकुर कूबरीके वशह्वै यश में रस में बिस व्वैगयोरी। मनमोहनको हिलिबो मिलिबो दिन चारिकि चाँदनी ह्वैगयोरी॥

टी०। इहां मिलिबो उपमेय। चाँदनी उपमान। ह्वैजाना धर्म ते वाचक लुप्ता अथवा धर्म वाचक लुप्ता ह्वैजाना दृष्टान्त भी होताहै। जोवत जोवत विवशा परकीया को भाव भी है। वियोग शृंगार सुमिरण चिन्तादशा छेकानुप्रास॥

अथ धर्मलुप्तोपमा॥

(दो०) सुवरणसों तनकामिनी नैनबान समकीन।
देखिलेउ बलि सांवरे हौ तुम परम प्रवीन॥

टी०। इहां सुवरण उपमान। कामिनी उपमेय। सोवाचक। इहां धर्म नहीं है याते धर्म लुप्ताहै। सखी रुचि उपजावै है॥

(दो०) रह्यो चकित चहुँघा चितै चित मेरोमतिभूल।
सूरउदै हूँ आरही दृगन साँझसी फूल॥

टी०। अरुणता धर्म नहीं है याते धर्म्म लुप्ता। प्रतिबन्धक भी है॥

(दो०) छनकचलति ठिठुकति छनक भुजप्रीतमगलडारि।
चढ़ीअटा देखतिघटा बिज्जुछटासी नारि॥

टी०। छटा उपमान। नारि उपमेय। सी वाचक। धर्म नहीं याते धर्म लुप्ता। सखी की उक्ति संयोग शृंगार॥

(स०) विरझानीसी सासु रिसानीसी नन्द जेठानी कछू अनखानी रहै। पियप्यारे कि प्यारी दुलारी बहू अब ताहि रसोईमें जाने कहै॥ कविमंडन बोलत भावतोहो सखि कोउन एतो सयान गहै। यह सोनेसो अङ्ग सोहागभरो कहौ कैसे कै आगिकि आँचसहै॥

टी०। सोना उपमान अंग उपमेय सो वाचक संयोग शृंगार प्रसाद माधुर्यगुन। धर्म नहीं है याते धर्म लुप्ताहै॥

अथ उपमेयलुप्ता ॥

(दो०) हेरत हरि कौतुक कछू उपवनकी अवदात ।
कनकलतासी लतनि में गोरगात दरशात ॥

टी०। इहां कनक लता उपमान। गोर गात होना धर्म। सी वाचक। नायिका को नाम नहीं है याते उपमेय लुप्ता ॥

(दो०) पियबिछुरनको दुसह दुख हरषजात प्योसार।
दुर्योधनलों देखिये तजतप्राण यहिबार ॥

टी०। इहां दुर्योधन उपमान। लों वाचक। प्राण छोड़िबो धर्म उपमेय लुप्ता वियोग शृंगार। प्रवत्स्यत प्रेयसी नायिकाहै ॥

(दो०) नेक न जानी परतियों पगे विरहतनछाम।
उठति दियालौं नादहरि लिये तिहारोनाम ॥

टी०। इहां दिया उपमान। सीवाचक। नादना धर्म उपमेय लुप्ताहै ॥

(क०) कविपजनेश केलि बांछित विभाव नैनी दीन्हीं है डिठोना श्रमस्वेद मुखबरपै। दीठि इँचिजात ईंची ईंचत न खींची खिंचे खिंचतन तसवीर तसवीरगर पै॥ निमिषि निहारि नेह दीपक शिखासी चारु राजै मणिमन्दिर दरीचीके कगरपे। रुंधतीके नखनलों लखत न जौलों तौलों भखत नगीच मीच बैठी मैन सरपै॥

टी०। इहां रुंधती उपमान। लौवाचक। लखना धर्म नायिका उपमेय नहीं है याते उपमेय लुप्ता है पूर्णोपमाभी है। वियोग शृङ्गार। अभिलाष दशा। प्रौढ़ा प्रोषित पतिका नायिका है॥

(दो०) फूलीफाली फूलसी फिरत जो विमल विकास।
भोर तरैयां होयगी चलत तोहिं पियपास ॥

टी०। फूल उपमान। सीवाचक। फिरना धर्म। नायिका उपमेय नहीं है याते उपमेय लुप्ता है॥

(क०) जगमगी जोतिन जराऊ मुख मोतिनकी चन्द्रमुख मण्डल मैं मण्डित किनारीसी। बेनी वरबीर नगहीर गह हीरनकी देव झुमकान पै झमक भीर भारीसी॥ अङ्गअङ्ग उमड्यो परत रूपरङ्ग नवयोवन सुरङ्ग की अनूपगति न्यारीसी। डगर डगर बगरावति अगर आगे जगर मगर पाछे आवत देवारीसी॥

टी०। देवारी उपमान। सी वाचक। जगर मगर होना धर्म। नायिका उपमेय नहींहै याते उपमेय लुप्ताहै। डगर डगर विवशा है सखी वाक्य नायक प्रति। शुक्ला अभिसारिका। ललित हाव। सुद्धासारोपालक्षणा। अगूढ़ व्यंग्य हर्ष उत्कंठा संचारी है॥

(दो०) साहस करि कुञ्जनगई लख्यो न नन्दकिशोर।
दीपशिखा सी थिररही लगे बयारि झकोर॥

टी०। दीप शिखा उपमान। सी वाचक। थहराना धर्म नायिका उपमेय नहींहै याते उपमेय लुप्ता। परकीया विप्रलब्धाहै॥

(दो०) रही पैज कीन्हीं जुमैं दीन्हीं तुम्हैं मिलाय।
राखो चम्पक मालसी लालगरे लपटाय॥

टी०। चंपक माल उपमान। सी वाचक। गरे लपटाना धर्म। उपमेय नहीं है याते उपमेय लुप्ता है॥

(दो०) करके मीड़े कुसुमलौं गई विरह कुँभिलाय।
सदा समीपी सखिनहूँ नीड़ि पिछानी जाय॥

टी०। कुसुम उपमान। लौं वाचक। कुम्हिलाना धर्म। उपमेय नहीं याते उपमेय लुप्ताहै॥

अथ उपमानलुप्ता॥

(दो०) मैं लखिआई तरुणियक ब्रजनायक नँदनन्द।

केहरि कैसी खीनकटि गज कैसी गतिमन्द॥

टी०। केहरिकटि उपमान। गजकी गति उपमान सो नहीं याते उपमान लुप्ता है॥

(दो०) करे चाहसों चुटुकि कै खरे उठो है मैन।
लाज नवाये तरफ़रत करत खूँदसी नैन॥

टी०। नैन उपमेय। सी वाचक। खूँदना धर्म उपमान घोड़े को नाम नहीं याते उपमान लुप्ता है॥

(दो०) लाल ललित ललनालखी मैं सुखशोभा ऐन।
मृगकैसे दृगहैं बड़े पिक कैसे मृदु बैन॥

टी०। मृगदृग उपमान। पिक बैन उपमान। सो नहीं याते उपमान लुप्ता है॥

अथ उपमेय धर्मलुप्ता॥

(स०) फैलौ सुगन्ध रहै चहुँघा अलिपुञ्ज घिरी मणिमाल जुहीसी। फूलभरी अँगपूरी पराग परै रसरूप किधारु फुहीसी॥ गोकुल ऐसी करीहै तयार मैं कै चतुरानन चारु छुहीसी। देखिहै तौ चलिबाग में लालन कैसी लसै वह सोनजुही सी॥

टी०। सोनजुही उपमान। सी वाचक। इहां उपमेय और धर्म्म नहीं है याते धर्म उपमेय लुप्ताहै॥ और मिसुकरि कारज साधनो सखी की उक्ति है॥

अथ वाचक धर्मलुप्ता॥

(दो०) नैनकोकनद तरुणितन कुन्दन रँग अवरेखि।
मुख मयङ्क विद्रुमअधर लाल रहीहौं देखि॥

टी०। इहां वाचक धर्म नहीं है याते वाचक धर्म लुप्ता है॥

(दो०) पल्लव पानि सरोजमुख खंजन नैन सुजान।

बसत छीरसागर सदा लक्ष्मीपति भगवान ॥
रसकेसे बस शशिमुखी हँसि हँसि बोलतिबैन।
गूढ़मान मनको रहै भये बूढ़ रँग नैन ॥
झमंकि चढ़ंति उतरति अटा नेक नपावति देह।
भई रहति नटकोबटा अटकी नागरिनेह ॥

टी०। नागरि उपमेय। बटा उपमान। वाचक धर्म नहीं है। पर कीया नायिका है ॥

अथ वाचक उपमानलुप्ता ॥

(दो०) गति गयन्द अभिरामपग धरतिजाति नँदनंद।
परमप्यार राखौ इन्हैं जेहि लखि होत अनन्द ॥
ये नीके दृग कुँवरिके शोभारूप निधान।
चरचाहीं ब्रजमें पर्‌यो छविगुण निरखिमसान ॥
फिरि फिरि दौरत देखिये निचले नेक रहैन।
ये कजरारे कौनपै करत कजाकी नैन ॥

टी०। इहां वाचक उपमान नहीं है याते वाचक उपमान लुप्ता है ॥

अथ वाचक उपमेयलुप्ता ॥

(दो०) श्याम सरोरुह भावते फूले परत लखाय।
केहरि छरकायल फिरै वन विहारको पाय ॥
एन सुधाहू ते मधुर करत मैन चितचैन।
प्यारी के मुख ते कढ़त पिय कोकिल के बैन ॥
छैल छबीली तियन में जो यह लाल लखाति।
कोककोकनद परमरुचि शुचिशोभा अधिकाति ॥

टी०। इहां कोक कोक नद उपमान। शोभा अधिकाना धर्म। वाचक उपमेय नहीं है याते वाचक उपमेय लुप्ता है ॥

अथ वाचकधर्म उपमानलुप्ता॥

(दो०) प्यारी न्यारी होत नहिं छिनक एक कहुँ अन्त।
मिलिसप्रेम लीजैलला रुचिसों बोलियकन्त॥
कहौलाल कीजै कहा मैं करिथकी उपाय।
नवलवधू कैसे मिलै दीजै तुम्हैं मिलाय॥
पियप्यारी या और तिय रची न विधि रचिहैंन।
अनुपम प्यारी नैन ये अनुपम प्यारी बैन॥

टी०। इहां पदावृत्ति भी है। याही तरह सों सीधे उलटे करि सोरह लुप्ता करी है। उपमेय उपमान उपमेय वाचक उपमेय धर्म इसी तरह एक एक सों मिलाये सोरह होते हैं॥

(प्रश्न) जहां उपमेय वाचक और धर्मका लोप है तहां रूपकातिशयोक्ति है–

(उत्तर) तिलुप्तामें उपमेय वाचक धर्मका नेम है रूपकातिशयोक्ति में नहीं है दूसरे रूपकातिशयोक्ति में बहुपद कहेहैं इसमें बहु पदका नेम नहीं अरु रूपकातिशयोक्ति में रूपक की रीति होतीहै–

(प्रश्न) सम अभेदके भेदमें मिलैहै–

(उत्तर) समरूपक में तो उपमान उपमेयका नाम प्रगट कहेहैं–इसमें केवल उपमानहीका नामहै यांते रूपकातिशयोक्ति भिन्नहै–इति

अथ उपमानभेदनामानि॥

(दो०) संशय हेत अभूत अति अद्भुत विक्रिय जानि।
दूषण भूषण मोहमय नियम गुणाधिक आनि॥
अतिशय उत्प्रेक्षित कहौं श्लेष धर्मविपरीत।
निर्णय लक्षणकोपमा असंभाविता मीत॥

दूखन रहित जग भूखनसी भावै क्यों। बेली ते चमेली ते विशेषि वरबेली अति सौरभ सकेली अलबेली छटाछावै क्यों॥ भार्गव वंसहंस श्री प्रयागनारायणजी आपकी सुकीरति दिगन्तन लौं धावै क्यों। पण्डित कविन्दन मलिन्दनको बन्दीकवि हेरि हेरि घेरि घेरि टेरि टेरि लावै क्यों॥

अथ रसनोपमा लक्षण॥

(दो०) रसनोपम जहँ वर्णहीं होत जात उपमान।
कुलसी मति मतिसौं जुमन मनहीसोंगुरुज्ञान॥

(प्रश्न) इहां एकावलीसी है-

(उत्तर) एकावली में ग्रहीत मुक्तपद हैं उपमान उपमेय को भाव नहीं है याते उपमेय उपमान होत जात है। भिन्न धर्मकरि एक और अभिन्नधर्म करि द्वै प्रकार जानिये॥

प्रं०-(दो०)मतिसीमूरति मधुरअरु मूरति सरिससमाज।
तेजनि सहित समाजसी सीय जपै गुनराज॥
बानीसी हिय हीयसी मतिमतिसो पुनिकाज।
विमलसुयश यशकाजसों सोसबकोशिरताज॥

अथ अन्योन्या लक्षण॥

(दो०) उपमेयी उपमान जहँ तहाँ अनुन्यय जान।
राधे व्रज तोसी तुही सब व्रजकरत बखान॥

उ०-(स०) एकते एक अनेकन गोपिका हैं नख ते शिखलौं गुणखानी। मोहिरहे हरिदेखि जिन्हें सुखमा विधु पूरणता पहिंचानी॥ शीलसनेह सुरूप सुभाग है मदनेश न जात बखानी। या व्रजमण्डल में सिगरे अब राधे तुहीसी तुही ठकुरानी॥

पुनः–(क०) दिल्लीसो न तखत बखत मुगलन कै सो नगर न नीको कोऊ आगरा नगरसे। गङ्गसे न गुनी तानसेन से न तानसेन फैजी से प्रवीन औ वीर बीरबर से ॥ खानखाना खानसे न रूप राजा मानसे न टोडल से टोडल न कवि नरहर से। तीनि लोक सातदीप सातऊ रसातल में शाहन जलालदीन शाह अकबर से ॥

पुनः–(स०) औध समान न देशहै आन बखानत वेद पुरान सुभायन। श्रीसौमित्रपुरी सी पुरी नहिं धर्मधुरीण करैं कवि गायन ॥ नौलकिशोर को मुद्रणयंत्र अनूप विलोकतही सुखदायन। बाबू प्रयागनरायन सो गुण गाहक एक प्रयागनरायन ॥

पुनः–(दो०) दिपति दिगन्तनमें चहूँ सब भूपनशिरताज।
मेरोई महराजसो मेरोई महराज ॥

(प्रश्न) जहां लुप्ता वाचक आदि होय तहां अन्योन्या क्यों न होय।

(उत्तर) लुप्ता में दोऊ बरावर बरणैहैं अन्योन्या में उपमेयी उपमान ह्वैजाय है।

(प्रश्न) जहां वाचक धर्मादि तीनों को लोपहै केवल उपमेयी रहिजाय तहां अन्योन्या की रीति ह्वैजाती है॥

(उ०) जहां तोसी तुहीं तहां अन्योन्या है जहां या रीति नहीं तहां लुप्ता है।

(प्र०) प्रतीप में उपमेय उपमान करै है।

(उ०) प्रतीप में तद्रूप की रीति है दो वस्तु जुदीबरणै हैं या में अभेदकी रीति है॥ इति अन्योन्या ॥

अथ उपमाउपमेयलक्षण ॥

(दो०) जहां परस्पर वरणिये उपमेयो उपमान।

उपमा भेद अनेकहैं मैं बरण्यों इक बीश।
बुध बिरोध मालोपमा और परस्पर ईश॥

अथ मालोपमा लक्षण॥

(दो०) जहां एक उपमेय के कहत बहुत उपमान।
उपमाही के भेदमें मालोपमा बखान॥
जो अर्थैते होतहै अर्थी उपमा मानि।
जहँ सदृशकरि बरणते श्रोती सो पहिंचानि॥

उदाहरण॥

(क०) चोपकरि बिरची बिरंचि रूपराशि कैसी कोककी कलासी चारु चातुरी कि शालासी। चन्द्रमासी चांदनीसी चामीकर चपलासी सुधासी सखीजनको सौतिनको हालासी॥ कहा मंजुघोषा उरबसी न सुकेशी दत्त जाके रूप आगे वारियत मैनबालासी। चंपक की माला हिये लागत बरसकाला शिशिर दुशाला होत ग्रीषम में पालासी॥

टी०। इहां प्रतीपादि अलंकारों की संसृष्टिता भी है। सखी वाक्य उत्तमा है रुचि उपजाय लैजायो चहै है। याते प्रौढ़ा अभिसारिका है। माधुर्य प्रसाद गुण है॥

पुनः–(क०) जानकी के जीवन जगत के जनक राम कीरति तिहारी हौं निहारी गंगधारसी। श्रीपति सुकवि कहै शरदसी शारदसी पारदसी नारदसी पय पारावारसी॥ कैरवसी कुंदसी कपूरसी कलानिधिसी कुन्द कलिकासी कामधेनुके अगारसी। हंसिनिसी हीरासी ह-

१–लक्षणा सों अर्थ करना पड़े सो अर्थी–
२–सादृश्य से अर्थ करना पड़े सो श्रोती–

लीसी हरगिरिसी हरासनसी हरसी हरासी हर हारसी ॥

टी०। एक यश उपमेय के बहुतसे उपमान याते मालोपमा॥

पुनः–(क०) दौरिआईं दासी कलाधर की कलासी कमलासी विमलासी अमलासी विमला शरीर। कंचन कटोरनमें चोवा भरि भरि एकै एकनने अतर गुलाब देवनदनीर॥ऊजरे जराऊ जरे डब्बाभरि भरि ल्याईं मोती मणिमाल हीरा हार लैलै राखे तीर। एकै चितचाह ते चहूं ते चुनि चुनि ल्याईं चाँदनी से चन्दन से चन्द से रुचिरचीर॥

टी०। एक चीर उपमेय के बहुत उपमान याने मालोपमा और भी अलंकार हैंसकैंहैं। वासकशय्या नायिका है॥

पुनः–(क०) फटिक सोफेन सो फणीशसो फिरत फैलो सुयश तिहारो राम फव्यो कुन्द फूलसो। तारसों तुषारसों तपोवनसों तीरथसों तारासों तमीपति सों तूलिकासों तूलसो॥ श्रीपति महामुनीश मनमों मराल सों मराल जल मानस सो मोदतर मूलसो। गौरीसों गिरीशसों गजानन गजाधिपसों गङ्गसों गिरासों गन्धसार सों गँधूलसो॥

पुनः–(क०) शारद शिंगारसी है पय पारावारसी है चन्द्रिका पसारसी है प्यारी मैनअरिकी। हेमकर हारसी है तुहिन पहारसी है अमर अहारसीहै तारे तुल्य तरिकी॥ फूलीकुन्द डारसीहै पुण्डरीक हारसीहै विशद मरालसीहै पदभूषा हरिकी। वेदनको सारसी है ब्रह्मको विचारसी है सत्य अवतारसी है धार सुरसरिकी॥

पुनः–(क०) चन्दकी मयूखन ते पूखन ते प्रभाभरी

तहँ प्रतीप तिसरो कहैं जे कवि सुकबि सुजान ॥
उदा०-ईक्षन तीक्षन बालके लाल बिशाल बिचारि ।
दृग मृग फीकेसे लगैं मीन दीन बरबारि ॥
शरदचंदकी चांदनी जारि डारु किन मोहिं ।
वा मुखकी मुसक्यानि सरिक्योंहूं कहौं न तोहिं॥
पुनः-(स०) है इनमें उनकी अनुहारयो न हारयो न मानि हिये सकुचात हैं । कीचके बीच गड़े सरमें बड़े बेसरमें जो फुलावत गातहैं ॥ भेंट नहीं कहूं या छबिसों रबिसों करजोरे खरे हहा खातहैं । राधेजी धोवत रावरे पायँहों कौलधौं काहेको ऐंठे से जातहैं ॥
टी० । इहां नायन की कहनूति राधिकाके पायँन की बड़ाई है॥
(दो०) हाहा बदन उघारि दृग सफल करैं सब कोय ।
रोज सरोजनके परे हँसी शशी की होय ॥
टी० । मानिनी नायिकाहै । सखी की उक्ति प्रशंसाकरि मान छुटायो चहै है ॥
(दो०) केसरि क्यों सरि करिसकै चंपक केतिक अनूप ।
गात रूप लखि जात दुरि जातरूप को रूप ॥
टी० । इहां भी उपमेय ते उपमान को अनादर है याते तिसरो प्रतीप है । सखी की उक्ति रुचि उपजावै है ॥
(दो०) पाहन जनि जिय गरब धरु हौंही कठिन अपार ।
चित दुर्ज्जन के देखिये तोसे लाख हजार ॥
पुनः (क०) करिकरि हारी विनै कछु न बिचारी बाल रसबसवारी चितदुसह बिसारिदे । अतिगुण गाहक गुनाहक ह्वै नाहरह्यो करु न मिजाज प्रेमघटत सुधारिदे ॥ लालजी कहत ह्वैहै फिरि पछिताने कहा

हो न निरदई दई सिख अनुसारि दे। शशिछबिटारि दे सरोजमदगारि अरी वदनउघारि नेक नजरि निहारि दे॥

टी०। सखी की उक्ति मानिनी नायिका। तृतीय प्रतीप है चतुर्थ भी ह्वैसकै है॥

अथ चतुर्थ प्रतीपलक्षण॥

(दो०) वर्णनीय आवर्णि जब समता केहु न पाय।
चौथो तहां प्रतीपको सुकविन मत ठहराय॥
उदा०-अनुपम ये अँखियां रुचिर बरबिलास जिनमाहिं।
कंजखंज मृगमीनसी कही कौन विधिजाहिं॥

सखी की उक्ति। मुग्धानायिका है॥

पुनः-(दो०)कुसुमकंचुकी द्युतिरुचिर कुचबाहरदरशाय।
किमिसरोज कलिकानकी उपमादीन्हीजाय॥

(क०)ऊबीसीरहति अरविन्दनकी आभामहबूबी मृग छौननकी छाम करियतुहै। डूबीवनवीथिनचकोर चतुराई मन सूबीतुरगनकी तमाम करियतुहै॥ जूबी जलजोरमदमीन बरजोरी देव भौरमगरूरी बदनाम करियतुहै। देखिदेखि तेरी अँखियांनकी अजूबी प्यारी खूबी खंजरीटनकी खामकरियतुहै॥

पुनः-(स०) आनन इन्दुउजासों लगै दृग काननलों झलकै चलतामें। और किशोर कहाँलौं कहौं न लहै सुर कोकिलहू कलनामें॥ जैसी कछू छविराधिका अंग न ऐसी अनंगहूकी बनितामें। सुन्दरता में न सिन्धुसुता में न हेमलता में न है तड़ितामें॥

टी०। इहां तीनों प्रतीप ह्वै सकैहैं इहां उपमेयते उपमान

तहँ उपमा उपमेय कहि सब कवि करत बखान ॥

उ०-(दो०) राधे तुवगुन हरिबँधे हरिराधे तुवनेह।
बिंब अधरसे देखिये अधर बिंबवत सेह ॥
तियमुख पूरन चन्दसो मुखसो पूरनचन्द।
यशसों जगत प्रतापहै है प्रताप यशनन्द ॥
करन राजसे मानियत राजकरनसों लेखि।
उपमानौ उपमेय के उदाहरण ये पेखि ॥
सुधावैन से सन्तके वैन सुधासे मान।
वचनव्यालकेविसहसमबिषखलवचनप्रमान ॥

अथ पंचविधिप्रतीपलक्षण ॥

(दी०) जहँ उपमान प्रसिद्धको उपमेयहि करिदेत।
तहँ पहिलेहि प्रतीपको सुकविन कियो सचेत ॥

उ०-(दो०)रसिक शिरोमणि सांवरे मैं लखिआई हाल।
कटिकेसमकेहरिबन्यो दृग मृगबने विशाल॥

टी०। इहां सखी उत्तमाहै रुचि उपजावै है मुग्धा नायिका है ॥

पुनः-(दो०) दन्तकुन्द कलिकाबने हँसनिचांदनीचारु।
कमलपाणिसे हैं बने वैन सुधासम सारु ॥

पुनर्यथा-(क०) धीरता समान मेरु वीरता समान भीमविशद गँभीरता समान सिन्धुगनुहै। ज्ञानके समान गुरुमानके समान गिरि यशके समान चन्द शारदीयतनु है ॥ हिंदुवान भान तेरी कीरतिसों सुधाधारा बोल ऐसे करन युधिष्ठिरको पनुहै। रूपसों मनोज तेरे ओजसों सरोजबन्धु मौजसों विराजमान भोजराज मनुहै ॥

टी०। इहां राजरति भाव ध्वनि है। कविकी उक्ति सों राजा की बड़ाई है ॥

अथ द्वितीय प्रतीप लक्षण ॥

(दो०) उपमेको उपमानते आदर जहां न होत।
तहँ दूसरे प्रतीप को सु कविन कियो उदोत ॥
उदा०—अनियारी अँखियानकी व्रज बनिता बहु जानु।
चितौचन्द चोखो उयो नाहक करति गुमानु ॥

टी०। इहां मानिनी नायिका है सखी मान छुटायो चहै है चन्द्रमा की ओर देखे कामोद्दीपन भये मान छूटिजैहै ॥

(दो०) नाहक तू तिय करति है रूप गुमान समान।
तोसी रंभा उरबसी नख शिख भरी गुमान ॥

टी०। इहां भी मानिनी है सखी निन्दाकरि मान छुटायो चहै है ॥

पुनः—(क०) पूरण प्रकाशह्वै अकाश द्युति दूनी करै धरै भव जाहिर जुन्हाई सब सुखको। भावतीन भावत न भावत वियोगिनीनै छावत अनंग रंग रंग रुचि रुखको ॥ मानिनीन मानके छुटावन के हेत उगो मदनेश मानि उपदेश छोंड़ि दुखको। देखु तौ निहारि नीके नैनन सों नेक उत नाहक तू करति गुमान शशि मुखको॥
बार सुकुमार औ लिलार भौंह नैन नासा दंतन की दमक न कीजै एतो तेहरी। अधर सुघर कंठ कठिन उरोज नाभि लंकको न कीजै मद मेटि नैन नेहरी ॥ प्यारी ऐसे अंगन गुमान करै काहे ऐसो औरहू अनेक छवि धरत अछेहरी। केकी कला नायक के मान कंज कीर कुन्द कुसुम कि दूरी कम्बु कोक कूप केहरी ॥

अथ तृतीय प्रतीप लक्षण ॥

(दो०) अनआदर उपमेयते जहँ बरणत उपमान।

समतालायक नहीं है याते चौथो प्रतीप है ॥ गोपिनकी कहनूति कृष्ण सों देवरति भावध्वनि है ॥

(क०) हरिन निहारि जकिरहैं हिये हारिमानि वारिचर वारिजकी बानिक बिकाती हैं। हाँती बिनजाती छिन छिन मुरझाती खरी धीर मनिरंजन ये खंजन अम्राती हैं ॥ कीबेको दृगनकी समान उपमान आन कविन के मन उपमा जे उफनाती हैं। प्यारी के अनोखे अनियारेई छननछ्वै छ्वै तीछन कटाछनसों कटिकटिजातीहैं॥

उपमेयते उपमान समतालायक नहीं याते चतुर्थ प्रतीप है ॥

(क०) आनँदको कन्द मुख तेरो तासमान चन्द कैसे बलिकीजिये कलेश नामधारी है। आठहू पहर कर तेरे तापहर कंज तपन को बन्धु कैसे होत अनुकारी है ॥ तेरी सुखदाई देह ताके तौनसमहोत केशर सरसकहियतु कंटधारी है। सैनापति प्रभू प्यारी तूतो है अनूपनारी तेरी उपमाकी भाँति जात वा विचारीहै ॥

अथ पंचमप्रतीपलक्षण ॥

(दो०) वृथाहोय उपमान जहँ उपमेयहि को पाय।
तहँ पाँचवों प्रतीपकह सुकविनके समुदाय ॥
उदा०-देखे दृगनहिं कंजकछु मुखशशि कछुनाबिसाँति।
कुचन कोक नहिंसमकछू अधरन विद्रुमकाँति ॥
तेज प्रतापरु कीर्तिगुन दौलतदुनीदराज।
मेरोई महराज सो मेरोई महराज ॥
जहँ राधे आनन उदित निशिवासर सानन्द।
तहाँ कहा अरविन्द है कहा बापुरो चन्द ॥
(क०) कारी कारी कोयल कुरंगवारे कारे कारे

कुढ़ि कुढ़ि केहरी कलंक लंकहदली । जरिजरि जम्बूनद बदरंग विद्रुम भे दाड़िम दरकि गे त्वचा भुवंगबदली ॥ एरी चन्द्रमुखी तैं कलंकित कियो है चंद चलुरी बुलायो ब्रजचन्द आजु अदली । मुण्डझारडारै गजराज यों पुकारै अरे पुण्डरीक बूड़योरी कपूर खायो कदली ॥

टी० । सखी की उक्ति अभिसारिका नायिका । उपमेयते उपमान की व्यर्थता याते पाँचयों प्रतीप है । जुरिजुरि पद ते विवशा है ॥

(क०) ऐसे बान मैनके न देखे ऐन सैनके पगैया रैन सैनके जितैया सौतिसीनके । कमल कुलीननके मुकुली करनहारे कानन ते कोयन लौं कोये नारँगीनके ॥ भनत कविन्द भावती के नैन चायकसे पेखे प्रेम पायकसे नायक नवीनके । सींचेसे अमीन के अमीन मनो मीनके बखानै को खगीनके मृगीन पन्नगीनके ॥

टी० । खगीन मृगीन पन्नगीनकी व्यर्थताते पाँचवों प्रतीपहै ॥

(क०) कोमल कमलमुखी तेरे ये युगलजानु मेरे बलवीरजूके मनको हरतहैं । सौरभसुभाय अरु रम्भाते सदम्भ शुभ केशव करभहूकी आभानिदरतहैं ॥ कोरि रतिराज शिरताज ब्रजराजकी सों देखि देखि गजराज लाजनिमरतहैं । मोचि मोचि मद रुचि सकल सकोचि शोचि सुधि आये शुण्डनकी कुण्डली करतहैं ॥

(दो०) कहा कुसुम कह कौमुदी कहा आरसी ज्योति ।
जाकी उजराई लखे आंखि ऊजरी होति ॥

टी० । इहां सखी उत्तमा अंतरंगिनी है । हे नायक उसके देखने से आँखि ऊजरी है जाती है औरेके देखनेकी फिरि इच्छा नहीं रहती है ॥ उपमेयते उपमान व्यर्थ याते पंचम प्रतीप है ॥

पुनः(क०)सुन्दर सुरंग भरे अमित उठान सान करि अधिकानलेत बहस विमानमें। मन समतान में न मारुत महान में न मीन तड़ितान में न पलट प्रमानमें॥ लालजी कहत महाराज श्रीसजनसिंह जैसे जोड़ तोड़ हैं तिहारे तुरगान में। नटके बटान में न पग गनिकान में न बान कुरँगानमें न दृग कुलटानमें॥

पुनः(क०) करन करन में न रही अस करामाति शिबिको सुयश तस सुन्यो है तनक में। भूप हरिचंद की कहानी कहा आनी समदानी भोजराज कहा समता जनक में॥ श्रीप्रयागनारायणको दान जो बखान करे मेरे अनुमान कहा गति है गनक में। लागत न वेर ढेर सम्पति सुमेरदै दै दीननको दारिद दबावत जनक में॥

टी०। इहां उपमान व्यर्थ याते पंचम प्रतीप है॥

अथ रूपकअलंकारलक्षण॥

(दो०) उपमानहुँ उपमेयकी जहँ समता दरशाय।
तासों रूपक कहतहैं सुकविन के समुदाय॥
उपमानहुँ उपमेय जहँ करि अभेद तद्रूप।
वर्णन है वस्तून सँग सो रूपक है रूप॥

उपमेय उपमान करि समता जहां करें तहां रूपक कहैहैं॥

(दो०) है तद्रूप अभेद पुनि तीनि तीनि तिनभेद।
अधिकन्यूनसम दुहुनमें वरणतत्रविधि अखेद॥
जहँ है वस्तु बराबरी तहँ तद्रूप बखानि
जहां भेद नहिं राखिये तहँ अभेदहि मानि॥

अथ अधिकतद्रूप यथा॥

(दो०) नैनबान ये बान ते अधिक करत हैं घाव।

ये बिन लागे लगत हैं वै लागे अधिकाव ॥
अधरसुधा वा सुधा ते अधिक मानियत वीर ।
यह अछेह पीवत रसिक वह कहुँ मिलत न तीर ॥
वह निशिही जगमगत है निशिदिन देत अनन्द ।
चन्दहु ते सोहत सरस चन्दमुखी मुखचन्द ॥

(क०) वह जो प्रकाशमान लागत विभावरी में यह आठों यामहू विमल ज्योति धारिये। वाके अंक राजत कलंक रंक राव सदा याके हियमाहिं बसै मोहन मुरारिये ॥ वाको वपुक्षीन दिनप्रति अवलोकियत याके अङ्ग पूरण प्रभासो प्रेम प्यारिये। कहै कविराम छविधाम प्राणप्यारी एजू राधे मुखचन्द पै शरदचन्द वारिये ॥

वैतो काल पाय वारि बरषैं मही के बीच बरषै हमेश एतो हेमके निकरहैं । वेतो एक बिज्जुका बिसाँति करामातिधारे एतो अस्त्र धारे भाँति भाँति करपरहैं। भनत गणेश वे इदंमद की ज्योति धारे एनो नवरत्नधारे ज्योति के अगर हैं। दीहदुखहरन कवीन के भरन काज औघड़ खवास ये नवीन वारिधर हैं ॥

टी० । इहां उपमेयते उपमान अधिक द्वै वस्तु भिन्न वर्णेहैं याते अधिक तद्रूप है ॥

पुनः-(दो०) उयो भान असमानमें करवर करन प्रचण्ड।
दिनकर ऊग्यो औरई भूपप्रताप उदण्ड ॥

पुनः-(क०) बिकसत कंजन की रुचिको हरत हठि करत उदोत छिन छिनहीं नवीनो है। लोचन चकोरन को सुख उपजावै अति धरत पियूष लखै मेटि दुख दीनो है ॥ छविदरसावै सरसावै मीनकेतनको तो पै बुधिहीन

विधि काहे विधु कीनोहै। एहो नँदनन्द प्यारी तेरो मुख चन्द यह चन्द ते अधिक पंक अंकके विहीनो है॥

टी०। यहां चन्द्रमा ते अधिक मुख है याते अधिक तद्रूपहै॥

अथ न्यूनतद्रूप॥

उदा०-(दो०)कहतअपसराइन्द्रकेयहतनसुघरस्वरूप।
इन्द्रानी सुरपुर इहां राधे अंग अनूप॥

टी०। वै सुरपुरमें राधे इत्यादि यहां यह न्यूनता है देवरति भाव ध्वनि हैं वस्तु जुदीहै याते तद्रूप है॥

पुनः-(दो०)उयोनिशाकरव्योममेंचहुँदिशिकरनउजास।
राधे ये मुखचन्द्र को फैलो परम प्रकास॥

टी०। इहां राधे मुखचन्द पृथ्वी में है यह न्यूनता है याते न्यून तद्रूप है॥

विप्रन के मन्दिरन तजि करत आँच सब ठौर।
भावसिंह भूपाल को तेज तरणि यह और॥

इसमें न्यूनाधिक दोनों तद्रूप है सकैहैं॥

पुनः-(स०) लसै द्विज औरहि मोतियमाल पयोनिधि में उपजे नहिं जोहै। भये न सरोवर अंबुज औरै सुलोचन नाह मलिन्दको मोहै। सरोवरमें न रहै अरु लक्ष प्रतक्ष सुलक्षनि तो सम को है। सदा परिपूरण तो मुख राधे सुधाधर औरै धरापर सोहै॥

टी०। यहां चारों तुक में न्यून तद्रूपहै॥

अथ समतद्रूप॥

उदा०-(दो०) शशिमुखशोभावैसई दईविधाताहाल।
चन्दमुखीछवि वैसई नईभईसमहाल॥

पुनः-(क०) कहा इतरात जात आवो एहो कहो वात सुने मनिकंठ सुखगात न समाइगो। थोरीबैस भोरे भय चोरे चित लेत लंक कुंडल झलक हेरे हियरा हिराइगो ॥ तुम कान्ह साँवरे सिधारि कुंज देखो नेक मेरो गोरो कान्ह लखि मन ललचाइगो। ग्रीवाकी लटक अरु भौंह की मटक चारु चीर की चटक में अटकि मनु जाइगो ॥

टी०। इहां सखी की उक्ति समतद्रूपहै--अभिसारिका नायिकाहै। छेकानुप्रास भी ह्वैसकै है ॥

पुनः-(स०) छहरै शिर में छवि मोरपखा उनकी नथके मुकता थहरैं। फहरै पियरोपट बेनी इतै इनकी चुनरी के झबा झहरैं ॥ रसरंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रसप्याल पिये लहरैं। नित ऐसे सनेह सों राधिका श्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं ॥

टी०। इहां दुइ तुक में अन्योन्या भी दीसै है। वस्तु निर्देशात्मक है ॥

अथ अभेदलक्षण ॥

(दो०) उपमेयो उपमान मिलि भेद न तहाँ अभेद।
अधिक न्यूनसम तीन ये जानिय सुकवि अखेद ॥

उदा०-दो० विकसत ऋतु हित ड़ाग में दृग कंजन सब काल।
पति बिन रति वह नायिका सब विधि बनी विशाल ॥

टी०। कमल समय पाय फूलैहै दृग सब दिन फूलेई रहतहैं याते अधिक अभेद है ॥

मनबांछित फलदेन को सुरपुर सदा निवास।
सुरतरु मेरो राज यह परम पदारथ पास ॥

टी०। वह सुरतरु सुरपुर में है जब उसके पास जाय तब मन वांछित देता है यह मेरा महराज सब घरी वांछित देत है याते अधिक अभेद है॥

(क०) रनवन में तुव भुज लतिका पै चढ़ी कढ़ी म्यान बाँबी ते त्रिषम विष भरी है। जा रिपुको डसै सो तजत प्रान वाही छन गाडुरी अनेक हारे झारेतें न झरी है॥ भनत कवीन्द्रराव बुद्ध अनिरुद्धतनै तेरे युद्धपरे एक तैंहीं वशकरी है। तरल तिहारी तरवारि पन्नगी को कहूं तन्त्रहै न मन्त्रहै न यन्त्रहै न जरी है॥

पुनः-(क०) कागज तड़ागतट फिरै करकंज चढ़ी कढ़ी बक्ससरते मनोज मनपेखनी। मोतीसे वरन चुनि चुनि उगिलत जात बोरि मसिमानस में चंचुमुख शे-खनी॥ वन्दीकवि कहै श्रीप्रयागनारायणजी तेरी यह मंजुल मरालिनीसी लेखनी। दीन द्विज दारिद कुरेखनि सुरेखनी सी लेखनी समान आन देखी है न देखनी॥

अथ न्यूनअभेद॥

उदा०-(दो०)समैपाय विचरतचुनत सुखशोभाकेऐन।
बनसोंनहिंआवतबनै खंजनये पियनैन॥

टी०। बनते नहीं आवत बनै यह न्यून तद्रूप है॥

चमकझमक उछलतरहत सहत न नेक वियोग।
अँखियाँ मीन नवीनहैं नहिं जलसों कछुयोग॥

टी०। इहां जल संयोग नहीं यही न्यूनता है॥

मोहन मन मधुकरबसो अधरारस मधु खोज।
प्रकट सरोवर सोन है राधा बदन सरोज॥

टी०। यहां सरोवर सों नहीं यहन्यूनता है॥

सुरपुर मघवाके सुखद रहत सदा लवलीन।
कामधेनुकर राजको नहिं काहू आधीन॥

टी०। इहां अधीन न होनो न्यूनता याते न्यूनाभेद है॥

अथ समअभेद॥

उदा०दो०समपरागकोमलअमललितकलितरसरोज
शुचिशोभाके ऐन ये राधे पायँ सरोज॥

पुनः-(क०) डारि द्रुमपातन बिछौना नवपल्लवके सुमन भँगूला सोहै तन छविभारी दै। पवन झुलावै केकी कीर बतलावै देव कोकिल हँसावै हुलसावै करतारी दै॥ परतपराग सों उतारो करै राईनोन कंजकली नायिका लतान शिर सारी दै। मदन महीपजी को बालक बसन्त ताहि प्रातहि खेलावत गुलाब चटकारी दै॥

प्रमुदित पालकी रसालकी पै आनि बैठो मौरही को टीको शिर मौर छवि छायो है। राते पीरे पत्र अजवेश ये विचित्र बागे विटप बराती वेष नूतन बनायो है॥ दुन्दुभी पवन परिभ्रतगन करनाई सुरनाई शोर भौंर भीरनमचायो है। मानिनी सुमारकर कामको कुमार यह सुकुमार बनरा बसन्त बनि आयो है॥

टी०। उत्तमा सखी है बसन्त की भय देखायमान छुटावै है॥

पुनः-(क०) करुणानिधान खरोपौनजात आगे कपि ऋक्षन सुखद जासो नमत सुरेश है। हंस वंस मण्डन अखण्ड बहु शाखनसों शोभियत नीरभरो नीलोवपुवेश है॥ कहत दिनेश धनि सीतातप संगद्विज रावन अहित जासों भूषित सुदेश है। सानुज गरुवनाम अचल धराको वरे आली यह शैलबनो राघव नरेशहै॥

टी०। सम अभेद रूपकहै श्लेष भी है सकै है॥

(दो०) रणितभृङ्ग घण्टावली झरतदान मदनीर।
मन्द मन्द आवत चलो कुञ्जर कुञ्ज समीर॥

टी०। इहां सम अभेद है गज समीर को रूपक है॥

(क०) प्रेमसखी रामरूप देखिबेको दौरतीहो बूझौ तो बोलाय काहू युवती सयानी सों। मिथिलाशहर में कहर परिगई भई घायल घनेरी कहौं झूठ न जबानीसों॥ बेधीपरी नारी प्यारी गैलन अटारिन में तीषेनैन बानतानि भृकुटी कमानीसों। बैठि घरमाहँ हाँसी फाँसी गरे डारि डारि करी कतलान केती जुलुफ कृपानीसों॥

टी०। इहां वचन वैशिष्टता है सम रूपकहै॥

(क०) सघनतमाल कुञ्ज कुञ्जर अलिन पुंज गुंजरत मंजुघंटा अवलि अवाजके। सुभट रसाल के प्रबाल जे विशाल नेजे तरलतुरङ्ग पौन गौन कृतकाजके॥ पैदर पलास पैन्हें अरुण सुमनबास बोलैंपिक घोर शोर दुन्दुभी दराजके। फौजनके फेरापरे मानगढ़ घेरा परे डेरापरे बागन बसन्त ऋतुराज के॥

(क०) बरुनी बघम्बरमें गूदरी पलक दोऊ कोरेराने बसन भगौहैं बेशरखियाँ। बूड़ीजलहीमें दिन यामिनी हूँ जागैं भौंहैं धूम शिरछायो विरहानल बिलखियाँ॥ आँशू जो फटिकमाल लालडोरी सेल्हीपैन्हि भई हैं अकेली तजिचेली संगसखियाँ। दीजिये दरशदेव कीजिये सँयोगिनी सुयोगिनी ह्वै बैठी हैं वियोगिनी की आँखियां॥

(क०) घूंघुट जमानिकाहै कारे कारे केश निशि खोटिलाजराऊ जरो दीपक उज्यारीहै। बाजत मधुरम-

धुबानीसों मृदङ्ग धुनि नैन नटनगर लकुटलट धारी है ॥ आलम कहत ये सुरत विपरीत समै श्रमजल अंजुलि पुहुप भरिडारी है। अधर सुरंग भूमि नृपति अनंग आगे नृत्य करै बेसरि को मोती नृत्यकारी है ॥

टी०। मोती नृत्यकारी की अभेद सम अभेद। संयोग शृंगार। सखी सों सखी की उक्ति अथवा कवि की उक्ति लीला हाव ॥

पुनः-(स०) खेत कुटुम्बते लीन्ही उखारि निबेरि निबेरिकै स्वाद नवीनी। फेरि दुरे दुरे चीखी बनाय रुची न रुची सो जताय न दीनी॥ ठाकुर यों कहतीं ब्रजबाल सो ऊधो सुनौ या कथा रस भीनी। खाई कछू बगराई कछू हरिहाय गुलाम कि गाजरै कीनी ॥

टी०। इहां ब्रजबाल गाजर की समता सों अभेद सम रूपक है। प्रस्ताव वैशिष्टता। वियोग शृंगार। सुमिरण दशा है ॥

(क०) घन मतवारे गज पौन हरकारे बकबीर निरधारे मोर ढाढ़िनकी तानपर। बिज्जु बरछीन की चमक चहुँ ओरनते त्यों नकीब चातक पुकारत प्रमानपर ॥ देखि २ कांपत बियोगी जन कातर सुबेनीकवि कहै इन्द्रधनुष निशानपर। कोकिल की कुहुँक दोहाई फिरी ठौर ठौर पावस प्रबल दल आयो महीमानपर ॥

हाव भाव बिबिध देखावै भली भांतिनसों मिलत न रतिदान जागे संग यामिनी। सुवरण भूषण सवांरेते बिफल होत याते पहिंचान रसरीति प्रीति दामिनी ॥ रहै मन मारे लाज लागत उघारे बात देखि देखि हँसैं घर घर गजगामिनी। बेनीकवि कहै महा पापनते होहिं दौऊ सूमके सुकवि औ नपुंसक के कामिनी ॥

टी०। इहां सूमके कवि और नपुंसक की कामिनी को सम अभेद रूपकहै ॥

(सो०) मंगलबिन्दु सुरंग मुख शशि केशरि आड़ गुरु।
यक नारी लहि संग रसमय किय लोचन जगत ॥

टी०। जहां मंगल शशि बृहस्पति एक नाड़ी में एकत्र होहिं तब वर्षा बहुत होती है जल मय पृथ्वी होजाती है तैसे इहां नायिका को मुख शशि बेंदा मंगल केशरि आड़ बृहस्पति एकत्र भये रस मय जगत् नेत्रों को किया ॥

(दो०) तियतिथि तरुणकिशोरवय पुण्यकाल समद्रोण।
काहू पुण्यन पाइयत वैस सन्धि संक्रोण ॥

टी०। इहां सखीकी उक्ति हे नायक या तिथिरूप नायिका में तीनों बातें हैं एक तो युवाहै दूसरे किशोर अवस्था है और पुण्य कालहै अर्थात वैस संधि संक्रांतिकी बुड़की काहू बड़ी पुण्य सों मिलती है। मुग्धा नायिका है ॥

पिय बियोग तिय दृग जलधि जलतरंग अधिकाय।
बरुणि मूल बेला परसि बहुरयो जात बिलाय ॥

टी०। मुग्धाप्रोषितपतिका नायिका है दृगजलधि की एकतासों सम अभेद रूपक अलंकार है ॥

अथ परिणाम लक्षण ॥

(दो०) रूपक में कीन्हे क्रिया अलंकार परिणाम।
वर्णनीय उपमान की लागत ललित ललाम ॥
जहँ विषयी ह्वै विषय जो करै क्रिया परिणाम।
विषयी विषय क्रिया किये दुहूँ भांति अभिराम ॥

टी०। जहां उपमेय उपमान ह्वै क्रियाकरै औ उपमान उपमेय ह्वै क्रियाकरै तहां परिणाम अलंकार जानिये सो द्वै भांतिको है ॥

उदा०-(दो०)चषचकोरह्वैसामुहेंनिरखत तुम्हैं मुरारि।
बदनचन्दकीन्हेजहांलगैनडीठिनिहारि॥

टी०। इहां सखीकी उक्ति। वह तुम्हैं देखैहै तुमहूं देखो चष चकोर की क्रियासों परिणाम जानिये॥

उत उझकति नँदलाल सों इत खेलत कछु ख्याल।
दृग मीनन ह्वै लालको फांदति है मति जाल॥

टी०। इहां दृग मीनकी क्रियाते परिणाम है॥

लाल बिलोको बालकी कमल नैन कै हेरि।
मिलनहार मिलिलीजिये मिलै न औसर फेरि॥

(स०) बलिकंजसो कोमल अंग गोपाल को सोऊ सबै तुम जानतीहो। वह नेक रुखाई धरे कुम्हिलात इतो हठ कौनपै ठानतीहो॥ कहि ठाकुर यों करजोरि कहै इतने पै बिनै नहिं मानतीहो। दृगवान कै भौंह कमान सुतो अब कानलों कौनपै तानतीहो॥

टी०। इहां सखीकी उक्ति। नायिकाको मानमोचन करतीहै॥

(प्र०) परिणाममें बाचक लुप्ताको धर्म देखि परैहै।

(उ०) लुप्तामें क्रिया नहीं है। इस कवित्तमें भौंह कमान ह्वै क्रिया करने से परिणाम है॥

अथ उल्लेख॥

(दो०) जो अनेक बस्तून को बहु समुझै बहु भांति।
काम कामिनी नारिवर शुचि शोभा की कांति॥
जानति सवति अनीतिहै जानति सखी सुनीति।
गुरुजन जानत लाजहै प्रीतम जानत प्रीति॥

(क०) सोवैं लोग घरके बगरके केवांर खुले बीती निजु जानि युग याम जागी यामिनी। चुप चाप चोरा

चोरी चौंकत चकित चित्त चली हित पास चित चाह भरी भामिनी ॥ पैठत सँकेतके निकेत शम्भु शोभा देत ऐसी बन बीथिन बिराजिरही कामिनी। चामीकर चोर जाने चंपलता भौंर जाने चांदनी चकोर जाने मोर जाने दामिनी ॥

परकीयाभिसारिका नायिका है। एकको बहुतोंने बहुत समुझ्यो याते उल्लेख ॥

पुनः–(क०) नवल नवाब खानखाना जू तिहारे डर बैरी बिडराने धुनि सुनिकै निशान की। तिनहूं की रानी फिरैं थकी बिललानी सब छूटी राजधानी सुधि खानकी न पानकी ॥ कहूं मिलीं हाथिन हरिण बाघ वानरन तिनहीं ते रक्षा भई उनहींके प्रानकी। शची जानी गज न भवानी जानी केहरिन मृगन मयंक जानी जानी कपि जानकी ॥

टी०। अलंकार रत्नाकरवालेने लिखा है कि एक को अनेक समुझै तहां प्रथम उल्लेख। इहां बहुती रानी बहुतों को मिलीं बहुतोंने बहुत भाव समुझ्यो याते उल्लेख को दूसरो भेदहै ॥

(स०) बाबू प्रयागनरायनके करकी करामाति लखो यह कैसो। कंजसो जानत जाहि गुनी अलिबन्दि कवी कलपद्रुम तैसो ॥ चाकर चक्रसो आकर ओज सुभोज को भाजन साजन जैसो। नेहको नाल सो बाल बिलो कहिं बालक प्रेम पियाल सो वैसो ॥

टी०। इहां भी एक करको बहुतोंने बहुतेरा समुझो याते प्रथम उल्लेख है ॥

अथ द्वितीय उल्लेख लक्षण ॥

(दो०) एकैको बहुगुननसों बरणत सबै बनाय।

तहँ द्वितीय उल्लेखहै जानत कवि कुलराय ॥

उदा०-(क०) कविनकी कविता लताको काम तरु-वर सुकृतको सरवर सुभग सरोजसो। गुणिनको वसु व-सुधा को सरवसु जाहि भावत सुयश गुन चातुरीको चो-जसो ॥ कहै नीलकण्ठ कवि केहरी कल्यान शाह शरम को सागर फतूहनको फौजसो। पापिनको तीरथ भगी-रथ कुटुम्बिन को नारिन को मदन भिखारिन को भोजसो॥

राजै राजनीतिही कि रीति जीति वैरिनसों पापही सों भीति पूरी प्रीतिहै प्रजान में। तैसो मौलिमणि महराना श्री सजनसिंह पृथुसों प्रतापवन्त बलिसो जुबान में ॥ आजु अवनीमें अवनीप और कौन ऐसो सोहै मद-नेश सुरपति कैसी सानमें। सुरगुरु ज्ञानमें ज्यों सुरगिरि मानमें ज्यों सुर ऋषि ध्यान में ज्यों सुरतरु दान में ॥

पौधनको पृथुसो परीक्षित सो पापिनको भाँड़नको भोजसो हमेश दानकीबेको। कुटिनी को करन कलावतको कामतरु बलिके समान बहुरूपियाके दीबेको ॥ परम उदार कल कञ्चनी अनेक भाँति दारूको अधिक दान राति दिन पीबेको। खरच कि तङ्गी है देवानजी के दोय भाँति ईश्वर निमित्त औ कवीश्वर के दीबेको ॥

परमप्रतापी पुत्र नवलकिशोर जीको शोर जाके यश कोजगतमाहिं जगिरह्यो। पण्डित प्रवीननको कामतरु याम सब कामिनीन काम अभिराम जगमगि रह्यो ॥ दीनन को दामसो अधीननको राम सम वामनको वाम वामदेव ऐसो लगिरह्यो। वन्दी कवि सन्तन को श्याम सो अराम धाम पापिन प्रयागनारायण सो पगिरह्यो ॥

अथ सुमिरण लक्षण ॥

(दो०) जहाँ कौनहूं हेतकरि सुमिरण होत सुजान।
सो बहुविधि सों जानिये कविकुल कियो बखान ॥
स्थनादिक वस्तु बहु चितचिन्ता सुधिपाय।
सुखदुख और अनेकविधि सुमिरण जानोजाय ॥

उदा०-(दो०)लखिसरोजकोराधिकाफूलेललिततड़ाग।
पदकमलननँदनन्दकेकरतीमन अनुराग ॥
लखिनिशिमुखपूरबदिशाउयोसपूरनचन्द।
तुत्रसरोषमुखसुधिभयेभयोविकलनँदनन्द॥
तपतसूरवृषकेनिरखिसकुचिआपदबिजात।
अरि तेरे तबतेजसुधि करि २ बनहिंपरात॥
कलकरीलकी कुञ्जते उठत अतरकी बोय।
भयो तोहिं भावीकहा उठी अचानकरोय ॥

टी०। यह अनुसैना नायिका है। नायक सङ्केत में है आयो आप नहीं पहुंची यह अतर सुगन्ध नायक की है यह सुधि भई याते सुमिरण है ॥

सौति सँयोग न रोगकछु नहिं वियोग बलवन्त।
ननँद दूबरी होतकत लागत ललित बसन्त ॥

टी०। पहिली अनुसैनाहै। बसन्त पतिझार भये संकेत नष्ट होइजैहै याते सुमिरण है ॥

(स०) सङ्गसखीके गई अलबेली महासुख सोवन बाग बिहारन। बाढ़्यो वियोग विनोद गयो जब देखती है ये पलास कि डारन ॥ जानि वसन्त औ कन्त विदेश है बावरीसी ह्वै लगी यों पुकारन। च्वै चलिहैं चुरियाँ चलि आउरी आँगुरिया जनिलाउ अँगारन ॥

टी०। प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिका पलास देखि सुमिरन बसन्त जान्यो॥

(क०) कसु कुच कञ्चुकी सों विरचि विमल हार मालती के फूलते धरेही कुम्हिलाइगे। गोरीगारु चन्दन सँवारु तन आभरन दीपक उज्यारु तम छितिपर छाइ गे॥ बारुधूप अगर अगार धूप बैठी कहा आजु अमरेश तेरे भूलिसे सुभाइगे॥ शरद सोहाई सांझ आई सेज साजु अस कहत सुवाके आँसुवा के नैन आइगे॥

टी०। कलहंतरिता अथवा प्रवत्स्यत प्रेयसी है तुरंतको हाल सखी नहीं जानै याते नायिका से कहै है यासे सुमिरण भयो। आँसू आये यासे चपलातिशयोक्ति भी दरशै है॥

(स०) बाजैंचुरी बिछुवा घुँघुरू मुख श्वासै कढ़ैं ते अनङ्ग झकोरसों। ऊंचेउरोजलगे थहरै खुलिकेश नेबाजरहे चहुँओरसों॥ मोलही लेत सुहाग भरी चितवै जब लाजभरी दृगकोरसों। सौगुनो स्वाद बढ़ावति सुन्दरि वा रसमें सिसकीन के शोरसों॥

टी०। इहां प्रोषित नायक संयोग शृंगार सुमिरणहै। मध्या नायक को भाव है॥

(स०) जादिन ते परदेश गये पिय तादिन ते तन छीजतुहै। निशिवासर भौन सोहात नहीं सुधिआये उसासन लीजतुहै॥ अब और उपाव बनै न कछू अनुभौ इतनो सुखकीजतुहै। उन प्यारे पियाकी उन्हारि सखी ननँदी मुख देखिकै जीजतुहै॥

साहस के रसके मिसह्वै हँसि माँगी बिदेश बिदा मृदुबानिसों। सो सुनि बालगई मुरझाय दही जनु धीरज

बेलि दवानिसों ॥ नैनगरो हियरो भरिआयो नहीं कहि आयो कछू वा सुजानिसों । सालती हैं उरमाँझ गड़ी वै बड़ी अँखियां उमड़ी अँसुवानिसों ॥

टी० । इहां प्रोषित नायक है नायिका की सुधिकरै है याते सुमिरण है ॥

(क०) चौपरिके खेलनो सहेलिन समेत बैठी इन्द्र की परीसी भरी छवि छलकति है । अमल कपोलनमें झूमि झूमि झुकि झुकि झाँई झुमकानकी हियेमें झल-कतिहै ॥ जा दिनते औचक निहारी पाँसा फेंकत में वा दिन ते मनसा लखै को ललकति है । टरति न टारे केहूँ आज लौं हमारे वह हालनि हुमेलकी हिये में हलकतिहै ॥

टी० । प्रोषित नायक है परदेशमें नायिका की सुधिकरै है ॥

(स०) बालम के बिछुरे भइ बालको व्याकुलता विरहानल आनितें । चौपरि आनिरची कविशम्भु सहे-लरियाँ सिगरी सुखदानितें ॥ तो युग फूटै न एरी भटू यह काहू कह्यो सखिया सखियानितें । कंजसे पाणि ते पाँसे गिरे अँसुआ गिरे खंजनसी अँखियानितें ॥

टी० । प्रोषितपतिका नायिका । वियोग शृंगार । सुमिरण अलंकार और चपलातिशयोक्ति धर्मलुप्तादि अलंकार की सन्धिहै ॥

(दो०) श्याम सुरति करि राधिका तकति तरणिजा तीर ।
अँसुवन करति सरोषको छनक खरो हो नीर ॥

टी० । इहां वियोग शृंगार यमुनाको नीर श्याम देखि सुमि-रण भयो ॥

(दो०) सघन कुंज छाया सुखद शीतल मन्द समीर ।

मन ह्वै जात अजौं वहै वा यमुनाके तीर ॥
परसत पोंछत लखिरहत करि कपोल को ध्यान ।
करलैप्यो पाटल विमल प्यारी पठये पान ॥

टी० । प्रोषित नायक है । प्रथम पान हरे होते हैं फिर ग्रीष्म-ऋतुमें पीले होजाते हैं (ऐसेही मैं भी पीरी होरहीहूं सो नायक के स्पर्श से हरी होऊंगी) इस भांति प्राणप्यारी मोको स्मरण करती है । पान देखि सुमिरण भयो ॥

अथ संभ्रम लक्षण ॥

(दो०) जाहिलखे भ्रमहोत है सम्भ्रम सोई आय ।
तहें सो भ्रमको देत है उदाहरण कविराय ॥
उदा०—(दो०) बेसरिमोतीद्युतिझलकपरीओंठपरआय।
चूनोहोयन चतुरतिय क्यों पटपोंछेजाय॥

टी० । इहां मोती की झलक में चूनाको भ्रम है याते संभ्रमालंकार है । भ्रान्तापह्नुति भी दर्शै है ॥

(दो०) राधे ललित कपोल तिल जानि भौंर मड़रात ।
दाड़िम धोखे आशुही बैठि उरोजन जात ॥
उजियारी मुखचन्द्की परी उरोजन आनि ।
कहाअँगौछतिमुग्धतियफिरि फिरि चन्दन जानि॥
खिलविलोकि प्रविशनलग्यो व्यालशुण्डमें व्याल।
वाहू कालौ ऊंखभ्रम लियो उठाय उताल ॥

टी० । इहां हाथी सांप दूनों को भ्रम भयो ॥

(स०) आनन है अरविन्दन फूलो अलीगन भूले कहा मड़रातहो । कीर तुम्हैं कहुँ बायलगी भ्रमबिम्ब के ओंठन को ललचातहो ॥ दासजू व्यालन बेनी बनावहै

पापी कलापी कहा इतरातहो। बोलति बाल न बाजति बीन कहा सिगरे मृग घेरत जातहो॥

टी०। इहां रूपगर्विता नायिका है। भ्रान्तापह्नुति है॥

(श्लो०) जटांनेयंवेनीकृतकचकलापोनगरलं गले कस्तूरीयंशिरसिशशिरेखानकुसुमम्। प्रियंभूतिर्नाङ्गेप्रिय विरहजन्माधवलिमा पुरारातिभ्रान्ताकुसुमशरमांऽयथय सिकिम्॥

टी०। इहां प्रोषितपतिका नायिका है। नायिका की उक्ति काम प्रति। हे मदन तोको भ्रम है मैं महादेव नहीं हूं याते भ्रमालंकार है॥

(स०) कञ्चनकी कजरौटी लिये गुड़ियानको काजर पारन आई। रोमावली उलही लहि ताछिन सो उपमा न कही सरसाई॥ चौंकि परीसी परी जसवन्त भरी भ्रमसी श्रमसी भरिआई। पोंछत धायसों जाय गुराई में दीपशिखाकी लगी करिआई॥

टी०। इहां अज्ञातयौवना नायिका को रोमावली दीपशिखाको भ्रमहै याते भ्रमालंकार है॥

(क०) मन्दही चलत इन्द्रवधूके वरणहोत प्यारी के चरण चारुनैनहूँ ते नरमैं। सहज ललाई काशीराम वरणी न जाय जाकी गति देखे कविहूकी मति भरमैं॥ ऍंड़ी ठकुराइनि की नाइनि गहत जब ईंगुर सुरंग रंग दौरे दरबरमैं। दीन्हो है कि दीबाहै विलोकै शोचै बार बार बावरी सी ह्वै रही महाउर लै करमैं॥

(दो०) सूरउदित हूं मुदित मन मुख सुखमाकी ओर।
चितै रहत चहूँ ओर ते निश्चल चपन चकोर॥

पायँ महावर देनको नाइनि बैठी आय।
फिरि फिरि जानि महाउरी एँड़ी मींजन जाय॥
सखी प्रिया की देहमें रच्यो शिंगार अनेक।
कजरारी अँखियान में भूल्यो काजर एक॥
दियो अर्घ नीचे चलौ संकट भान्यो जाय।
सुचती ह्वै औरौ सबै शशिहि बिलोकै आय॥
बिरह जरी लखि जीगुनन कह्यो नवै कै बार।
अरी आउ भजि भीतरै बरसत आजु अँगार॥

टी०। यह प्रौढ़ा प्रोषितपतिका नायिकाहै जुगनू और अँगारनको भ्रमहै॥

अथ सन्देहालंकार लक्षण॥

(दो०) जहाँ कौन हूं वस्तु करि मन में होत सँदेह।
तहँ सन्देहा कहत हैं कवि कोविद करि नेह॥

उदा०—(क०) विरह व्यथाके आदि कारण विधाता कैधौं दैन दुखदाता छैल नजरि नवेलीके। शिशुता समीपी सृष्टि मेटन महेश कैधौं श्रीफल फलित फल काम तलबेलीके। परमेश परसेने सीकर बढ़ावन मनोज सरसावन विरह तलबेलीके। ओछे कद ओछे बैस उदित अछीने छीने ओछे ओछे उन्नत उरोज अलबेलीके॥

पुनः—(स०) राधे कि ठोढ़ीको बिन्दु दिनेश किधौं बिसराम गोविन्दके जीको। चारु चुभ्यो किणुका मणिनील को कीधौं जमाव जम्यो रजनी को॥ कैधौं अनेक शिंगार के रंग लसै वरवीज वशीकर पीको। फूले सरोज में भौंर बस्यो किधौं फूलससीमें लग्यो अरसी को॥

(क०) कैधौं उरआनँद के मन्दिर शिखरचन्द

कीधौं काम कीर तिलताके कन्द जाने में। कैधौं चित्त चोरी के चुगुल काढ़े हियमें ते यौवन जवाहिर के संपुट से मानेमैं॥ एरी तिय तेरे उर उन्नत उरोज कैधौं दुंदुभी युगल रूप भूपति कें थानेमैं। कैधौं सालू ढाँपे हेमकुंभहैं युगल भरे मदन नवाबजूके आबदार खानेमैं॥

मुख अरविन्द की मृणाल कुण्डली है कैधौं उछली सिलीहै हेम कान्हर अगारकी। रविजोम होम कुण्डनाभि मेखलाहै कैधौं शरम गरम गढ़ गिरदै सुढारकी॥ राजतीं.तरंगै ये त्रिवलिका तरुणिकी कि पिय मनवेलिनी सोहाती सुखगारकी। ओजरंग बोरी मंजुगोरी राजसीकी की गुलालभरी झोरी है मनोज होरिहार की॥

कैधौं मतवारे मोर शोर न मचावैं वहां कैधौं पिक चातक चकोर गर परिगो। कैधौं बकपाँतिन की बिछुरी जमाति कहूँ कैधौं मगबीच अरि वारिधिसों भरिगो॥ कहै पजनेश कैधौं मन्दद्युति दामिनीकी यामिनी में पूरण प्रकाशचन्द अरिगो। विरह बढ़ावन धौं सावन न आयो वहां कैधौं मनभावन की आवन बिसरिगो॥

कैधौं रूपराशिमें शिंगार चारु अंकुरित कैधौं कंकुरित तंम तड़ित जुन्हाई में। कहै पदमाकर सुकैधौं काम कारीगर नुकता दियो है हेमफरद सुहाई में॥ कैधौं अरविन्द में मलिन्द सुत सोयो आनि कैधौं तिल सोहत कपोलकी लुनाई में। कैधौं परो इन्दु में कलिन्दी जलबिन्दु कीधौं गरक गोविन्द भयो गोरीकी गुराई में॥

सम्पुट सरोज कैधौं शोभाके सरोवरमें लसत शिंगार के निशान अधिकारी के। कहै मदनेश लोलचित्त चित्त

चोरिबेको चोर ये कठोर नारँगीय बरबारी के ॥ मन्दिर मनोज के कलित कुम्भकञ्चन के ललित फलित फल श्रीफल विहारी के । उरज उठौना चक्रवाकन के छौना कैधौं मदन खेलोना ये मलोना प्राणप्यारी के ॥

कैधौं कालिंदी के कुण्ड पावस विगत दोय पूरिरहे जलसों पसारि छवि भारीहै । कैधौं ये तिमिरभाग उरको समिटि गये कैधौं कामपाटी पाटिबे को बिबिधारी है ॥ कहै मदनेश ये कुहूके खण्ड द्वैक कैधौं कैधौं नीलमणिको पटल पटपारी है । कैधौं काकपक्ष छाहँ करत क्षपाकरपै कैधौं युगपाटी तेरी निपट निनारी है ॥

मानौ बिबि गंगाकूल करत तपस्या कीधौं कामके-तुकासे लगि उठेहैं उठौनाके । यौवन नरेश के धौं ग्राम के निशान कैधौं श्रीफलसे सरस खेलौना फूल दौनाके॥ आलम सुकवि कलधौतके कलश कुच आनँद के कन्द की मनोज रसहोना के ॥ ढँपे नँदनंद प्यारी श्वेत कंचुकी में कुच फटिकके सम्पुट में द्वै सरोज सोना के ॥

जारीदार पैन्हे श्वेत कंचुकी किनारीदार उरज दिखाई देत दिल दुख मेटे हैं । कीधौं रायजादे की युगल उमरायजादे खान सुलतानजादे सुखमा समेटे हैं ॥ कैधौं मीरजादे पीरजादे की अमीर जादे तोषनिज टोपी दिये सोहैं पठनेटे हैं । विद्रुम की झांझरी विराजै बिबिराजै कैधौं लाल जाल पाट बैठे खूब खतरेटे हैं ॥

कंचन कटोरे बोरे सुधा से सरसचारु छत्र हैं गुलाब के कि कंज मानसर के । विधि निपुणाई के बने हैं युग

याम कैधौं छौना छविधाम कैधौं काम कारीगर के॥
वन्दि विरचेहैं मोर सुन्दर सनेह के से खंज चष चोर कै
किशोर दिवाकर के। सन्त सुख दैन कैधौं चंचल चलाके
ऐन मैन मदहारे प्यारे नैन रघुवर के॥

शरद मयंक मंजु मण्डल प्रकाशो कैधौं भासो अति
भासो खाँसो बिम्ब दिनकर को। लाल मणिमाल जाल
ज्योतिन समूह कैधौं रतन मुकुर मध्य कुण्ड सुधासर
को॥ वन्दि है विमल फूलो मर्कत मणि फूल कैधौं बिज्जु
छटा छत्र पत्र चाँदनी सुघरको। कंचनको तारो कैधौं काम
को शिंगारो शुभ शोभा सुखवारो प्यारो मुख रघुवरको॥

(स०) है हरिचन्द नरेश सुरेश किधौं शिबिभूप
स्वरूप सवांचो। की बलि विक्रम भोज लसै यह दानी
दुनी मधि एकहि यांचो॥ वन्दि अनन्दित कर्ण सुवर्ण
सुवर्ण लुटावत ज्यों समकांचो। बाबूप्रयागनरायण की
कलि में कलपद्रुम है यह सांचो॥

(दो०) हौंहीं बौरी विरह वश कै बौरो सब गाउँ।
कहा जानिये कहत हैं सखी शीतकर नाउँ॥
चकी जकी सी ह्वै रही बूझे बोलति नीठि।
कहूं डीठि लागी लगी कै काहू की डीठि॥

टी०। ये दोनों दोहनमें कै शब्द कारके सन्देहालंकारहोता है।
विरहिनी नायिकाहै॥ दूसरे दोहामें समुच्चय भी दर्शै है डीठि में
डीठिको धर्म आरोप है॥

अथ षट् अपह्नुतिअलंकार लक्षण॥

(दो०) जहां झूठ आरोप करि वस्तु छपावै सांच।
तहां सुधापह्नुति कह्यो सुकविन निरेअयांच॥

उदा०—दृग नहिं खंजन हैं सखी अधरन बिम्बनिहारि।

मुखनहिं यहअरविन्द है कुचन कलशयुगधारि ॥
ज्यो शरद शशि अमलनहिं तियमुख परम प्रकाश।
याहीते जान्यो परै माड़त फिरत अकाश ॥
यह नहिं श्यामा श्याम के रही गरे भुज मेलि।
सखि लघु तरुन तमाल सो लपटी सुवरनबेलि ॥
वेई गड़ि गाड़ै परी उपट्यो हार हियेन।
आन्यो मोरि मतंग मनु डारि गुरेरन मैन ॥

(क०) चन्दकी मरीचै कैधौं तोरि बिथराय दई कैधौं हीरा फोरिकै कनूका धरि धरि गये। कैधौं काममन्दिर की झँझरी बनाई विधि कैधौं सोनजुही के से फूल झरि झरि गये॥ कामिनी मनोरथ के आलबाल शिवनाथ मैनके मतंग कैधौं बेली चरिचरि गये। अधर कपोलन में दाग नहीं शीतला के डीठि गड़िगड़ि गई गाड़ परिपरिगये॥

टी०। इहां तीनि तुकमें सन्देहालंकार और पीछेकी तुकमें सुधापह्नुतिहै। शीतलाके दाग नहीं डीठि गड़ने के गढ़ाहैं॥ यह सुधापह्नुति को लक्षण है॥

(क०) चारोओर जोर धुनि घनकी न होहियेरी चढ़ी चतुरंगघोर धौंसा घहराने हैं। मेढक मदन मारू राग महि मण्डल में चातक मयूर ते नकीब ठहराने हैं॥ त्रिटप अनेक अमनैकी अजवेश कवि कुंजपुंज माते गज झुकि झहराने हैं। धुरवा न होहिं एरी मेरी बीर मानुबात मदन महीपके निशान फहराने हैं॥

चपला न होहिं बरछीन की चमक चारु चातक न बोलत नकीब निरधारे हैं। मोर ना करत शोर करषा कहत ढाढ़ी बकनकी पाँति सो पताके जीतवारे हैं॥

बेनी कवि पावस प्रबलदल साजि चढ़्यो चहूं ओर काँपि उठे विरही विचारे हैं। बादर न होहिंकारे कारे फौज वारे भारे मदन महीप के मतंग मतवारे हैं॥

पावस प्रबल प्रजा पालबरबद्दल के दलके हरौलवल्ली हलके न गाये हैं। इन्दुचाप उन्नत अमीरी अनुकूल विज्जुउज्ज्वल दुकूल झूल झलाझल गाये हैं। पौनपुत कार की झकोरन कि शोर जोर भौन भौन कौन के न हीतल हलाये हैं॥ धूमरंग बंधुर धरनिधुरवान धीर सिंधुरन धुंधुर मदंध उठिधाये हैं॥

झींगुर झनक बिछुवान की छनक तैसी मधुर मृदंग धुनि मंडुकन की ठई। तनत तरंग तान तोयद कलश तैसी तायफा तड़ित गति भरत नईनई॥ कहै घनश्याम कवि कहूँ कलहंस केकी चातक उचारैंनाद सकल सुखैमई। पावस न आई पास बाँधौ पति बादशाह पातुर प्रवीन पाकशासन पठैदई॥

अथ हेतअपन्हुति लक्षण॥

(दो०) वर्णि वस्तु को युक्तिकरि जहाँ छपावत कोय।
हेत अपन्हुति जानवी परम पुराने लोय॥

उदा०(दो०) हरिईक्षनतीक्षन नहीं अरी कामकेबान।
आनननहिंअरविन्दहै विरहसतावनजान॥

टी०। इहां हरिईक्षन वर्णि पुनः युक्तिसों कामके बानकहि सबै छपायो ताते हेतु अपन्हुति है॥

(दो०) सबै कहत नर कमलसे मोमत नैन पषान।
नतरुकइनवियलगतकन उपजतविरहकृशान॥

टी०। इहां कमलनैनको वर्णिके युक्तिसों छिपायो युक्ति क्या

कि विरह कृशानु उपजै है पत्थर से आगि निकसै हैं याते हेतु अपन्हुति है ॥

(दो०) हुतोअसितसितकायभोद्विजपतिग्रसिअघपाय।
हैननिशाकर राहु यह सजनी परत लखाय ॥

अथ पर्जस्तापन्हुति लक्षण ॥

(दो०) औरेके गुण और में आरोपण जब होत ।
पर्जस्तापन्हुति कहैं सकल कविन के गोत ॥

उदा०– स्रवत सुधाशशिबदनयह मृदुलकंजकरआय ।
बानसुतीक्षण तान है सजनी परत लखाय ॥

टी० । इहां शशिसुधा गुण वदन में मृदुलता कंजकी करमें । बानकी तीक्षणता ताम में आरोपण कियो याते पर्जस्तापन्हुति है ॥

कोमलकमलनसोंकहै नेक न तिन्हैं सयान ।
होत पार लागंत हिये नैन मैन के बान ।

पुनः–(क०) तुम करतार जग रचा के करनहार पुजवनहार मनोरथ चित चाहेके । यहै जियजानि सेनापतिहौं शरण आयों हूजिये दयाल मोहिं ताप दाप दाहे के ॥ जोऊ कोऊ कहै तेरे करम न ऐसे हम गाहक हैं सुकृत भगति रसलाहेके । आपने करम करहौंहीं भुगतैंगे तब हौंहीं करतार तुम करतार काहेके ॥

टी० । इहां कर्तापनो गुण आपमें आरोपन कियो याते पर्जस्तापन्हुति है ॥

अथ भ्रान्तापन्हुति लक्षण ॥

(दो०) जहँ औरे को भ्रमभये कहे शंक मिटिजात ।
कहुँ प्रस्वेद आयो अली गोरगात शितलात ॥

टी० । इहां पसीना को भ्रमभयो सो मेरा गोरागात सेतहा है अर्थात् मेरे गातमें सेत सब दिन आवै है याकी शङ्का न करो। यह भ्रान्त्यपन्हुति है ॥

कुञ्जन ढूंढ़्यो नहिं मिल्यो करते छूटो लाल।
कहा अँगूठी मोहुतो नहिं सजनी गोपाल ॥

टी०। लालरत्न की शङ्का सो गोपाल कहि भ्रम मेट्यो ॥

बरजोरी होरीसमय अँखियन गयो समाय।
सखिगुलाल नहिंबनकवनि नंदलालइतआय ॥

अथ छेकापन्हुति ॥

(दो०) सांचबात को युक्तिसों पूँछे देत छपाय।
छेकापन्हुति ताहिको कहत सुकवि समुदाय ॥

उदा०—स्रवत सुधानिशिमेंउयो चहुँदिशिउदितउजास।
चन्द्रमुखी नहिं राधिके मुखछबि परमप्रकास ॥

टी०। इहां चन्द्रमा साँच बात को छिपायो याते छेकापन्हुति है ॥

(बरवा) करत बाम हियरा में परत न भार।
भटूभावतो तेरो नहिं सखिहार ॥

(दो०) बरसतरसनितप्रतिअधिकअमितअरामहिंदेत।
री घनश्याम सुजाननो नहिंघन जगके हेत ॥

(स०) आयो सुहायो महासुख पायो कह्यो दुख सासु ननन्दको भारो। बारेको प्यारो दुलारो महा कवि दूलह है यह प्राण अधारो ॥ कोटिकलानि सिखावत है यह किङ्किणि नेवरकी झनकारो।सोजा सखी भरमै मति री यह खोजा हमारो है माइके वारो ॥

टी०। साँचीबात को गुप्तकरि छपायो याते वर्तमान गुप्ताना-यिका और छेकापन्हुति अलंकार है॥

लोग लोगाइन होरी लगाय मिलामिली चारु न मेटतही बन्यो। वै तेहि औसर आय इतै समुझाय चितै न समेटतही बन्यो॥ देवजू चन्दनचूर कपूर ललाटन लै लै समेटतही बन्यो। कीन्ही अनाकनी यों मुख मोरि पै जोरि भुजा भटू भेंटतही बन्यो॥

(क०) कहा कहौं कुञ्जतीर आजकी बहार बीर मेटिके शिंगारहार दूरि कियो चीरहै। परस नशाई है ललाई अधरानहूँ की बिथुरी अलक बाढ्यो पुलक शरीर है॥ सिसकी भरेहू में गोदजाय तिसकी मैं अंजन मिटाय कियो रंजन न धीरहै। देखतरसाली छविसाली प्रीतिकी कटाली कहा बनमालीआली कालिंदीको नीरहै (स०) जोरजगी यमुना जल धार में धायधँसी अलि केलि कि माती। त्यों पद्माकर पैगचले उछले जल तुंग तरंग विघाती॥ छूटेछरा हराटूटे सबैतरबोर भई अँगिया रँगराती। को कहतो यह मेरीदशागहतो न गोविन्द तौ मैं बहिजाती॥

अलि हौं तौगई यमुना जलको सुकहा कहौं वीर विपत्तिपरी। घहराय कैकारीघटा उनई इतनेही में गागरि शीशधरी॥ रपटोपग घाटचढ़ोनगयो कवि मण्डनह्वै कै विहालगिरी। चिरजीवहि नंद को बारो अरी गहि बांह गरीबने ठाढ़ीकरी॥

टी०। गुप्तानायिका। छेकापन्हुति अलंकार है॥

अथ कैतवापन्हुति लक्षण ॥

(दो०) कैतव पन्हुति व्याज करि वस्तु दुरावन योग।
एकभाव पन्हुतिन में जानि लेहु कविलोग॥

उदा०--रच्यो विरंचि विचारिकै राधे मुख सुख मोद।
तेहिसमता मिस फिरत है धरि कलंक चहुँकोद॥
है परि पूरण चन्दयह श्री नँदनन्द लखाय।
राधे जूके बदन मिसि बस्यो धरणि तलआय॥
वाहिलखे सुधिभूलिहै चलिहै नहिं छलजाल।
राधेमिस टोना भयो बरसाने में लाल॥

टी०। इहां सबठौर व्याजकरि वस्तुदुरायो याते कैत वा पन्हुति है। इति॥

अथ उत्प्रेक्षा[2] अलङ्कार लक्षण ॥

(दो०) वस्तुहेतफलकी जहां सम्भावना विचार।
सो उत्प्रेक्षा तीनिविधि इकइकदुगुननिहार॥

उक्त विषयाको उदाहरण॥

(दो०) कसीभौंह उकसीपलक लसी विलोकनि बङ्क।
हनतबान धनुतानिजनु मनमथ सुभट निशङ्क॥

टी०। इहां लक्षिता अथवा अन्यसम्भोग दुःखिता अथवा सखी को कथन नायक प्रति शृङ्गार रस को बीररसअङ्गहै॥

---

१ झूठ सांच छिपाना सुधापन्हुति। युक्तिसे वस्तुछिपाना हेत अपन्हुति और के गुण और में आरोपण करना पर्यस्तापन्हुति। औरेका भ्रम मेटना भ्रांतापन्हुति। युक्ति से बात छिपाना छेकापन्हुति। मिसकरि आनवर्णन छिपाना कैतवापन्हुति॥

२—वस्तु उत्प्रेक्षा उक्तविषया १ वस्तुउत्प्रेक्षा अनुक्तविषया २ हेतु उत्प्रेक्षा सिद्ध विषया ३ हेतुउत्प्रेक्षा असिद्ध विषया ४ फल उत्प्रेक्षा सिद्धविषया ५ फलउत्प्रेक्षा असिद्ध विषया ६॥

३—(दो०) वस्तुनाहि को कहत हैं सकलसुकवि मतिभौन। वर्णनहां में पाइये मुख्यपदारथ जौन॥

(क०) आई जल केलिको नवेली रसरङ्ग भरी अङ्गअङ्ग भूषण अनङ्ग रङ्गरस तैं। कहत किशोर मुख धोय पोंछि आंचर सों ठढ़ीभई तीर में छवीली उरजस तैं॥ कर उलटायके कँधापर ह्वै आंगीवन्द गहि रहि गईलाल देखि लाज बस तैं। सन्मुख सबल विलोकि रणधीर मानों खैंचत सुभट वीर तीर तरकसतैं॥

टी०। इहां वस्तु उत्प्रेक्षा उक्त विषया। मध्यानायिका है। अनङ्ग रङ्ग ते प्रौढ़ा भी है। शृंगार को वीररस अङ्ग है रसवत् अलङ्कार है॥

छकि छकि दोऊ झुकि झुकि मुखचूमैं झूमैं जैसे लगे बात जलजात जुरि जुरिजात। वेनीकवि रसिक रसीले रस मसे दोऊ दै दै गलबाहीं हँसि हँसिमुरिमुरि जात॥ छूटे बार टूटे कण्ठसिरी ते सुटारमोती ऐसे. कुच बीच युगलोल ढुरिढुरि जात। मानौ तम तमकि विचारितारे हारे दुवौ गिरिकी दरी में दौरि दौरि दुरि दुरि जात॥

टी०। इहां संयोग शृंगार लीला हाव कवि प्रौढ़ोक्ति जमकालंकार ते उत्प्रेक्षालंकार और तारहार उक्त है अनुक्तभी है मानो तमते तमकि कै। हेतु उत्प्रेक्षा असिद्ध विषया है।

करि विपरीत रङ्ग साँवरे सलोने सङ्ग प्रेमके प्रसंग चाव चौगुनो चढ़त भो। रद छद छीन लवलीन कै कपोल गोल गहब गुराई कुच कुंकुम मढ़तभो॥ आलस बलित ह्वै ललित छवि छूटे केश कवि मदनेश ताकी उपमा गढ़त भो। करि निरवार बार बारन बदन बाल मानौ तमतोरि शशि बाहर कढ़त भो॥

(स०) प्रीतमगौन सुने गजगौनी को भूषण भौन

सबै बिसरो है। अंगपरी तलबेली महाकविराज तहां भ-
रि आयो गरो है॥ नैनन ते बहि कज्जलधार उरोजन
मध्य सो आनि परोहै। चीरबे को तिय को हियरो बि-
रहा बढ़ई मनु मूंत धरो है॥

टी०। प्रवत्स्यतपतिका नायिका है। उत्प्रेक्षालंकार है॥

काहू कह्यो कि गुलाब कली पर भौंर को चेटुवा आ-
नि अर्यो है। कुन्दन कौलकलीपर काहू कह्यो कि मनो
नग नील धर्यो है॥ राधे कि ठोढ़ी विराजि रह्यो तिल
देखि विचार यहै मैं कर्यो है। भौंह बनावत मानो बि-
रञ्चिके लेखनी ते मसि बिन्दु पर्यो है॥

(क०) आई फागु खेलिकै सकेलि सुख सांवरे सों
सुन्दरि सुघर सो सनेह सरसावै है। केशरिके रंग भीजी
चूनरी सुरंग रंग आनन अनंगकी तरंग दरशावै है॥
राजत अनोखो आछो बदन गुलाल भरो कहत किशोर
सो अनूप छबिछावै है। अमल अभंग आछो युत उत्त
साह मानो अरुण घटाते शशि निकसत आवै है॥

भनि पजनेश पुण्य मेरुमें पवित्र भूमि केतिक प्र-
काश झाड़ ज्योति जरै ज्वालासी। करत प्रदोष व्रत पू-
जन किशोरी गोरी डेरेकर आरसी उजेरे शील शालासी॥
मुकुर नवीनता निहारि बर बन्दनी के बिंदुलावली स
दीप दान बहु बालासी। मानो व्योम गंगाकी गँभीर
धीर धारा धँसी दीपक चढ़ावैं देवकन्या दीप मालासी॥

(स०) पौढ़ी चिकै परी प्यारी तहां पर्यंकते फैलि
रही प्रभा भूपर। लै बरजोरी करी पजनेस बशीकरसी
तसवीर बधूपर॥ हासकी पीन पयोधर पै नख-लागे

लला ललचाल तेहूपर । मानौ खराद चढ़ी रविकी कि-
रणैं पड़ीं आनि सुमेर के ऊपर ॥

बिलौरकी बारादरी जिमि ज्योति जमुरद की कुरसी
बजैबीन । गनै पहली प्रतिबिंब न दीपं न दीपतिते पज-
नेश प्रबीन ॥ प्रस्वेदके रूप डिठोन फिरी लट लागिरही
जनु लोयन लीन । मनौ रतनाकरमें रतिनाथ लिये चुन
बंशी बझावत मीन ॥

टी० । कँटिया सों मछरी बझावना उक्तहै इससे उत्प्रेक्षा उक्त
विषयालंकार है ॥

फागु मची नँदनंदके द्वार बजैं बहु बीन मृदंग रबा-
बैं । खेलती वै सुकुमार तिया सहिभूषणहूं की सकै नहिं
ताबैं ॥ श्वेत अबीरकी धूंधुरमें सब बालनकी बिलसैं मुख
आबैं । चाँदनी में चहुँ ओर घटा मनो शंभु बिराजि रहीं
महताबैं ॥

(दो०) मानहुं मुख देखरावनी दुलहिनि करि अनुराग ।
सासु सदन मन ललनहूं सौतन दियो सोहाग ॥

(स०) सोनेके चूरन में चमकैं किरचैंसी उड़ैं छबि
पुंज झवाके । हाथ न लेत बिरी लहकै मखतूलन फूलन
जेब जवाके ॥ गंग बड़े बड़े मोतिनके सँग सोहत थोरे
थोरे कुच वाके । अण्डन के मनु मण्डल मध्यते ह्वै निकसे
चिकुला चकवाके ॥

टी० । इहां अण्डनते बच्चा निकलनो उक्त याते उत्प्रेक्षा उक्त
विषयाहै ॥

(दो०) उतरि अटाते भावती भीजत आई गेह ।
मानो बरसी बीजुरी बूँदन के सँग मेह ॥

मोतिन की लर मांगमें रही बदन द्युति बेधि ।
मनो अँध्यारी मध्य में भाग्यो शशि दै सैंधि ॥

टी० । इहां सेंधि दै चोर को भागनो उक्त परन्तु सेंधि देना चन्द्रमाको धर्म नहीं इससे अनुक्तविषयाभी होसक्ता है ॥

(दो०) मकराकृत गोपाल के कुण्डल झलकत कान ।
बस्यो मनो हियधर समर ड्योढ़ी लसत निशान॥
भाल लाल बेंदी दिये छुटे बार छवि देत ।
ग्रसो राहु अति आहु करि मनु शशि सूर समेत॥

टी०। सूर्य चन्द्रमाको राहुसे ग्रसना उक्त याते उक्त विषया है॥

अथ अनुक्तविषया उत्प्रेक्षा ॥

उदा०—(स०) प्रात उठी रति मानि भटू धुनि लाल शिखाकी हिये खटकी है। चाह भरी अलसात जम्हात औ बातन मोहन सों अटकी है॥ उन्नत यों छबि सों करजोरि कढ़ी छवि वा मुखकी तटकी है। कंजसनालकी कुण्डलीपै मनु सीखत चन्दकला नटकी है॥

(क०) साजे व्रजभूषण के भूषण बसन अंग राचे रसरंग संग सुन्दर सुजानके। कहै पदमाकर त्यों पेंच पगरी के खुले टूटे कल कुण्डल कपोलन पै कानके॥ ढुलकि कपोलनते उरते उरोजनपै मंजु मकराकृत बड़ेरे मुकतान के। मानो छल छन्दके छपायके छपाकरने सौंपे आनि ईशहि निशान पंचबानके॥

(स०) भोरभये तकिया सों लगी तिय कुंतल पुंज रहे बगरायके। कंजमको करके तर ऊपर गोल कपोल धरे अरसायके॥ आनन में विलसै रदकी छवि श्रीपति

रूप रह्यो अतिशायके । मानहुँ राहुसों घायल ह्वै विधु पौढ़ोहै पंकजके दल आयकै ॥

टी० । राहुसे ग्रसनो उक्त घायल होना अनुक्त याते अनुक्त-विषया ॥

(क०) फरशजरी को नगजटित जटितमणि मढ़त वितान द्विजभाग भीर भरिगो । कवि पजनेश कीट कुण्डल किशोर मुख उड़त गुलाल धूरि धूधुरि धुधरिगो ॥ गोरीको गुलालभरो कुंकुमसों लागो पागो अरुण उरोज पै उदोत उनगरिगो । फोरि तममण्डल ब्रह्मण्डित प्रकाश मानौ अरुण उदोत हेमगिरि पै बगरिगो ॥

टी० । चन्द्रको तम तोरिबो उक्त सूर्य को अनुक्त यासे अनुक्त-विषया । लीला हाव है । भावसे उक्त अनुक्त दोनों मिलिजातेहैं ॥

(क०) निशिअँधियारी बारी मन्दिर अकेली बाल लालके वियोग शोग सूरति समोयगो । बाढ़ी विकरार धार नैनन अपार वन्दि बालम विहीन विरहागि तन बोयगो ॥ करपै कपोल धरि शोचत मयङ्कमुखी उरको उल्लास सुखहास सब खोयगो । मानहुँ फणीन्द्र पर वर अरविन्द अरविन्द पर इन्दु यथा निद्रावश सोयगो ॥

अलबेली चलनि अकेली लखी कुंजन में रूपरस बेली मनमोहि गुन गोइरह्यो । देवकीनँदन कहै माधुरी सीमुसक्यानि नेकही विलोकि नैन प्रेम बीज बोइरह्यो ॥ लालहौं कहांलौं कहौं बालकी बदन शोभा अधरको ऐसो तिल आनन उदोरह्यो । सुघर सरोज मध्य राखि द्वैजपाके दल तामें अलिछौना कै बिछौना मनौं सोइ रह्यो ॥

अमल अमोल मुकताहल के हार तैसी हँसनि अमोल

मुकताहलके हारसी । चिन्तामणि कहै खीन खुली है सुपेद सारी। शरद जुन्हाई मुख सुखमा के सारसी ॥ जुगुति हमारी पर रीझिहैं विहारी एहो राधा रिझवारी शारदा को अवतार सी। धवल पुलिन मध्य यमुना कि धार धँसी दुरद रदनधर पर मनौं आरसी ॥

(दो०) पूरुब दिशि निशिको बितै चितै लखानो आय।
तरणि किरणिसों खैंचि मनु गयो तरैयन खाय ॥
मोर मुकुटकी चन्द्रिकनि यों राजत नँदनन्द।
मनु शशिशेखरकी अकस कियो शिखर शतचन्द॥

टी०। इन सबनमें अनुक्तविषया के लक्षण हैं ॥

अथ हेतुउत्प्रेक्षा सिद्धविषया ॥

उदा०–(क०) गुनन गहीली गरबीली गौनहाई गोरी सखियन सङ्ग अङ्ग उबटि नहाये हैं। नूतन बसन तन भूषण सकल साजि अनुपम रूप नहिं बनत बताये हैं ॥ आनन अनोखी आरसी लै दै सुरङ्ग बेंदी कवि मदनेश उपमा न ठहराये हैं । प्रीति परिपूरण प्रमाण करिबे के लिये मानो सूर शशिहि मिलन हेत आये हैं ॥

टी०। इहां कवि प्रौढ़ोक्ति वस्तुते अलंकार बिम्ब प्रतिबिम्ब हेतुसिद्धविषया उत्प्रेक्षा है ॥

(स०) एकसमै सिरी राधिका जू जलक्रीड़त तीर स्वरूप सोहाये। नीरसों चीरगये लगि देहमें दूनीबढ़ी सुखशोभ अन्हाये ॥ हरी दरिआई कि कंचुकी में कुच की उपमा कविदेत बताये । बाज कि त्रास मनौ चक द्वै जलजात के पातमें गात छिपाये ॥

टी०। इहां बाजकी त्रास से चकवनको गात छिपवनो सिद्ध है याते हेतुसिद्धविषया उत्प्रेक्षा है ॥

(क०) आये कान्ह कपटनिधान नववेली बाल बीते युगयाम सापराध सँग सोये साथ। बैठि ढिग बातन बनायकै बिनैकी सुनि बोली ना कुबोल रही नीचे कै नवाय माथ ॥ परसे कुचन दोऊ दीरघ दृगी के चारु मदनेश मुद्रित सराहि गुणगणगाथ। साँचे साह हूवेको गुनाह से बिगत होन मानो ईश शीशपै कसम करि राख्यो हाथ ॥

(दो०) तेरे सुरसम सुर न भो वृथा बूझि कुलभार।
मानहुँ कोकिल आपने पालत नाहिं परिवार ॥
लगी अनलगी सी जु विधि करीखरी कटिछीन।
कियो मनो वाही कसरि कुच नितम्ब अतिपीन ॥
सखी लसति गोपालके उर गुञ्जन की माल।
मनहुँ दिपति बाहेर वहै बड़वानलकी ज्वाल ॥

(क०) शशि भू छपातल सरोकत कलित बाल जम्बूनद सुरन सुगन्धित है फेरे में ॥ आईहौं पठैर्ह प्राणप्यारे के विलोकिबेकी बीचै पजनेश परीपीरी कै के रेमें ॥ बिथुरी अलक मुकताली छिपी छोड़ि माँग मुख छविछोरी कलि कचग्रह गेरेमें। मानो विसरविनि विलोकिबे को व्याकुलह्वै व्याल मागि आय मणि उगिली अँधेरेमें ॥

टी०। सर्प को अँधेरे में मणि उगिलनो सिद्ध है इससे हेतु सिद्धविषयाहै । अन्य सम्भोगदुःखिता नायिका का भाव मालूम पड़ताहै ॥

(दो०) लाल बदन लखि बालके कुचन कंपरुचि होति।
चपल होत चकवा मनो चाहि चन्दकी ज्योति ॥

(स०) श्रीनँदनन्द लसैं पलिकापर कापर जाल दशा कहि हालकी। भावती आपने हाथसों लैकर आप हि अञ्जलि जोरी गोपालकी ॥ ठाकुर तापै धस्यो मुख बालसो को वरणै उपमा यहि ख्यालकी। प्राननि में लिय आनन यों लसै चन्द चढ्यो मनु कंजकी पालकी ॥

टी०। इहां चन्द्रमाको कंजकी पालकी पर चढ़नो अनुक्त कहे असिद्धहै याते असिद्ध विषया भी होसक्ताहै ॥

अथ उत्प्रेक्षा असिद्ध विषया ॥

(दो०) मुदित होतहै कुमुदिनी जलजजात सकुचाय।
याते मानहुँ चन्दमुख राखत दिनहिं छपाय ॥

टी०। कुमुदिनी को फूलिबो कमलको सकुचिबो दिनमें सिद्ध नहीं इससे असिद्धविषया है ॥

(दो०) तेरे सुरसम सुर न भो बढ़्यो पिकी हिय दाह।
जात छोड़िबे हेत जनु कियो काकसों ब्याह ॥

(स०) प्रात उठी बिन कंचुकि भामिनि कान्हरसों करि केलिघनी। कविगङ्गजी जीभ हजारन होयँ तौ तू छवि जात न नेकगनी ॥ कुच शीश नखक्षत नाहदियो शिरनाय निहारतही सजनी। सो मनो शशिशेखर के शिरते निहुरे शशि लेत कला अपनी ॥

(दो०) ललन चलन सुनि चुपरही बोली आपन ईठि।
राख्यो गहि गाढ़े गरे मनो गलगली डीठि ॥

टी०। प्रवत्स्यत्पतिका नायिकाहै। डीठि गलगली होना असिद्धहै ॥

(क०) बैठी मणि महल प्रमोदित प्रकाशमान फूलनके फरश लुनाई लहरातिहै। भनि पजनेश दिन २ दूनी २ दिपै बदन छपाकरकी छवि छहरातिहै॥ नवल वधू के मृदु मंजु मधुराधरकी लाली नथ मुकुतन थिति थहरातिहै। मानो सनक्षत्र शिशुमारचक्र कुण्डली में सङ्करषन अनल भभूक भहराति है॥

(स०) मनमोहनी मूरति राधिकाकी मनमोहनको मन प्रेमपग्यो। चहुँओर में फैलिये चन्द्रिकासी मुखकी छवि नन्दकुमार ठग्यो॥ दुहुँ नैनके बीचमें काजर रेख विराजत रूप अनूप जग्यो। रविको तजि चन्द्रसों नेह कियो अरविन्दन मानो कलङ्क लग्यो॥

टी०। रविको तजि चन्द्रमा से नेह करना कमलन को असिद्ध है। संयोग शृंगार लीला हाव। कविनिबद्ध प्रौढ़ोक्ति भी है॥

अथ फलोत्प्रेक्षा सिद्धविषया॥

(दो०) चाहत शशि निज जनकको बाढ़्यो पूर अपार।
विरहिनि तियके दृगन मनु काढ़त आँसूधार॥

टी०। समुद्र को बढ़िबो और विरहिनि के आँसू बहिबो सिद्ध है। समुद्रमें पुत्र फल मिलिबो और विरहिनी को पति फल सिद्ध है इससे फलोत्प्रेक्षा है॥

(क०) मदन कि मानिनीसी सुरति सदन सेज सोय जागी प्यारी सखी लाई दौरि आदरस। बारन सँवारै पीक पोंछत कपोलनकी कसबकी कुचलखै तानि पानि के परस॥ यामिनी के जागे अरसीले वै रसीले नैन सेलके बसीले नीले बाल बिथुरे सरस। विधुकोअ-

धिप बूझि बालको बदनमानौ विधु बैर साधिबेको सेवें तम तामरस ॥

टी० । फल के लिये तामरसको सेवनो सिद्धहै । धर्मलुप्ता । वृत्तान्त वर्णन है ॥

(स०) केलि कि राति प्रभात चले मोप्रिया धृत पाठ पढ़ावन लागे । सो सुनि सेवक राधे बेचैन सुबैन करे जो कढ़ावन लागे॥प्रेम पयोनिधि सों कुचपै घनसे दृग आँसु बढ़ावन लागे। मानौ मुरारि न जाहिं विचारि पुरारिपै बारि चढ़ावन लागे ॥

टी० । मुरारि शब्द योगिकहै नायक न जाय रहै इस फल के लिये महादेवरूपी कुचन पर नेत्रनसों आँसु जल चढ़ावे हैं । प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है ॥

अथ फलोत्प्रेक्षा असिद्धविषया ॥

उदा०-(दो०) नैननकेसमताकरनअतिमनमेंसकुचाय
मनोमीनह्वै दीनसो जलमें गई समाय ॥
ऊंचेह्वैकुच वशकियो नरसुर औसुरपाल ।
लटकेहैं मानौ अबै जीतन हेत पताल ॥
भावसिंहकोदिशनमें फैलतप्रबलप्रताप ।
मानौतजिपरतियनकेपकरनकोदृढदाप॥
फैलिरह्यो महराजयश दशहुदिशनमेंढेर।
तेहि समहोने इन्दुजनु दक्षिण देतसुमेर ॥

टी० । इन सब दोहन के भाव असिद्धहैं यथा जल में मीन दीन होना । कुचोंको पाताल जीतना । प्रताप परतियन को पकरना । चन्द्रमाको सुमेरु की प्रदक्षिणा देना इत्यादि ॥

जिस जगह वाचक न होय और उत्प्रेक्षा संभवे तहां गुप्तोत्प्रेक्षा यथालक्षणम् ॥

(दो०) उत्प्रेक्षा वाचक शब्द जहां कह्यो नहिं होत ।
गुप्तोत्प्रेक्षा को तहां कीन्हो कबिन उदोत ॥
उदा०—चन्द सहोदर नम गयो याको सुधा मंदैत ।
लटकन मुकता अकसयहिं अधरनकी रसलैत ॥

टी० । मानो यहि अकसते इहां वाचक नहीं है ॥

कर उठाय घूंघुट करति उघरत पट गुझनोट ।
सुखमोटै लूटी ललन लखि ललनाकी लोट ॥

टी० । मानो सुख मोटै लुटी ऐसो चाहिये सो नहीं है ॥

(क०) कवि पजनेश केलिमन्दिर चिराग माल प-न्नके प्रभन प्रकाशी प्रभा फूटि फूटि । हीरम जटित जे-बदर परयंक पर दूनौ रहे रति विपरीत सुख लूटिलूटि ॥ दुरद दुरेफनके दुरते झरत स्वच्छ सुमन गुलाबदल छवि युत छूटिछूटि । प्रफुलित कंज दल दीरघ दृगनिके मृदु मुख महताब से परे से परे टूटिटूटि ॥

तमतमताममरसादिपति तोयदसी नीलक जटानि पाट जटि प्रजटीसी है । प्रजन प्रदर्प दर्प दीपक शि-खासी। शिखा हाटक फटिक ओपचटक फटीसीहै ॥ कच कुच दुबिच विचित्र कृतवक्र वेष छूटी लटपाटी घट तट लपटीसी है । विरह अशुभ पक्षतीतन प्रदोष पाय पन्न-गी पिनाकी पग पूजि पलटीसी है ॥

अंधकार धूमधार समशिर छूटेबार बिथुरे बिराजैं रति अंत सेजपर मैं । कालिदास कामरूप श्याम सङ्ग सोई बाम काम कामिनी के रूप कामकेलि घरमैं ॥ नव-लाकी नाभिकिहुनीदे कान्ह कुचगहि सोये जोये जटित अँगूठी सोहै कर मैं । मेरे जान बाँबी ते निकासि कारो

नाग फन राख्यो मणिमण्डित सुमेरु के शिखर में ॥

टी०। उक्त छंद में (मानौ) यह वाचक शब्द नहीं है याते गुप्तोत्प्रेक्षालंकार है ॥

(दो०) अपने अँगके जानिकै यौवन नृपति प्रवीन। तन मन नैन नितम्बको बड़ो इजाफाकीन ॥

टी०। मानौ बड़ो इजाफाकीन ऐसा चाहिये सो नहीं याते गम्योत्प्रेक्षा। मुग्धानायिका है ॥

अथ शयोक्ति अलंकार लक्षण ॥

(दो०) रूपकहीं में होत ये अलंकार छह भेद। जिमि तद्रूप अभेद सम वरणत सुकवि अखेद ॥

अथ रूपकातिशयोक्ति ल० ॥

(दो०) वर्णन विषयी को करै विषय बोध ह्वै जाय। साध्यवसाना लक्षणा तामें समुझ बनाय ॥

उदा०-(दो०) गजशुण्डनपरकेहरीतेहिपरगिरियुगजान। ता ऊपर गङ्गा बहैं तापर इन्दु बखान ॥

टी०। इहां जँघा कटि कुच मोती माल मुख ये सब उपमेय हैं। रूपकहै पै केवल उपमान ते रूपकातिशयोक्ति है ॥

(स०) प्यारे चलौ बन कुंजनमें तहँ ख्याल लखौ यह देखिये सोऊ। कंजनि मंजन पै कदली कदली पर मंडित केहरि कोऊ ॥ केहरि पै कलकोक कलोलत कोक पै हेमलता युग जोऊ। हेमलतापर चन्द्र विराजत चन्द्र पै खंजन खेलत दोऊ ॥

टी०। यहांभी विषयी वर्णन बिषे विषयको बोध है याते रूपकातिशयोक्ति है ॥

(स०) ह्वै दधि ह्वै द्रुमलागे द्रुमै फलतापरएकसोचांदनीमा-

ख्यो। बैठि भुजंग चुनै तेहि ठौर सो कीकिलकीर तहां पग धाख्यो ॥ भावसो भव्य कहै कवि केशव पण्डित होय करै ढिग न्याख्यो। नारँगी बिम्ब अनार औ श्रीफल एकहि वृक्ष लगे फल चाख्यो ॥

(क०) बैठी ती निकुञ्जन मे राधिका सखीन संग आवन भयो है तहां कान्हर प्रवीनाको। देवकीनँदन कहै इन्द्रबधू ह्वैकै रही होत न शबद कहूं नूपुर नगीना को ॥ डोलत न चक्रवाक बोलत न कोकिला है छाय रह्यो राग रँग आनँद नवीनाको। कंज घर घेरा पख्यो चन्द पर डेरापख्यो ऊपर बसेरा पख्यो चौबिस महीनाको ॥

टी०। इन्द्रवधू छुयते समिटै है तैसेही सिमिटि गई। चक्रवाक कुच। कोकिला कंठ। कंज घर घेरा अर्थात् नेत्र मूंदिगये चन्द मुखपर दुशाला ओढ़ि लियो नवोढ़ा नायिका है ॥

(स०) देव पुरैनिके पात निचान सोहैं युग चक्र शचान गहेरी। चीते के चंगुल में परिकै करछायल घायल ह्वै निबहेरी ॥ मींजके मंजुदली कदली लरि केहरि कुंजर लंजरहेरी। हेरी शिकार अहेरी मनो ब्रजराज अहेरी ह्वै आज रहेरी ॥

(क०) जानै कौन कहा भयो सुन्दर सबल श्याम टूट्यो गुन धनुष तुणीर तीर झरिगो। हालत न चंपलता डोलनि समीरन की वानी कल कोकिल कलित कंठ परिगो ॥ छोटे छोटे छौना कल हंसनके नीके नीके तिनके शबद ते श्रवण मेरो भरिगो। नील कंज मुद्रित निहारि विद्यमान भान सद्य मकरन्दहि मलिन्द पान करिगो ॥

टी०। भौंहैं सूधी नहीं हैं गुनटूटे धनुष के समान हैं तर्कसते तीर झारिगये कहे आँखकी बरौनी देखि नहीं पड़तीं आंखैं मूंदे है। नायिका हँसती नहीं। श्वास समीरभी नहीं जान पड़ती। बोलतीभी नहीं। हंसनकी चाल नहीं अथवा डोले नहीं। नील कंज मुद्रित कहे नेत्र मूंदे हैं भान विद्यमान अर्थात् दिन में। मकरंद रस मलिंद पूतरी पान कियो। दिनमें आंखी मूंदि ध्यान लगायो॥

(क०) कूजत शिखण्डी है कलिन्दनन्दनी के तीर वा कदम्ब खण्डन कदम्बन बिहरिकै। ताके तरे कौतुक है अद्भुत कृष्ण लाल रावरे चलौहो तो देखावों मैं द-वरिकै॥ ठाढ़ी हेमलतिका पै नागिनि कुटिल कारी पूछि छविछोर बेर बीछिन बगरिकै। कंज केलि केहरि सकूप गिरि कंबुकीर कैवर कलानिधि सो फनसों पकरिकै॥

अथ अपह्नुति ल०॥

(दो०) औरेही गुन और में जहां देत ठहराय।
सापह्नुति ताको कहैं जे प्रवीन कविराय॥
उदा०-- स्रवत सुधाकरमें सुधा वृथा कहत सबलोग।
प्यारीके अधरान में नितप्रति पावत भोग॥
भले सिगरे कहतहैं बनमें जीवनमूरि।
मैं देखी पिय भावती करति व्यथा सबदूरि॥

(क०) तैसी चल चाहन चलति उतसाहन सों जैसे विधि वाहन विराजत बिजैठोहै। तैसो भृकुटी को ठाट तैसोई दिपै ललाट तैसोई बिलोकिबेको पीको प्राण पैठोहै॥ तैसिये तरुणताई नीलकंठ आई उर शैशव म-हाई ताते फिरै ऐंठो ऐंठोहै। नाहीं लट भाल परे छूटी

गोरे गालपर मानो रूप मालपर व्याल ऐंठि बैठो है ॥
टी० । यहां सापह्नुति उक्त विषयाहै ।

अथ भेदकातिशयोक्ति ल० ॥

(दो०) जहँ औरै औरै पदन वर्णन जहां दिखाय ।
भेदकातिशायोक्ति तहँ कहत सकल कविराय ॥
उदा०— औरै चलनि चितौनिहै औरै मृदुमुसकानि ।
औरै गति मति औरहै प्यारी सुखकी खानि ॥
वह केशवजी की कहत ठौर कुठौर लखैन ।
छिनऔरै छिनऔर से ये छविछाके नैन ॥
(क०) औरैभांति कुञ्जन में गुञ्जरत भौंर भीर औरै डौर झौरन में बौरन को ह्वै गयो । कहै पद्माकर सु औरैभांति गलियान छलिया छबीलो छैल औरै छवि ह्वैगयो ॥ औरैभांति विहँग समाज में अवाज होत ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गयो । औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग औरै तन औरै मन औरै वन ह्वैगयो॥
(दो०) सुरति दुराये दुरतनहिं प्रकट करति रतिरूप ।
छुटे पीक औरै उठी लाली ओंठ अनूप ॥
द्वै दिन ते औरै भये हैं रसिकन के भूप ।
सिंह नाग कैसी लई प्रीतम रीति अनूप ॥
टी० । विरोध करिकै व्यङ्ग है । धीरा नायिका हैं ।

अथ सम्बन्धातिशयोक्ति ल० ॥

(दो०) जहँ अयोगमें योगको वरणत सब कविलोग ।
सम्बन्धातिशयोक्ति तहँ है कविताके योग ॥
उदा०—अति मतङ्ग महराजके उन्नत अमित दुरद्द ।
सुरपुर ते सुरवृक्षकी डारत डार भुहद्द ॥

(दो०) घुमरत घने निशान शिर आसमान फहरात।
फफकिफांदि हयफेन तब रविपर छिरकतजात॥
महरानी. रानी इते इन्द्रानी इत ऐन।
निजनिज सौधन पै चढ़े बातैं करत सचैन॥

(क०) ऊंचे ह्वै पहूँचे वा दरेशा जाय बादर लौं चढ़त फरश बांसलागे जे उमान के। नीचे डोरिताने कसे ऊपरते ऐसे लसे जैसे चढ़ी चंगै कर बलबेप्रमान के॥ कोटिन की किम्मति कनातन में देखियत देखिमन मोहै धनपति मघवान के। शोभा के निकेत सुख हेत लाल पीतसेत मूँदैंदीप जम्बू तम्बू सजन सुजानके॥

(दो०) छाले परिबेके डरनि सकत न हाथ छुवाय।
झझकत हिये गुलाब के झवाझवावत पाय॥

टी०। सखी को कथन नायक से सुकुमारता देखावै है। अयोगमें योग याते सम्बंधातिशयोक्ति अलंकार है॥

(क०) चींटीकी चलावै को मसाके मुखआयजात श्वास को पवनलागे कोसन भगतहै। ऐनक लगाये मरू २ कै निहारे जात कन परमान की समानता सजत है॥ बेनी कविकहै और कहाँलौं बखान करौं मेरे जान ब्रह्मको विचारिबो सुगतहै। ऐसे आँब भेजे दयाराममन मोदकरि जाके आगे सरसों सुमेरु सों लगतहै॥

चरन धरैना भूमि विहरै जहाँई तहां फूलेफूले फूलन बिछायो परयंकहै। भारके डरन सुकुमार चारु अंगन में करत न अंगराग कुंकुमको पंकहै॥ कहै मतिराम देखि बात ऐन बीचआवै, आतप मलिन होत बदन मयंकहै।

कैसे यह बाललाल बाहर विजन आये बिजन बयारि लागे लचकत लंक है॥

टी०। व्यजन बयारि अयोगता को योग ठहरायो याते सम्बंधातिशयोक्ति। रूपगर्विता नायिका है॥

अथ अतिशयोक्ति दूजी॥

(दो०) अतिशयोक्ति दूजी वहै योग अयोग बखान।
तो कर आगे कल्पतरु क्यों पावत सनमान॥
नारि नवोढ़ा हाँ करै दिय देखाय सब अंग।
कुचन कंचुकी में रहैं याके उरज उतंग॥

टी०। नवोढ़ा स्त्री को नाहीं करनो योगता में हाँ करनो अयोग ठहरायो कुचनको कंचुकी में रहनो योगताको न रहनो अयोग ठहरायो याते अतिशयोक्ति दूसरो भेद है॥

(दो०) भो व्रजमें जैबो कठिन सुनियत नन्दकुमार।
गोपिन के अँशुवान को बाढ़्यो समुद्र अपार॥

(क०) एकहुती खीन अब एतेपर एतो मानभई अति दूबरी बिरह ज्वाल जरती। पासधरी चन्दन सुवासहीते बाढ़ो बोझ अंग लगो होतो तौ उसासो ना उसरती॥ कंचनकी रेखरही आभा अवशेख सो नौ देखही बनत पै न कहत बनै रती। ल्यावती गोविन्द अरविन्द की कलीमें राखि जोन मकरन्द बीच बूड़िबेको डरती॥

टी०। इहाँ अरविन्दकी कली में राखनो अयोग तामें योग, मकरन्द में डूबना अयोग तामें योग ठहरायो याते पहिलो भेद संबंधातिशयोक्ति है॥

(क०) छपत छबीले छबिपीकन सदी चरम लम्पट निपट प्रीति कपट दूरै परत। मगभय मध्य अंग दुलत खुलत

शीश मृदुल परनै न रु भरति छते परत॥ देव मधुकर मुकटूकत मधूकधोखे माधवी मधुर मधुजाल चलुरेपरत। दुपहर जैसे जलरुह परसत इहां मुहपर झाईंपरे पुहुप झरेपरत॥

टी०। इहां मुहपर झाईं परनो घोसता में फूल झरनो अयोग है बात असि शयोक्ति है॥

अथ अक्रमातिशयोक्ति ल०॥

(दो०) कारण कारज क्रमविना होत साथही एक।
अक्रमातिशयोक्तिहूँ सुकविन कियो विवेक॥

उदा०—रामबान धनुमें लगत रावण के सब अंग।
प्रविशत भयो निषंग में बान प्रान तेहि संग॥

टी०। इहाँ देवरति भाव ध्वनि है। धनु अंगको क्रम नहीं निषंग में बाण और प्राण प्रभु ज्योति में साथे समानो इहां भी क्रम नहीं॥

(दो०) ललित लुनाई लाल वह बाल महाछविरंग।
तन मन धन हरिलेति है लखत एकही संग॥

टी०। इहां तन इत्यादि क्रम नहीं याते क्रमातिशयोक्ति है। गणिका नायिका है। सखी की उक्ति है॥

(दो०) इतते आई राधिका उतते कुँवर सुजान।
हुवो हिये यक सँगगड़े नैन मैनके बान॥

इहां भी वही भाव है॥

अथ चपलातिशयोक्ति ल०॥

(दो०) सो चपला तिशयोक्ति है होत नामहीं काज।
कङ्कणही में मुद्रिका पीव गमन सुनि आज॥

प्रवत्स्यत प्रेयसी नायिका है॥

(दो०) खान पान सुखभोगकरि नहीं रोग को हेत।
बोलत पीय पपीहके अँशुत्रा क्यों भरिलेत॥

टी०।प्रिय कहते आँशू भरना हेतके नामहीं कार्य भयो।विर-हिनी प्रोषित पतिका नायिका है॥

(क०) कोककी कलानि सों कलित रति मन्दिर में बैठे पियप्यारी दोऊ अति सुखसाजते। डहडहे फूलमके गजरा गरेमें तैसे महमहे मन्दिर सुगन्धन के साजते॥ ताही समै उन्नत उरोजन के गहतही बेनीकवि कहत नवाये नैन लाजते। बोलिउठी व्याकुल रह्योन मन मूठी कर देखिकै अँगूठी नई रूठी व्रजराजते॥

टी०।इहां हेत देखि नामहीं कार्यभयो कहूं सुनिकै होय है दूनौ प्रकार चपलातिशयोक्ति इहां संयोग शृंगार धीरा नायिका। रस अंग है तहाँ विषाद संचारीते रसवत अलंकार है॥

(दो०) सुनत लाल आगमन को फूलिगये सबअंग।
कंकनकर कुचकंचुकी भये तुरन्त अभंग॥

आगत पतिका नायिका। हर्ष संचारी है॥

अथ अत्यन्तातिशयोक्ति ल०॥

(दो०) अत्यन्तातिशयोक्ति तहँ पूर्व पराक्रम नाहिं।
बानन पहुँचै अंगलौ अरि आगे गिरिजाहिं॥
कारज पहिले होत है कारन पीछे जान।
अत्यन्तातिशयोक्ति तहँ सुकविन कियोबखान॥

उदा०—मेरे तौ महराज की यहै बानि है नित्त।
पहिलेही बकसत द्विरद पीछे सुनत कवित्त॥
को व्रजमें बसिहै कहो कौन निबैहै नीति।
पहिले लगत कलंकहै पीछे होत सुप्रीति॥

टी०। इनमें पूर्व परक्रम नहीं है पहिले कलंक लगना पीछे प्रीति होना उढ़ा नायिका है अर्थी व्यंजना है॥

अथ तुल्ययोग्यता ल०॥

(दो०) वर्णि वर्णि को धर्म यक तुल्ययोग्यता जानि।
कहुँ अवर्णि आवर्णि को प्रथम भेद यह मानि॥

उदा०—कोक कुंभ नहिं लहत सखि शोभाउरज उतंग।
बैन नैन बाँके भये प्रकटत योबनअंग॥

टी०। इहां बैन नैन में बंकता एकधर्म ते तुल्य योग्यता है॥

(क०) आजुहौं गई ती शम्भु न्योते नँद गाउँ ब्रज साँसति बड़ी है रूपवती बनितानकी। घेरि घेरि तियन तमाशो करि मोहिं लख्यो गहि गहि गुलुफ लोनाई तरवानकी॥ एक कल बोलि बोलि औरन दिखावै रीझि रीझि सुघराई अरुणाई मेरेपानकी। घूंघुट उघारि मुख लखि लखिरहैं एकै एकै लगी नयन बड़ाई अँखियानकी॥

टी०। इहां सब अंगन में सुघराई को एक धर्म ते वर्णि वर्णि की तुल्ययोग्यता रूप गर्विता नायिका है॥

(दो०) कोऊ काटै क्रोध करि कैसी चौंधरिनेह।
वेधत वृक्ष बबूरको तऊ दुहुनकी देह॥
राम रावरे को भजत अरु विरुद्ध जिन कीन।
तिन सबको रघुनाथ सो आप अमर करिदीन॥

टी०। शत्रु मित्र में एकवृत्ति है ताते तुल्ययोग्यता है॥

(क०) पर करपरै याते पाती तौन दीन्ही लाल कीन्ही मनुहारिसी सभामें कतभाषिये। वानी यह दूती की जेठानी कान परी जानि शोचि रही ऊतरु उचित कौन आखिये॥ सेनापति याते परवीन बोली बीनजिमि

दुहुनकी शंकसव दूरि करि नाखिये १ पाती २ कहै को-
ऊ ल्यावै जो कहूकी पाती दैके शिरपाउँ तौ हरामैं बाँत्रि
राखिये ॥

जिमीकी जमाकी जोरवानकी जमैयतकी यशकी जवा-
हिरकी संचित भरोकरै। नेकीकी बदीकी नीतिन्यावकी
सलाहिनकी बैरीकी हितूकी बात मनमें धरोकरै ॥ कांय-
रकी कूरकी सुबुद्धी औकुबुद्धिनकी प्रीति पहिंचानि जानि
दुर्जन डरो करै। हयगय शस्त्रकी सिपाहकी मुसाद्दिनकी
येतनकी राजा लोग पारिख करोकरै ॥

टी०। पारिख करना एक धर्म। शत्रु मित्र हित अहित याते
तुल्ययोग्यता को दूसरोभेद है ॥

अथ दीपक लक्षण ॥

(दो०) वर्णि वस्तु आवर्णि सो धर्म एकही गाय।
दीपकताको कहतहैं सुकविनके समुदाय ॥
उदा०— करण दान सोहत सदा अर्जुन युद्ध गँभीर।
चपलाई नैनन लसै कठिनाई कुचपीन ॥
तिय सोहत पियनेहसों दीपकहू सों गेह।
घनते सोहत वीजुरी योबनसों तियदेह ॥
ये बनसे खुश रहतहैं मोर मीन मृगजान।
फेरेते सुधरत लखे घोड़ा रोटी पान ॥

टी०। इहां बन जल बन मेघ बन कानन सब में खुशरहनो
बर्णि आवर्णि को एकधर्मते दीपक। फेरेते रोटी घोड़ा पान
सुधरतहैं ॥

अथ दीपकावृत्ति लक्षण ॥

(दो०) पदकी आवृति होय जहँ तहाँ पदावृतिजान।

जहाँ अर्थकी पाइये अर्थावृति पहिचान ॥
पद अरु अर्थ दुहूनकी आवृति तीजी लेखि।
त्रिबिधि दीपका वृत्तिसो ग्रंथन मतसों देखि ॥
उदा०– सरसत समय सुहागरी सरसत समय बसन्त।
बरसत रस बरसत अगिनि ये पलास नहिंकंत ॥
टी०।इहां पदकी आवृतिते पहिलो भेद छे का पहुतिकोभावहै ॥
(दो०) लाग्यो सावन मासरी सावन गावन देखु।
आवन आवन ह्वैरह्यो सजनी सजनी भेखु ॥
•इस तरह से भीपदा वृति जानिये ॥

(क०) गये जाके वसन पलटि आये वसन सु मेरे कछु वसन हँसन और लागे हौ। अंग अलसौहैं सौहैं साहब सुजान सौहैं गहे मुरछौहैं निशिजाके सँग जागे हौ ॥ परसो ये पाये गहबर सोये पाये जाय दरसो सो प्राणप्यारी जाके उर लागे हौ। काहू बनिताके हौ सु काहू बनिताकेहौ सुकाहू बनिता के बनिता के प्रेमपागेहौ ॥

रूसिये तो तब जब नाहकहूं चूकै एतो नाहकहूं जब तब ऐसो हठ ठानती। प्यारो ब्रजराज बात कहत अ-धीनबात कहत अधीन सो कहा धौं उरआनती ॥ जा-नती करीहै ते वै कछु वैन जानती हैं जानती कहावती पै कछु वैन जानती। मेह उनये हैं देखो मान में नये हैं लाल पगन नये हैं पैन ये हैं तऊ मानती ॥

धात शिलादारु निरधार प्रतिमा को सार सोनकरता-रहैं विचार बीच गेहरे। राख दीख अंतर न जामें कछु अन्तर है जीभको निरन्तर जपावत हरेहरे ॥ अंजन वि-मलसेनापतिमन रंजनहै लखिले निरंजन परमपद मेहरे।

करु न सँदेह रे वही में चित देहरे कहा है बिच देहरे कहा हैबिचदेहरे ॥

टी० । यहांपद की आवृत्ति है इससे पदावृत्तिजानिये ॥

अथ अर्था वृत्ति ॥

उदा.-(दो.)सरसरोजविकसनलगेफूलतसबदिशिफूल।
पेखु पीय अभिराम तन देखु नयनछवि तूल ॥

टी० । इहां विकसना फूलना और पेखना देखना एकही अर्थ है । सखी वचन कामोद्दीपन समै है । नायक ते मिलावनो है समय करि व्यंग्यजानिये ॥

(क०) कैकै मनुहारि हारी कैकै त्यों उपायभारी जियते न टारी रिसप्यारी सब दिनमें । बैठीभरि रोसहिय नायकको दोसधरि सोरुजोस बढ़्यो अति हियरा नलिन में ॥ आये उठिलाल तब बालके मनाइबे को देखत रसाल रूपदीठिदै सखिनमें । तजी मुख मौन भजीमनकी मरोर दौर मिटो मान मानि नीको छूटोछोह छिनमें ॥

टी० । इहां मिटनो छूटनो एकही अर्थ है याते अर्थावृत्तिहै-मानवती नायिका है ॥

अथ पदार्थावृत्ति तृतीय भेद ॥

उदा.-(दो०)निरखिनिकाईरूपकी बलितुमलखीनजाय।
हरषिरही हौ छबिछकी हरषि रहौगे पाय ॥
लाल लोनाई राधि के देखत बनै निहरि ।
पैठत तन में लाज अरु पैठत हिये मुरारि ॥

इन दोनों दोहन में पद और अर्थकी आवृत्तिहै ॥

(क०) चातुरी ते चित्र औ विचित्र घरसाजियतु चातुरी सों आपसों सवाँरे सब गातुरी । चातुरी ते नर पशु

पक्षी वश कीजियतु चातुरी ते पानी औ पहार धँसि जा-
तुरी ॥ चातुरी ते चहूं कोदचक्रै रिझाइयतु चातुरी ते
कीजै शतरंजहू को मातुरी। देखिये बिचारि नर आँखिन
निहारि देखौ एक ओर चारौ वेद एकओर चातुरी ॥

धाई खोरि खोरि ते बधाई पियआगम की सुने कोरि
कोरि सुख भामिनी भरति है। मोरि मोरि वदन निहारत
विहारभूमि घोरि घोरि आनँद घरीसी उघरति है ॥ देव
करजोरिजोरि बदतसुरन लघु लोगन के लोरि लोरि
पायँनपरति है। तोरि तोरि माल पूरे मोतिन की चौकहि
निछावरिको छोरि छोरि भूषण धरति है ॥

टी०। इसरीति से भी पदार्थ की आवृत्ति है। आगमिष्यति
पतिका नायिका है ॥

अथ प्रतिवस्तूपमा ल० ॥

(दो०) वाक्यन द्वै समता जहां वर्ण्यावर्णि बखान।
प्रति वस्तूपम ताहि गनि जुदे जुदे पदजान ॥

उदा०-(क०) शंकरको ध्याय सरस्वति को मनाय
सीय सखहूको पायमति अति सरसायकै। कहै मतिराम
छत्रसाल नंद भावसिंह तब को सकत तेरे गुणनको गाय
कै ॥ औरन के औगुन निगुन कविजनसब होतहैं सुखद
तेरी कीरति को गायकै। खायकै अँगार आँच औटिकै
चकोर गण होतहैं मुदित चंद चांदनी को पायकै ॥

टी०। इहां कविजन चकोर कीरति चांदनी दूनौ वाक्यन की
ऐक्ता करिकै प्रतिवस्तूपमालंकार है ॥

(दो०) सोहत शूरप्रतापसों लसत चापसों शूर।
विषडर सांपन सेइये तजिये बैनन कूर ॥

अथ दृष्टान्तालंकार ल० ॥

(दो०) अलंकार दृष्टान्तसो लक्षण नाम प्रमान।
कांतिमान शशिही भन्यो तो हूं कीरतिमान ॥
जहां बिंब प्रति बिंब को धर्म सुखद दरशात।
कहन बस्तु दृष्टान्त सो कविता वह विख्यात ॥

उदा०– तेरी ये तन ज्योतिते जगमगातहै गेह।
बिजुरीही के योगते नीको लागत मेह ॥

टी०। ज्योति गेह विजुरी मेह बिंबप्रति बिंब ते दृष्टान्तालंकारहै ॥

(स०) जानतती अपने नहिं होतपराये पिया यह वेदन गाई। जीपर हेलिकै प्रीति करी गुरलोगन में कुल कानि गवाँई ॥ ठाकुर तेन भये अपने अब कौन को दोष लगाइये माई। दूधकी माखी उजागर वीर सो हाथमें आँखिन देखतखाई ॥

टी०। परकीया नायिका पराये पियकी प्रीति दूधकी माखी बिंबप्रतिबिंब ते दृष्टान्तालंकारहै ॥

(क०) मानसर छाँड़ि हंस कूपन करतकेलि मोती पहिरत कहुँ देखी तिय भीलके। चन्दन के व्याल कहूँ लखिये बबूरन पै कंचन की घुँघुरू पगन पर चीलके ॥ मणि परखतकहुँ देखे मरकटहाथ गणिका न देखी चाल चलत असीलके। चतुर उदार कहूँ देखेहैं कृपिन संग अलिबेल मत कहूँ विपिन करीलके ॥

(स०) चहुँओर निहारिकै नैनन सों औ भलो बुरो ब्योंत विचारिबेहै। मनमोहन सों दिन द्वै कहि में इतनो नहिं पाउँ पसारिबेहै ॥ समुझो समुझाये हितूनहूँ के

मदनेशन अंग उघारिबेहै । समयो सुखमानि ये ऐसो भटू बहती नदी पायँ पखारिबेहै ॥

ऊधोजी भाग हमारे लटे उनकी तौ घरी सुघरी उघरीहै । बाँह हमारेहि काँधते ऐंचिकै कूबरी कांधपै जाय धरीहै ॥ ठाकुर यों कहनावति औरकी साँचहि आजही जानिपरीहै । मारै चिरीको चिरी कह वीरपै मीर शिकारी की कारीगरीहै ॥

टी० । इहां चिरी कुबिजा गोपी । कृष्ण बहेलियाको बिंब प्रतिबिंब वर्ण्या वर्णिते दृष्टान्तालंकार है ॥

(दो०) रह्यो ऐंचि अन्तनलह्यो अवधि दुशासनचीर ।
आली बाढ़त विरह ज्यों पंचाली को चीर ॥

टी० । अवधि दुश्शासन विरह पंचाली को चीर इहां भी वही भाव है । विरहिनी नायिका है ॥

(स०) ऐहै न फेरिगई जो निशा तन योवन है घन की परछाहीं । त्यों पदमाकर क्यों न मिलै उठियों निबहै गो न नेह सदाहीं ॥ कौन सयान जो कान्ह सुजान सों ठानि गुमान रही मनमाहीं । एकहि कञ्जकली न खिली तो कहो कहुँ भौंरको ठौर है नाहीं ॥

टी० । कंजकली नायिका भ्रमर नायक बिंब प्रतिबिंब ते दृष्टान्तालंकार । मानिनी नायिका । मध्यमा दूती है ॥

(दो०) सतकवि के आगे कहा क्रूरकरै गलमार ।
जहां सिंह नाहिंन तहां फेकरत फिरत सियार ॥

टी० । इहां सत कवि सिंह क्रूर सियार इनको समान धर्म नहीं सो कह्यो परन्तु बिंब प्रतिबिंब ते दृष्टान्तालंकार है ॥

अथ निदर्शनालंकार ल० ॥

(दो०) सदृश वस्तु आरोपता वाक्यारथ समदोय ।
जो सोजत सम्बन्धकरि कहै निदर्शन सोय ॥
दुहूँ वाक्यकी ऐक्यता होय निदर्शन बन्ध ।
मीठे बचन उदार के सुबरण माहि सुगन्ध ॥

(दो०) जो विधुमें बर विमलता शुचिशोभा अधिकांति ।
सो प्यारी के वदन में सुन्दरता सब भांति ॥

(स०) जौन उदारताथी श्रुतिमें सोई परिपूर लसै कर सुन्दर । जो करुणा करुणाकर में परछांह सी सो तुम्हरे उर भीतर ॥ जो परस्वारथ पारथ में सो यथारथ आपहु चित्तधरे बर । सम्पति जौन कुबेर के भौन में वन्दि सो प्रागनरायन के घर ॥

(क०) सुरन समाजसुर सदन में बैठी जाकी धरै अभिलाख लाख मेटि चित चैनको । जाहि लहि जन्तु निज आतम को तत्त्वलहि करि भव अंतल है सन्तपद ऐनको ॥ ऐसी नरदेहपाय विषय सों नेहछाय चितहू न कीन्ही हाय रामनाम लैनको । काठकाजकाढ़्यो सुतौ सुर तरु आंगन सों कौड़ीके बदल बेंच्यों चिन्तामणिरैनको ॥

टी० । इहां शांतरस निर्वेद स्थायी निर्वेद संचारी है ॥

(प्रश्न) कोई कहै कि स्थायी निर्वेद संचारी कैसे हैसके ?

(उ०) जबतक मनमें न ठहरै तबतक संचारी है और जब चित्त में ठहरि जाय कि यह संसार मिथ्या है तब स्थायी जानिये वाक्यार्थ ते पहिली निदर्शना है ॥

अथ द्वितीयनिदर्शना ॥

(दो०) औरे को गुन धर्म जहँ औरै देत देखाय ।

तहँ दूसरी निदर्शना कहत सुकवि समुदाय ॥
औरठौर के धर्मको और ठौर आरोप।
विद्रुमकी ये धरत हैं अधर ललाई ओप ॥
अनिमिष ये निशि दिन रहैं पहैं लहैं सुखरूप।
प्यारी के धारण करैं चपचकोर को रूप ॥
प्रागनरायनसी लसी प्रागनरायन रीति।
मेटि दीनकोपीन अघ करतप्रीति गहिनीति ॥

(स०) मेटिकै चैनकरै दिन रैन जो चाकरीराज सदा सुखकारी। ताको न चेत धरै गुनको भये नेक सो दोष निकासत भारी ॥ लैहै कहा हम छाँड़ि हहा प्रभुहो जो महारिझवार बिहारी। रावरो संग कहै कविगंग सो सिंहको संग भुजंग कियारी ॥

टी०। इहां दोनों वाक्य निदर्शना हैं। अधीरा नायिका नायकसे कठोर वचन कहती है। कि तुमसे कोई क्या लेगा सिंह भुजंग कीसी तुम्हारी यारी है। सिंह बनमें सबके साथ रहता है पर हेत किसी से नहीं मानता। भुजंग हेती बैरी दोनों को डसै है तैसे तुम्हारो संग है सो हमने छोंड़ो ॥

अथ तीसरी निदर्शना ॥

(दो०) जहां क्रियासत असतकरि करत बोधता अर्थ।
तहां तृतीय निदर्शना भाषत सुकबि समर्थ ॥
आप अवस्थाते जहां औरन को उपदेश।
धर्यो ताहि नहिं छांड़िये कहत धरापिधर शेश ॥

सदर्थ निदर्शना ॥

उदा०-(दो०) सज्जनचलतसुचालताछांड़तनेकुनकानि।
यहै देखावत जगतको बानि सुहित पहिचानि ॥

चन्द उदित तारन सहित यहै देखावत सार ।
शोभा यह संसारमें पाले निज परिवार ॥
हरिमुख लखि लोचन सखी मुखमें करति बिनोद ।
प्रकट करै कुबलयन को चन्द उदै ते मोद ॥

टी० । इन सब दोहनमें सदर्थ निदर्शना है ॥

असदर्थनिदर्शना ॥

(दो०) मधुपति भृंगी हम तजी प्रकट परम करिप्रीति ।
प्रकट करत सब जगतको कटु कुटिलनकी रीति ॥
याचक जनु मांगत फिरत यहै जनावन हेत ।
दीजे नहिं कीन्हे बनै दशा हमारी चेत ॥
बांस चढ़े नटिनी कहै सुनौ सयाने लोय ।
हौं जु नटी नटिनी भई नटै सो नटिनी होय ॥
ज्यों ज्यों बढ़त बिभावरी त्यों त्यों बढ़त अनंत ।
ओक ओक सब लोक सुख कोक शोक हेमंत ॥

टी० । इन दोहन में सत असत दोनों की शिक्षा है अच्छा अच्छा है बुराबुरा है ॥

अथ षट्व्यतिरेक लक्षण ॥

(दो०) जहां करत उपमानते उपमे अधिक बखान ।
न्यून बहुरि सम तीनि ये छह विपरीत सुजान ॥
(गी.) उपमेयगतउतकरषअरु अपकरषजहँउपमानको ।
जहँ होतहै इन दुहुनको इत कथन सुकबि सुजानको ॥
कहुँ कथन होय न दुहुनको कहुँ एकही को जानिये ।
कहुँ शबदते कहुँ अरथते अक्षेपते कहुँ मानिये ॥

१—न्यूमानते उपमेय अधिक १ उपमेयते उपमान अधिक २ उपमानते उपमेय न्यून ३ उपमेयते उपमान न्यून ४ उपमानते उपमेय सम ५ उपमेयते उपमान सम ६ ॥

मिलिमिलिचारिचारिसुहोतबारहचारिबीशसलेखसों॥
सब भेदये व्यतिरेक के मन जानि लीजिय लेखसों॥

उपमानते उपमेय अधिक॥

उदा०-(दो०)राधेकोमुखचन्द्रसोंपैयकजान्योजाय।
यह निशिदिन जगमगतहै वह निशिही दरशाय॥
तियके बैन पियूष से कोऊ भाषत लोग।
पै ये मीठे दूरिते वै रसना के योग॥

(स०) वै धरे अंग भुजंग के भूषण येऊ भुजंग धरै कचकारे। वै धरे चन्द सवांरिकै भालमें येऊ नख-क्षत चन्द सवांरे॥ शम्भुकी औ कुचकी समता सो कवी-श्वर भेद इतोई बिचारे। शम्भु सकोपह्वै जारो मनोज उरोज मनोज जियावनहारे॥

अथ उपमेयते उपमान अधिक॥

(दो०) सखी कामसे श्याम को बरणत व्रज सब हेत।
पै यह सुख सब तियनको वह विरहिन दुखदेत॥
कहत सबै ये कमल से पर यक भेद लखाय।
ये सुबास युत पुष्परस इनमें नहीं देखाय॥
कहत सबै नर कमल से मो मत नैन पषान।
नतरुकइन प्रिय लगत कत उपजत विरहकृशान॥

टी०। उक्त दोहनमें उपमेय ते उपमान अधिकहै। जैसे नेत्रन मैं विरह की अग्निहै कमलमें नहीं है याते कमल अधिकहै॥

अथ न्यूनव्यतिरेक उदाहरण॥

(दो०) सखी सवांरी अङ्गना चपलासी दरशाति।
यह घनश्याम न अंग लगै वह घनसों लपटाति॥
अमल अरुण मृदुहैं दुऔ पै यक भेद लखाय

परयो कमलमें अलि अली परयोन पिय तुव पाय॥

टी० । यहां उपमेयमें न्यूनताहै याते उपमेय न्यून व्यतिरेकहै ॥

अथ उपमानन्यून ॥

(दो०) यह कमलासी तरुणि है इतो विचार विचारि ।
वह निकसी है बारि यह पंच रचित सुकुमारि ॥
कनकलता सी भामिनी पै यह जान्यो जाय ।
वह जड़है चेतन यहै नंदलाल लपटाय ॥

टी० । यहां सोने की लता जड़ है वह जड़ नहीं है याते उपमान न्यून व्यतिरेक है ॥

अथ उपमेय समव्यतिरेक ॥

(दो०) राधे बदन सरोज सों सम शुचि शोभा ऐन ।
नैन निहारे जात ये शरसे सोहत मैन ॥
हरि हिय कमलरु कमल सों भेद इतोई जान ।
यामें राधा बसति है वामें लक्ष्मी मान ॥

टी० । इन दोनों दोहनमें उपमेय के समान उपमान है याते सम व्यतिरेक है ॥

अथ उपमान समव्यतिरेक ॥

(दो०) बिंब अधर सम सुखदते दुओ एकते एक ।
ये कीरन सुख देतहैं वे नायक को नेक ॥
ये खंजन मृग मीनसे सम शोभा सरसाय ।
चमक झमक सुन्दर सकल भेद न जान्यो जाय॥
छनक छबीलो लाल वह जौलौं नहिं बतराय ।
ऊख मयूख पियूख की तऊ न प्यास बुझाय ॥

टी० । इन सब दोहनमें उपमानके समान उपमेय है याते उपमान सम व्यतिरेकहै ॥

अथ सहोक्ति अलंकार ॥

(दो०) जहां वस्तु द्वै संगही वर्णन कीन्हें होय ।
तहँ सहोक्ति सब कहत हैं परम पुराने लोय ॥

उदा०— (क०) धाये एक साथ नंदलाल औ गुलाल दोऊ दृगन भरे जू आनि आँनद मढ़ै नहीं। धोय धोयं हारी पदमाकर तिहारी सौंह अब तौ उपाय एको चित्तमें चढ़ै नहीं ॥ हाय दई कैसी करौं कहां जावैं कासौं कहौं कोऊ तौ बतावो जासों दरद बढ़ै नहीं। एरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आंखिनसों कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं ॥

चली मतिराम प्राण प्यारे के मिलन हेत नेसुक निहारिकै बिसारि काज घरको। पियरो बदन दुख हियरो समाय गयो कुंजनमें भयो न मिलाप गिरिधरको ॥ बिसरो बिलास औ बिलाय गयो हास छायो सुन्दरि के तनमें प्रताप पंचशरको। तीछन जोन्हाई भई ग्रीषमको घांम भयो भीषम पियूष भान भान दुपहरको ॥

टी०। जब नायक न मिलो तब ये बातें सब साथही भई याते सहोक्ति है। परकीया विप्रलब्धा नायिका है ॥

अथ विनोक्ति अलंकार ॥

(दो०) हैं बिनोक्ति द्वै प्रथमहीं हीन प्रसंग निहारि ।
द्वितिय प्रसंगहि छीन कछु शोभा लहत बिचारि ॥

प्रथम हीनप्रसंग को उदाहरण ॥

(दो०) सुभग सलोने सांवरे रसिक सिरोमणि आज ।
एक तिहारे नैन में धरत धीर नहिं लाज ॥

टी०। धीरा का वचन अथवा धृष्ट नायकते कहनूति है। इहा

लाज धीरता नहीं धरती यह हीन प्रसंग है प्रथम विनोक्तिहे ॥

(दो०) तरुणाई भाई रुचिर सखिन सांवरे अंग।
फीकोई लागत यहै बिन प्रिय प्रेम प्रसंग॥

टी०। नायक से प्रेम करु पहिबिना हीन है। यहां भी प्रथम विनोक्ति है ॥

(क०) गजमद गंजनहैं रंजन सरोजनके ओजन ये नायक चतुर चितहीके हैं। हंसन हरत न धरत शोभा नेकहु वे परत न कल मानसर मनहीके हैं॥ भूषण बसन साज आज ब्रजराज हेत मदनेश मुद मानि सुख सबहीके हैं। और तौ शिंगार चारु सोहत अनूप प्यारी जावक बिनाहीं ये तिहारे पग फीकेहैं ॥

अथ दूसरी विनोक्ति प्रसंग छीन शोभा अधिक लहनो उदाहरण॥

(दो०) सरस सुशील सुजान वह सकल कलान प्रवीन।
छलबल बिन नीके लगत ये पिय निपट नवीन॥
पहिरे भूषण अँग रचे सुन्दरता सरसाय।
जावक बिन नीके लगत प्यारी तेरे पांय॥

(स०) मीननकी मृगकी छवि छोरि लियो सो बटोरि रसै रस बोते। कंज कियो उपमान इन्हें खरी खंजनकी उपमा सब धोते॥ देखिये देखन योगहैं लाल निहालकरै मदनेशही छोते। प्यारी अनूपम वे दृग तौ बिन अंजनहीं मन रंजन होते॥

अथ समासोक्ति लक्षण॥

(दो०) जा प्रसंग में होतहै अरु प्रसंग को बोध।
समासोक्ति तहँ कहत हैं कविता जिनहिं प्रबोध॥

उदा०-मधुकर माते फिरत चहुँ इनको नहीं भरोस।
देखि समै कीजै उचित छोड़ि मालती रोस।
रजनी में सजनी रही मूँदि बदन मन मारि।
परसि मित्रकर कमलिनी प्रफुलित भई निहारि॥

टी०। सखी वचन। हे नायिके तू रात्रि में मुख मूंदि रही ये कमलिनी सौती दिनमें फूली हैं। बिन समै में इहां भी प्रसंग में अप्रसंग को बोध फुरयो याते समासोक्ति है॥

(दो०) नहिंपराग नहिं मधुरमधु नहिं विकास यहिकाल।
अली कलीही सों बँध्यो आगे कौन हवाल॥

(स०) चाउसों चारु उछाह भरे अतिलालसा लोभ चहूँ अधिकाते। रैनि पुरैनि बसैं कबहूँ कबहूँ लखि लीजिये होत प्रभाते॥ नाहक मानकरैं सिगरी मदनेश अनन्द फिरैं रँगराते। दोष कहाहै मलिन्दनको रसहेत जो मंजरी पै मड़राते॥

टी०। इहां मानिनी नायिका है पुरैनि भौंर प्रसंग में नायक नायिका को अप्रसंग फुरनो समासोक्ति है॥

सुनिकै धुनि चाह भई हिय में उहां जाय घनो सुख पावनोरी। उहां जाय जबै सुनिये उनकी कहूं तालकहूं सुरगावनोरी॥ कहिठाकुर कूर सहूर कितो उनसों नहिं नेह बढ़ावनोरी। भई भूल भटू भटकी सो वृथा लगो दूरिको बोल सुहावनोरी॥

टी०।इहां कवि की उक्ति अथवा ऊढ़ाकी अथवा गनिकाकी। औरसों सुननो प्रसंग में अपनो अप्रसंग फुरयो याते समासोक्ति है॥

अथ परिकर लक्षण॥

(दो०) अभिप्राय आशय सहित जहाँ विशेषण होय।

शशि बदनी यह नायिका ताप हरतिहै ओक॥

टी०। शशि तापको हरै है तौ यहो ताप काम हरैगी। शशि विशेषण अभिप्राय ताप हरनो आशय लिये ते परिकर है। सखी की उक्ति॥

को कृपाल शंकर सरिस धरे सुधाधर भाल।
जन मन तन की तापको दूरि करत तत्काल॥

टी०। इहां भी वही भावहै॥

(क०) द्योसबरसाइति केसकलसिंगारसाजि सोहस-रसिज नैनी रति निदरतिहैं। जाल जगमगत जवाहिर के आभरन चन्द मुख सुखमा चहूंघा पसरतिहैं॥ गोरी गौन हाई गरबीली भरी ऐंड़दार विविध प्रकार पूजि पा-यँन परतिहैं। घरकी रिसाती अनखाती हैं नगरकी पै कुल बाल बरकी न भाँवरै भरतिहैं॥

टी०। इहां वर विशेषण अभिप्राय को आशय लिये है याते परिकरहै। वाचक लुप्ता प्रतीप अभेद रूपक इन सबको संश्लिष्टहै। स्वकीया नायिका है दूसरे बरकी भाँवरै नहीं भरती। वर शब्द श्लेष है॥

(स०) बिन आदर पायकै बैठि ढिगै इनको मनदै मन लीजतुहै। अपमान औमान परेखो कहा पुनि नेकी बुरी सुनि लीजतुहै॥ कहि ठाकुर कामनिकासिबे के लिये कोटिन बार फिरीजतुहै। अपनी उरभी सुरझायबे को सबही की खुसामदि कीजतुहै॥

टी०। बोधक विशेषण अभिप्राय आशय सहितहै याते परिकरहै॥

पर स्वारथ देह को धारे फिरो पर जन्य यथारथ है

बरसौ। निधि नीर सुधा के समान करौ सबही विधि सज्जनता सरसौ॥ घन जीवन आनँद दायकहो कछु मेरिय पीर हिये परसौ। कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगनमो अँशुवांनको लै बरसौ॥

टी०। यहां भी वही भावहै॥

अथ परिकरांकुरलक्षण॥

(दो०) साभिप्राय विशेष जब परिकर अंकुर नाम।
सूधेहू पियके कहे नेक न मानति बाम॥

टी०। बाम टेढ़े को भी कहते हैं। तू सूधे पियके कहे नहीं मानै। बाम शब्द साभिप्राय विशेष है याते परिकरांकुर है। मानिनी नायिका है॥

वाल बेलि सूखी सुखद यहि रूखे रुख घाम।
फेरि डहडही कीजिये सुरस सींचि घनश्याम॥

टी०। नायक प्रति सखीका कथन। तुम सूखीको डहडही करौ चलौ। अभिसारिका है। घनश्याम पद साभिप्राय विशेष्यहै रस जल और ससुरस याते परिकरांकुर है॥

(स०) लै बलवीर अबीर की मूठि दई अलबेली लली दृगदूपर। त्यों बनमाली पै आली चलावत लाली गुलालकी च्वैरहि भूपर॥ लै पिचकारी बिहारी तहां अधिकारी करी व्रजगोप बधूपर। पीन पयोधर ते उचटी सो परी सब केशरि लाल के ऊपर॥

टी०। इहां बिहारी शब्द साभिप्राय विशेष्यहै याते परिकरांकुरहै॥

(स०) कबि वेनी नई उनई है घटा मोरवा बन बोलैं कुहूकनरीं। छहरै बिजुरी छिति मण्डलछ्वै लहरै मनमैन

भभूकनरी ॥ पहिरो चुनरी चुनिकै कुलही सँग भूलिये श्याम के भूकनरी । ऋतुपावस योंहीं बितावती हौ मरिहौ फिरि बावरी हूकनरी ॥

टी० । इसमें भी वही भावहै ॥

(स०) हैं धुरवा मुरवान कहूँ पुरवान कहूँ घर बीजन लागी । छत्र लगाय सखी करमें यहि कौतुक में मति छीजन लागी ॥ री बलिजात न जातकही सुनि सैयकहू न पतीजन लागी । ये घन श्याम अनोखे नये वृषभान सुता लखि भीजन लागी ॥

टी० । यहां घनश्याम शब्द साभिप्राय विशेष्यहै । घनश्याम भिजावने के कारनै हैं ॥

अथ श्लेषलक्षण+॥

(दो०) श्लेष अलंकृत अर्थ बहु एक शब्द में होत ।
होय न पूरण नेह बिन ऐसो बदन उदोत ॥

टी० । इहां नेह शब्द श्लेष । लक्षिता नायिका है ॥

उ.दो०—बारबार भाखति कहा राखति क्यों न छिपाय ।
नेह उजेरो जगकरै यह चित समुझ बनाय ॥

टी० । इहां नेह शब्द श्लेष है ॥

यह विनशत तन राखिये जगत अजोयश लेहु ।
जरी विषमज्वर ज्याइये आनि सुदर्शन देहु ॥

टी० । ज्वरको सुदर्शन चूर्ण और विरह ज्वर को सुन्दर दर्शन देहु ॥

(क०) नाहीं नाहीं करैं थोरो मांगे सब देनकहैं

+किसी २ ने प्राकृत १ अप्रकृत २ प्रकृताप्रकृत ३ ये तीनभांति के श्लेष कहे हैं ॥ भिन्नपद अभिन्नपद अभिन्न क्रिया अविरुद्ध क्रिया विरुद्धधर्म नियम विरोधी ये श्लेष के भेद हैं ॥

मकुन को देखिपट देत बार बारहैं। जिनके मिलत भरी प्रापति की घरी होति सदा सब जन मनभाये निरधारहैं॥ भोगी वै रहत विलसत अवनी के मध्य कन कन जोरे दान पाठ परिवारहैं। सैनापति बचन कि रचना विचारि देखो दाता अरु सूम दोऊकीन्हे एकसारहैं॥

टी०। इहां दाता अरु सूमको एकै अर्थहै याते श्लेष है॥

(स०) अबहीं वृषभान को मानबढ़यो अनमानहुँ सो नहिं याचहुँगी। कढ़ि लाड़िली देति देखाई नहीं सेवकाई विना किमि राँचहुँगी॥ बरसान है धीर धरो उरवापुरचा को स्वरूप सवाँचहुँगी। घनश्याम तुम्हें बिजुरी सों मिलाय मयूरिनि ह्वैकरि नाचहुँगी॥

टी०। इहां उत्तमा दूती। सखी वचन स्वतःसंभवी वस्तु ते श्लेषालंकार है॥

दारगली है भलीविधि सों बहु चाउरहैगो सुगन्ध भरोजू। देखि बराबरी रीझिरहोगे सुपापरी पूरी करी न डरोजू॥ है तरकारी सवाद भरी बनिगोरस सेवक भूख हरोजू। सोंधी सलोनी सुधासी रसीली सो कन्त इकन्त में भोग करोजू॥

टी०। इहां उत्तमादूती। श्लेष है॥

(क०) बिरह हुतासन बरत उर ताकोरहै बालमही पर परी भूखन गहतिहै सेवती कुसुमहूँते कोमल सकल अंग सूनसेजरतकाम केलिको करतिहै॥ प्राणप्रतिहेत गेह अंगन सुधारै जाके थरी है बरस तन मैन सरसति है। देखो चतुराई सेनापति कविताई की जु भोगिनीकी सरिको बियोगिनी लहति है॥

टी० इहां भोगिनी वियोगिनी दोनोंको एकही अर्थ करते श्लेष है॥

पै ये मलीधरी तन सुख सब गुनभरी नूतन अनूप मिहीरूप की निकाई है। आछी चुनियाई कैयों पेंचन सों पाई प्यारी ज्यों ज्यों मनभाई त्यों त्यों मूड़हि चढ़ाई है॥ पूरी गजगति बरदार है सरस अति उपमा सुमति सैना-पति मनभाई है। प्रीतिसों बँधै बनाय राखै छबि सिर-छाय काम कैसी पाग विधि कामिनी बनाई है॥

टी०। इहां कामिनी और पगड़ी को श्लेष है॥

भाजी भावती है महामोदकमही की शोभा पूरी रची दै करि लोनाई विधिलोईमें। विशद अचार माड़े बेसन के परकारे जगमगै ज्योति कड़ी सौरभ सुभोईमें॥ चा-उर सुवासेदार एहो कविरघुनाथ केशरि बरन सोहै चारु तासमोईमें। भूठन कहति बलि गई चलि देखौ आप जोई जोई चहौ सोई सोई है रसोईमें॥

टी०। यामें रसोई और नायिका को श्लेष है॥

अप्रस्तुतप्रशंस लक्षण॥

(दो०) जहँ प्रसंग के हेत कछु अप्रसंग ठहराय।
अप्रस्तुत परशंस सो पांचभाँति को गाय॥
एक कहत सारूप्य है अरु सामान्य विशेष।
कारण कारज भावकरि पांच भाँति को लेष॥

अथ सारूप्यनिबन्धना॥

उदा०—काँधे केशर बाँधिकै जो कीन्हो मृगराज।
कूकुर क्यों करिहै कहौ करिकुल कंपनगाज॥

टी०। इहां प्रस्तुत मूर्ख को पण्डित बनावना सो वह कैसे

उस पुरुषार्थ को करैगो ॥ इहाँ मूर्ख कूकुर की सारूप्यता इससे सारूप्यनिबंधना है ॥

अति अगाध अति ओथरो नदी कूप सरवाय।
सोताको सागर जहाँ जाकी प्यास बुझाय ॥

(स०) आदि मृजाद विचारे बिना शिर सौंपत भार बड़ो.अति तापै। गाडर ऊंट की सैंग करै यह बात कही सुनी जातिहै कापै॥ काग जो हंस सुभायन होय तौ कहे क कोई मरालन थापै। काम परे पछितात तेवै जे गयंद को भार धरैं गदहा पै॥

अथ सामान्य निबंधना ॥

उदा.(दो०) जेनहिं सुनत अयानवश हितकारिनकीबात।
शत्रुन देत अनंदधन विपति परे बिललात॥
करनहार करता करत काहु न दीजत दोष।
जो बोवै सो काटिहै कह अनंद कह रोष॥
धरै न मनमें शोच जो बैर प्रबलसों ठानि।
सोवत आगि लगायकै सदन मांझपटतानि॥

टी०। रुक्मिणी हरण में शिशुपाल से बैरकरि कृष्ण अशोचरहे तिनपर उक्तिबलदेव जी की। प्रबल सों बैरठानि ओ आगिलगाय घरमें पटतानि सोना। सामान्य निबंधना है॥

(स०) आपनो कोऊ भलो करै ताको सदा गुन माने रहै सब ठौरै। दासजू ह्वै जो सकै तौ करै बदलो उपकार कै आप करोरै॥ काज हितू के लगै तनप्रान के दान तें नेक नहीं मुख मोरै। या जगमें तिन्हें धन्यगनौ जे सुभाय पराये भलेकहँ दौरै॥

अथ विशेष निबंधना ॥

उदा०-(दो०) धरिकुरंगको अंकमें भो मयंकसकलंक।

भयो मृगाधिप केहरी मारत ताहि निशंक॥

टी०। इहां मृगको चन्द्रमाने अंकमें धास्यो तो कलंकित भयो केहरी मृगन को मारे है सो मृगाधिप बाजै है। कृष्ण पृति बलदेव जी का कथन है कि मृदुता में दोष है क्रूरता में गुन है रामने परशुराम पृति कह्यो है। कि (चौ०) सुनहुँ लषनकर हमपर रोषू। कतहुँ सुधाइहु ते बड़दोषू। टेढ़जानि शंकासब काहू। वक्र चन्द्रमा ग्रसैनराहू॥ ये सामान्य वचन ते विशेष निबंधना है॥

(स०) दासपरस्पर प्रेमलखो गुनछीर को नीर मिले सरसातु है। नीर बेंचावत आपनो मोल जहां जहँ जाय के छीर बिकातु है॥ पावक जारन छीर लगै तब नीर जरावत आपनो गातु है। नीरकिपीर निवारिबेकारन छीर घरी ही घरी उफनातु है॥

टी०। इहां भी जिसमित्र से कहे है सो पृस्तुत। नीर छीर अपृस्तुत कह्यो नीर छीर सामान्य वचन ते विशेष निबंधना है॥

अथ कारण निबंधना।

उदा-(दो०) लहिजलजातनकीप्रभा थलजलजातकसार
सुरतरु पल्लव कुसुमलै रचेपानि करतार॥

टी०। इहां पाणिवनाइबेमें सुरतरु पल्लव सार लियो जलजकी प्रभासकुची पल्लव बिनकारण में पाणि बड़ाई कार्य बड़ाई कारण निबंधना॥

(दो०) लीन्हो राधामुखरचन बिधिने सार तमाम।
तेहिमगहोय अकाशयह शशिमें दीखनश्याम॥

टी०। चन्द्रमा बिनकारण के वर्णनमें राधामुख कार्य की बड़ाई याते कारण निबंधना है॥

(कु०) तचयोमिहर मूस पावक मरीचिन में अहरन उदैगिरि कूट्यो तजि शंकदै। धोयो बारबार बलि

बारिनिधि बारि बीच बरक अनूप रूप हेम बिनपंक के ॥ घोरिकै सुधारस में अंबर में छानिबिधिनासों मौंजी देह द्युति कीर्नी वाकी अंकलैं। बिनी को पियाला चन्द मण्डल अखण्डल जो ताको मिसि पंकपीदे बैठो सो कलंक है ॥

टी०। इहां हेम वर्कको बर्णन ताको कार्य तहां कोऊ नायिका को असाधारण देहद्युति जताइबो कारण निबंधना है ॥

अथ कार्य निबंधना।

(दो०) लक्ष्मीको पानिप लियो जलद जलधिजलसंग।
ताहीकी बिजुरी भई चमचमात शरभंग ॥
तुवपद नख की द्युति कलुकगइ जल धोवनसाथ।
तिहिकन मिलिदधि मथन में चंदभयोहेनाथ ॥

टी०। ईश्वर प्रति हे नाथ तुम्हारे पदनखकी द्युति गंगाके साथ समुद्रमें गई ता छविको चन्द्रमा बन्यो। चन्द्रमाकार्य के बर्णनमें ईश्वर नखद्युतिकी अस्तुति निकसी याते कार्य निबंधना है ॥

अथ प्रस्तुतांकुर लक्षण ॥

(दो०) प्रस्तुत में प्रस्तुत फुरै प्रस्तुत अंकुरजानि।
प्रस्तुत अंकुरकहत त्यहि सुकबिनको मतमानि॥

उ०-(स०) गेंदा गहै गुलनार अनारन चारुता चंपक की नहिं हेरे। त्योंही कली विकसी रसरूप अनूप गुलाब के जात न नेरे ॥ सेवती सेहन क्यों मदनेश सुभौरजा और करै किन फेरे। पंकज पुंजन कुंजन में सुरहै कत मंजुल मालती घेरे ॥

टी०। इहां भौंर फूलादि प्रस्तुत में नायक नायिकाको वृत्तान्त प्रस्तुत फुर्यो याते प्रस्तुतांकुर है ॥

(दो०) रसिक रसीले तुमसदा पमै सुखद दरशात।

मधुप मालती तजत क्यों चंपकली फहरात ॥

(स०) जाहीजुहीके रँगे अनुराग पराग परागनमेंमड़-रातहो । गेंदा गहौ गुलनार अनार सँभारन नेकहु है छलेजातहौ ॥ चंपक चारु निहारि रहे मदनेश गुलाब लखेपछितातहो । हे मधुमाते मधुव्रत भौंर सुमालती छोड़ि कहां कित जातहो ॥

अथ पर्यायोक्ति लक्षण ॥

(दो०) पर्यायोक्ति प्रकार द्वै कछु रचना सों बात ।
मिसुकरि कारज साधिये जोहै चितै सोहात ॥

स्वरचना पूर्वका ॥

(स०) ज्योतिषी पीपरदेश गनौ जो समुद्रकी हाथ ये रेखविचारो। नेक दया करिनारी गहौ तुम वैद्य जो व्याधि वियोग निवारो ॥ व्याकुलता भ्रमता तनमें मदनेश जू गारुड़ी मंत्रनझारो। भावते भौनके भीतर में ह्यां विदेशी घरीक सो घाम निवारो ॥

टी०। स्वयं दूतिकानायिका है । इस नायिकामें गूढ़ोत्तर और मिस,से कार्य साधनभी होताहै । स्वतः संभवी वस्तुते अलंकार गूढ़ व्यंग्य लक्षणा मूलहै ॥

(क०) लेमैं तोहिं ल्याई तेरी ऐसी प्रीति पायकरि दूनौंकी उकुति ऐसी जुगुति नवीनाहै । देवकी नँदन कहै पारखी परखजानै नैनन मिलाये ते अनन्दरस भीना है ॥ ऐसे गोरे कारे मिले संगम मदन होत समुझै सयान पाये भेद परवीनाहै । देखतो सरोज नैनी सुन्दर सोहात कैसे सोनेकी अँगूठी पर साँवरो नगीना है ॥

टी० इहां संवाहिनी दूतीकी बचन रचनासों बात याते पर्यायोक्ति

प्रथमभेद बचन वैशिष्टतास्वतःसम्भवी वस्तुते अलंकारहै ॥

(स०) हारसवाँरि अनेकन फूलके आयलै मालिनि भौन भरे मैं। काहूको पीरोदियो उनकाहूको श्वेत दियो रघुनाथ अरे मैं ॥ नीरंजनीर कोलै करमें कह्यो राधे सुयों चतुराई धरे मैं। लीजिये हेत तिहारेहि लाईहौं या रँगको लगैनीको गरे मैं ॥

टी०। मालिनि दूतीकी बचन रचना है ॥

भोरहिन्योति गईती तुम्हें वह गोकुल गावँ कि ग्वालिनि.गोरी। आधिक रातिलौ बेनी प्रवीन कहाढिग राखिकरी बरजोरी॥आवे हँसीम्वहिं देखत लालन भाल में दीन्ह्यो महाउर घोरी। एते बड़े बृज मण्डल में न मिली कहुँ मांगेहुरंचक रोरी।

टी०। धीरा नायिकाको बचन नायकप्रति गूढ़व्यंग्य चिह्नकरि स्वतःसंभवी वस्तुते अलंकार है ॥

(क०) मेरे नैन अंजन तिहारे अधरनपर शोभा देखि गुमुर बढ़ावैं सब सखियाँ। मेरे अधरान में ललाई पीक लीक तैसी रावरे कपोलगोल नोखी लीक लखियाँ॥ कवि हरजन मेरे उरगुनमाल तेरेबिन गुनमाल रेखशेख देखकखियाँ। देखौ लै मुकुर देखौ कौनकी अधिकलाल मेरीलाल चूनरी तिहारीलाल अँखियाँ ॥

(स०) एकहिरंग रँगी यह कंचुकी पीत पटी सो सुगन्धन जागी। धोये न छूटत रंग बलाइल्यों नंदनह्वै रही कौतुक लागी ॥ चोवाकी ऐसी परी चिकनाई सखी मुसक्याय हिये अनुरागी। राधिका भाजिगई हँसि भीतर धोबिनिहूँ हँसिबाहेर भागी॥

टी०। धोबिनि दूतीकी वचनरचना ते पर्य्यायोक्ति है॥

फूलकि डाली लिये कविनन्दन कान्है नई दुलही जो बनाई। गाउँके नाते हमारी लगै ननदी ललिता कहिकै ढिगलाई॥ राधे लजी सो हँसी छवि देखि हँसी सजनी रस बात बनाई। मालिनिहै यह नंदकुमारकि क्यों सकुचौ ससुरारि ते आई॥

अथ दूसरीपर्य्यायोक्ति॥

(स०) कान्हहिं चेलीबनायकै शंभु गई वृषभानके भौन गोसायँनि। या सुनिकै जुरि आईं सबै गहि डारी सहेलिनि राधेके पायँनि॥ लाय लिलार विभूति कही अवहीं रचिहौं यहि हेत उपायनि। याहि इकंतलै मंत्र जपै जेहि होय बड़े व्रजकी ठकुरायनि॥

टी०। गोसाइँनि दूती की वचनरचनाहै। बहानेसे कार्य साधना॥

(क०) मानकीन्ह्यो माननी मनायो नेक मान्यो नाहिं मानही में सोयरही रोष चितआनि कै। दाबतही सखी पायँ एते पर प्यारो आय सैन कैदई उठाय लागे पग पानिकै। प्यारे को परस जानि जानतभई अजान तब उठि बोली बाल वाहि मिस ठानिकै। हारी हैरी सखी तू अकेलीहौं निहाल कवि आवो अब सोय रहैं दूनों पट तानिकै॥

टी०। मिसकरि कार्य्य साधना याते पर्य्यायोक्ति को द्वितीय भेद है॥

(स०) नोखे दुकूलन राखत देहमें ह्यां कबहूँ पग धोखे न धारिहौं। बेनीहरा झकझोरत तोरत छोरत बेनिहिं कैसे सुधारिहौं। छाती छिपै छवि अंचलही में

उनींदे दगंचल कैसे उघारि हौं। सोहैं न मानत मोहै लला हरिसोहैं दिया अँगिया न उतारिहौं ॥

टी०। इहां दियामिस कार्यसाध्यो वाक्य वैशिष्टता विश्रब्ध नवोढ़ाहै मध्याको भी भांवहै। स्वतः सम्भवीवस्तुते अलङ्कारहै ॥

(क०) प्राणपति प्यारेको लेवाय लई प्यारी पास तहां फुलवारी चारु सरस सुहाय यों। देवन सुकवि तहां देखत मयङ्कमुखी आदरसदाइ भाइ सादर बोलाय यों॥ आवो नेक वीर या उसीर के महल मध्य शीतल समीर बैठि सीकर सुखाय यों। इन्दीवर नैनन कलिन्दी में न-हाय आवो तौलौं नँदनंदनको बातन लगाय यों ॥

(क०) सघन घटानि छन ज्योतिकी छटानि बीचपिक उपटानि ज्योति जींगन जुईपरै। हारहिये हरित नदीन नद भरित झरीन झर भरित सुधरनि धुईपरै ॥ ऐसेमें किशोरी सोन झूलत हिंडोरे झुकि झूकन झकोरै फैल फूल न फुईपरै। कीजिये दरश ब्रजचंद नँदनंद प्यारे आजु मुखचन्दपर चूनरि चुईपरै ॥

चामीकर कमल ये अमल अनूपतेरे रूपको निधान नेकमोतन निहारिदे। कालिदास कहै नेक मेरी ओर हेरि हँसि माथेधरे मुकुट लकुट करडारिदे॥ कुवँर कन्हैया मुखचन्द की जुन्हैया चाहि लोचन चकोरन की प्यास निरवारिदे। मेरे कर मेंहदी लगीहै नँदलाल प्यारे लट उरझी है नेक बेसरि सुधारि दे ॥

टी०। बचन बिदग्धा नायिका। बेसरिके मिससे कार्य धा-सना बचन वैशिष्टता स्वतःसंभवी वस्तुते अलंकार है ॥

(स०) दीपक ज्योति मलीनी भई मणि भूषण ज्यो-

तिकि आतुरियाहै। दासजू कौल कली बिकसी नहिं मे-
री गई लगि आँगुरियाहै॥ सीरे लगें मुकताहल तेउ
कपूर कि धूरिनते धुरियाहै। पौढ़े रहो पटताने अबै नि-
शि बोलैनहीं चिरिया चुरिया है॥

(दो०) घनघेरो निशि में भयो अधिक अँधेरो आय।
राधे हरिको गेहलौ तू आवहि पहुँचाय॥

(स०) तूरत फूल कलीन नवीन गिस्यो मुँदरीको
कहूं नग मेरो। संगकि हारी हेराय गोपाल गई पछि-
ताय डेराय अँधेरो॥ सासति सासुकि जाय सकौं न अहो
छिन एक न गैयन फेरो। कुंजबिहारी तिहारी थलीयह
जात उज्यारी दया करिहेरो॥

टी०। इहां बचन विदग्धा नायिका मिससे कार्य साधेहै। स्वयं
दूतिका में भी यही अलंकार कहते हैं॥

(दो०) यों दलि मलियतु निर्दई दई कुसुम से गात।
करधरिदेखो धरधरा उरको अजों न जात॥
प्रीतम दृग मिहचन पिया पानिपरससुखपाय।
जानि पिछानि अजानलौं नेक न होत लखाय॥

टी०। यहां दोनों ठौर मिसकरि कार्य साध्यो॥

(क०) हौं तो निरदोषी दोष काहेको लगावै मोहिं
जैसी तोहिं भावै तैसी सौंहन करायले। त्रिवली त्रिबेनी
नाभि सरसों सुझाइदेखु सूझौ तौ निहाल मानकीन्हे
सो घटायले॥ कंचुकीकुटी में दुवो तपसी विराजमान
ताके शीश छ्वाय चोर शाह निपटायले। कोपकरि पावक
कपोल लाल गोलाकरि लाख लाख बेर मोसे जीभन
चटायले॥

टी०। मानिनी नायिका प्रति धृष्टनायकको कथन है दूसरी पर्यायोक्ति है ॥

अथ व्याजस्तुति लक्षण ॥

(दो०) निन्दा में स्तुति जहां व्याजस्तुति सो मानि।
अस्तुतिमें अस्तुतिकढ़े द्वितियभेदपहिंचानि ॥

निन्दास्तुतिको उदाहरण ॥

(क०) जाउ जनि प्रागै उहां योगजप जागे भैया मेरी कही आँखिन के आगे तोहिं आवैगी। कहै पदमाकर न काम ऐहै सरस्वती सांचहू कलिन्दी कान्ह करन नं पावैगी ॥ छोरिलैहै अम्बर दिगम्बर कै जोरावरी बैल पै चढ़ाय फेरि शैलपै चढ़ावैगी। मुण्डनके मालकी भुजंगन के जालकी सो गंगा गजखाल की खिलति पहिनावैगी ॥

टी०। इहां गङ्गाकी निन्दा में शिवकरनो अस्तुति निकसी याते व्याजस्तुति है ॥

हौं तौ पंचभूत तजिबे को तौ शरन आयो तैं तो कस्यो मोहिं भलो भूतनको पतिहै। कहै पदमाकर सु एक तन तारिबे में कीन्हे तन गेरह कहौ सो कौन गतिहै ॥ मेरे भाग येई लख्यो कहिये कहौ सो कौन भागीरथी बरणि सकैगो यथामतिहै। एक भवशूल आयो मेटन को तेरे तीर तोहिंतौ त्रिशूल किये बार न लगति है ॥

(दो०) तुव नैननके सामुहें आयसकै को ग्वारि।
नेक तिरीछे ताकिकै घायल किये मुरारि ॥
कहालहैते दृगकरे परे लाल बेहाल।
कहुँ मुरली कहुँ पीतपट कहूँ मुकुटबनमाल ॥

टी०। इहां निन्दा मिस नेत्रनकी बड़ाई है ॥

अस्तुति में अस्तुति यथा ॥

(दो०) जेदानी राजान को रचत धन्यहै सोय।
लैसुन्दरता ज्यहिं सुतिय रची धन्य सो होय ॥

(स०) धनि है वह तात औ मात जनी जेहि गेह धरी सो घरी धनि है। धनि हैं दगजेवै तुम्हैं दरशै परसै करैं ते वै महाधनि हैं ॥ धनिठाकुर ग्राम औ ठाम वहै जहँ डोलै लली सो गली धनि है। धनि है धनतू धनि तेरो हितू जेहि की तू धना सो धनी धनि है ॥

अथ व्याजस्तुति निन्दा लक्षण ॥

(दो०) अस्तुति में निन्दा जहां व्याजनिन्द सो जान।
निन्दामें निन्दा भये भेद दूसरो मान ॥

अस्तुति में निन्दा को उदाहरण ॥

(स०) नैन विशाल भये रँग औरई बेनी गई छुटि आतुरताई। बन्दन माँग गयो छुटि चन्दन अञ्जन कोरनहीं सुखदाई ॥ सो मदनेश कपोलन खण्डित है श्रमसीकर की अधिकाई। भाई भले मनमोहन काज सो आज सखी तू भली बनिआई ॥

टी०। इहां भलि बनिआई नहीं बुरी बनिआई यह आशय है याते अस्तुति में निन्दा है ॥

भोरहि भूरि भलाई भरे अरु भाँतिन भाँतिनके मन भाये। भाग बड़ो वहि भावती को जिन भावतें लै रँग भौन बसाये ॥ भेषभलेई भले विधिसों करि भूलिपरे किधौं काहू भुलाये। लालभलेहौ भले सुखदानि भली भई आजु भले बनिआये ॥

टी०। धीरा नायिका को कथन भलाई में बुराई निकसे है ॥

(दो०) पलनपीक अञ्जन अधर धरे महाउर भाल।
आजुमिले सुभली भई भले बनेहो लाल ॥

टी०। इसमें भी वही भाव है ॥

(स०) धनिहो ब्रजवालन में तुमहीं तुमतो हमको भल भावतीहो। करतीहो दुराव कि बातें कहा हमहूं सो न प्रीति लगावतीहो ॥ हनुमान चलाव चलें तो चलै हकनाहकही तन तावतीहो। हित मानतीहौ तुमराधिका को नँदलालै सनेह सिखावतीहो ॥

टी०। इहां बड़ाई में निन्दा है कि हित नहीं अनहित मानती हो जो अपने गुण सिखावतीहो सखी प्रति सखी को कथन है ॥

अथ निन्दामें निन्दा को उदाहरण ॥

(दो०) कोकिल कलरव सों रचे विरहिनि उरको साल।
राखतहै तोहिं शीशपर निरदै महा रसाल ॥

टी०। इहां आँबकी निन्दाते कोकिल की निन्दा है ॥

(क०) नैननहीं सैनकरै धीरी मुखदैन करै लैनकरै चुम्बन परसि प्रेम पाताहै। कहै पदमाकर त्यों चातुरी चरित्रकरै चित्रकरै सौहैं सो विचित्र रतिरताहै ॥ हाव करै भावकरै विविध विभाव करै बूझै पैन एते पै अबूझनको आताहै। ऐसी परवीननको कीन्हो जो पुरुष ऐसो जानी बीस बिसे महा मूरुख विधाताहै ॥

टी०। यहां नायक की निन्दासे ब्रह्माकी निन्दा भई। अनभिज्ञ नायकहै ॥

(स०) जोरि करोरि धरयो घर भीतर हीतरमें नहिं पीतर दीन्ह्यो। या रसना वशकै जनको नहिं रामके

नामन में रस भीन्ह्यो ॥ काह कहै मदनेश तिन्हैं दुहुँ ओरनसों नहिं एकहु लीन्ह्यो । कीन्ह्यो वृथा विधि ने पुरुषारथ स्वारथ.ना परमारथ चीन्ह्यो ॥

टी० । इहां सूमकी निन्दासे ब्रह्मा की निन्दाहै याते व्याज निन्दा निन्दा है ॥

अथ अक्षेप लक्षण ॥

(दो०) तीनिभाँति अक्षेप है एक निषेधाभास ।
पहिले कहिये आपकछु बहुरि फेरिये तास ॥
दुरै निषेध जो विधि वचन लक्षण तीजो लेष ।
हौं नहिं दूती अगिनिते तिय तनताप विशेष ॥
हौंन कहति तुम जानिहौ लाल बालकी बात ।
अँशुवा उडुगन गिरतहैं होन चहत उतपात ॥

(क०) झूठी वेई प्यारे तुम्हैं झूठी जे लगावती हैं तुम सब साहनमें सरस विशेखिये । रातिको जे आवत कहावत ते चोर तुम भोरभये आये ताते साहन में देखिये ॥ नैननहीं लाल ओ महाउर न भाल है जु ओंठ कारे काजर की लीकऊ न लेखिये । आरसी सो निरमल रावरे को अङ्ग तामें मेरी चारु चूनरी को प्रतिबिम्ब पेखिये ॥

टी० । धीरा नायिका वाक्य वैशिष्टता स्वतःसंभवीवस्तुते अलंकारहै ॥

अथ दूसरो आक्षेप ॥

(दो०) तुवमुखविमलप्रसन्न तिय रह्यो कमलदलफूलि ।
नहिं यह पूरणचन्द सो कमल कह्यो मैं भूलि ॥
यह मसाल देखे बरत री मुखचन्द प्रकास ।

छटा चाँदनीकी सरस नहिं तियकी मृदुहास ॥

(क०) रावरे के मन जिन सुन्दरीन को है ध्यान तेई विधि प्रेमके पयोनिधि में डारी है । ताकी कौन कीजिये बड़ाई बनिता की जापै कृपाकरि नेक डीठि राखत विहारी है ॥ सो तौ पाउँधारे इन नैनन को सुख-देन किंशुक कुसुमकली उरमें सवाँरी है । नाहिं नाहिं प्यारे आज मेरेही वियोग तची छाती है तिहारी तामें चन्द्रकला धारी है ॥

टी० । यहां पहिले कहि बहुरि फेरयो याते दूसरो आक्षेपहै ॥

अथ तिसरो आक्षेप लक्षण ॥

(दो०) दुरै निषेध जो विधि वचन लक्षण तीजो जानि ।
चलौ लाल चलिवेसमै चहुँकित ललित लतानि ॥
ललन चलन बरजति नहीं तुम विदेशको जाहु ।
मेरेप्यारे प्राणह्वां करिहैं जाय निवाहु ॥
पूसमास सुनि सखिनसों साईं चलन सवार ।
गहिकर बीन प्रवीन तिय राग्यो राग मलार ॥
चलत सुन्यो परदेश को हियरे रह्यो न ठौर ।
लै मालिन मित्रहि दियो नवरसाल को मौर ॥

टी० । प्रवत्स्यत प्रेयसी नायिका । इस भाँतिभी आक्षेप होवे है॥

(स०) तुम्हरेई लिये व्रजवीथिन में फिरिकै बिन देखे तईतौ तई । नहिं काहु कि खोरि है यामें कछू दई मोहिं व्यथा जो दई सो दई ॥ हनुमान इती विनती है सुनौ बिछुरे निशि मेरी गई सो गई । उनहीं को लगावो लला छतिया हमको बदनामी भई सो भई ॥

टी० । इहां परकीया खंडिताहै विधि वचनते तिसरो आक्षेपहै॥

हमको तुम एको अनेकनु कहैं उनहीं के विवेक वि-चारि बहौ। इतआंश तिहारी तिहारी उतै विविचारिन नेक कहानिबहौ॥ अब सोई ममारख कीबो करौ उनहीं के सोहाग लतानि गहौ। घनश्याम सुखारहौ आनँद से तुम नीके रहौ उनहीं के रहौ॥

अथ विरोधाभास लक्षण॥

(दो०) लागत कहत विरोध सो अर्थसबै अविरोध।
ताहि विरोधाभास कहि सब ग्रन्थन मतशोध॥
उ०—कहत पीर हैरी सखी बसत पीर है दूरि।
नसहि व्यथाको यहिसमै नसहि खायकै भूरि॥

(क०) परम पुरुष कुपुरुषसङ्ग सोहियत दिनदान शील पै कुदान ही सोंरतिहौ। रविकुल कलश सुराहके रहत वश साधुकहैं साधु परदार प्रिय अतिहौ॥ अकर कहावत धनुष धरे देखियत परम कृपालपै कृपान कर-पतिहौ। विद्यमान लोचन ह्वै हीन वामलोचन सु केशव दास राजाराम अदभुत गतिहौ॥

टी०। इहां कहत में विरोध सो लगै है परन्तु अर्थ याको सब अविरोधहै यथा। श्रेष्ठ पुरुषहैं परन्तु संगमें कुपुरुष कहे कुपृथ्वी के पुरुष राजा अथवा कुपुरुष वानर रीछआदि संग में सोहत और दिनदान शील कहे सब दिन दान करनेवाले कुदानही सों रतिहौ अर्थात् कुपृथ्वी के दान में प्रीति है। सूर्य कुल शिरोमणि सदैव सुन्दर राह चलते हैं साधु लोग साधु कहते हैं परदार प्रिय कहे पर श्रेष्ठदार स्त्री जानकी अथवा परदार तुलसी तिनके प्यारेहो। अकर कहलातेहो अर्थात् किसी को दण्ड नहीं देतेहो धनुषधारीहो परमदयालुहो जिनके हाथमें कृपान कहे तलवार

राजा लोग तिनके स्वामीहो है नेत्र वियमानहैं तुम से टेढ़े नेत्र करनेवाले रावणादि तिनके हीन कहे नाश कर्ताहो ॥

(क०) दीरघ रसीली कछू भोर अरसीली सौतिजन अरसीली हैं अमीनहीं न मीनहीं। बैन बान बाहैं प्रेम नेम निरबाहैं अरविन्द उपमा हैं समखंजन मृगी नहीं ॥ सुखमा भरी हैं बेनी सुखमा भरी है मैनकाहू की न देखी मैनकाहू की सुनी नहीं। आँखैं लगती हैं जब आँखैं लगती हैं प्यारी आँखैं लगती हैं तब आँखैं लगती नहीं॥

टी०। इहां प्रतीप यदावृत्ति जमक की संसृष्टि शंकर है। आँखैं लगती हैं तब आँखैं लगती नहीं यह विरोधाभासहै ॥

देखत नये हैं गिरिछतिया रहे हैं कुच देखे मैं निहारि आछे मुखमें रदनहैं। बरसन सोरहौ न वासी एक आगरी है मंदही चलत भरी योवन मदनहैं ॥ केश मानौ चौर तूर झलकत वाके बीच पटके कपोल शोभा धरन बदनहै। सेनापति बचन किरचना बिचारौ नारि बुढ़ियानवीन एक सोहत सदनहै ॥

टी०। इहां भी देखतमें विरोधहै परन्तु अविरोध आभास सब ठौर जानिये। श्लेष भी दर्शै है ॥

(दो०) कत बेकाज चलाइयत चतुराई की चाल।
कहे देत गुन रावरे सब गुन निर्गुन माल ॥

टी०। इहां चतुराई सों सापराधत्व विरोध अर्थ अविरोध विना गुनमाल कहनो अर्थ औरही होताहै ॥

उतरतहौ उतरत नहीं मनसे प्राण निवास।

टी०। धीरा नायिका को वचन है।

लाल तिहारे रूपकी कहौ रीति है कौन।

जासों लागत पलकहग लागत पलक पलौन ॥

टी०। सखी की उक्ति नायक सों कहै है पलक पलक में अविरोधहै ॥

(क०) पुलिन पुनीत पय पेशल प्रवाह चलै फव्वतहै फेर फेन फविन समेतहै । बेलाकी विमल बर बालुका विपुल बीच भागीरथी नाम भवभार भूरिलेतहै॥ मदन मथन ताके माथे मधि बास कस्यो मद मतवारो महा मगर समेतहै । हृदय विचारि देखौ गंगा जू पवर्ग मयी सेवकन कैसे अपवर्गही को देत है ॥

अथ विभावना छः प्रकार ॥

(दो०)जहँ बिन कारण आपही कारज परत दिखाय।
पहिलो भेद विभावना कहत सुकवि समुदाय ॥

उदा०—तप जप यागनकहुँ कस्यो रह्यो निशाचर संग।
कुम्भकरण आदिक जिते लियो लाय प्रभुअंग ॥

(दो०) देखे बिन तेरे अली भये लाल आधीन।
बिन बोले अधरन सुधा झरत पियत परवीन ॥

(स०) हे ब्रजराज सुनो ब्रजमें बसि काल्हि मैं ये निज नैनन हेरे । आंगन आंगन ताल बिशाल प्रवाल बिना तरु फूल घनेरे ॥ होतहि चन्द उदै अधरात लुवारि लगी बिन ग्रीषम मेरे । पावसहू बिन एकहि संग गोपाल पपीहन के गन टेरे ॥

लावत मैन सुगन्ध लख्यो सब सौरभ की तन देत दसीहै । अंजन रंजनहू बिन श्याम बड़े बड़े नैनन रेख लसीहै ॥ ऐसी दशा रघुनाथ लखे यहि आचरजै मति

मेरी फँसीहै। आली नवेलीके ओंठनमें बिन पान कहांते धौं आनि बसीहै ॥

(दो०) मोसों मिलवत चातुरी तू नहिं जानत भेव।
कहे देत यह प्रगटही प्रगट्यो पूस पसेव ॥

टी०। यहां बिन कारण कार्य सब में है। पूसमें पसेव आनेका कारण नहीं है सो कार्य भयो। यामें सखी वचन नायिका ते लक्षिताहै अथवा नायिका की उक्ति सखी से तौ अन्य संभोग दुःखिताहै ॥

अथ दूसरी बिभावना लक्षण ॥

(दो०) हेत अपूरण काजकी जहां सिद्धता होत।
तहँ दूसरी बिभावना सु कविनकरी उदोत ॥

उ०—बेष दिगम्बर बसन नहिं नहिं कछु भूषण बित्त।
कोटिन केरी संपदा देत शम्भु है नित्त ॥

(क०) प्रथम समागम सशंकित सरोज मुखी दुखी सी रहति प्रीति उर न चहति है। दिनन कि थोरी गोरी भोरी रस बातन में नीबी कसि बांधै डोरी चोरी निबहतिहै ॥ कहै मतिराम दिन बूड़े मन बूड़ि आवै सासुहि बोलाय धाय पांयन गहतिहै। याही भ्रममाहीं पिय नाहीं गहि बाहीं हम नाहीं हम नाहीं परछाहीं सों कहति है ॥

टी०। इहां नवोढ़ा नायिका है हेत अपूरण नायक नहीं है परछाहीं सों कहनो यह बिभावना को दूसरो भेद है ॥

(दो०) बिरह बिकल बिनहीं लिखी पाती दई पठाय।
आंक बिहूनी यों सुचित सूने बांचत जाय ॥

टी०। प्रोषितपतिका परकीया नायिकाहै नायक को बिना लिखी पाती पठई हेत अपूरणता में बाँचनो कार्य पूरण याते द्वितीय बिभावनाहै ॥

मनमथ चरित विचित्र ये सुनियत करन बखान।
अबलन को बल बांधिकै जीत्यो सकल जहान॥

टी०। अबला स्त्री अपूरणहै तातै सकल जहान जीतबो कार्य पूरण भयो याते दूसरी विभावनाहै॥

अथ तृतीय विभावना॥

(दो०) प्रतिबंधक के होतहूं कारज पूरण मानि।
तहां तृतीय विभावना सु कविन कही बखानि॥

उदा०—सँगके सब बरजत तऊ देत रहत नित दान।
प्रागनरायणको सुयश को करिसकै बखान॥
सखी सयानी पासमें सब बिधि करत बचाव।
तऊ डीठि परिजात उत चतुर चित्तकरि चाव॥

(क०) एक पग ठाढ़े ह्वैके जल अधिकारे बीच स-कूल ठिहारे गति भारे ताप घनकी। पद न उघारे सूर ओरहि निहारे अनसन व्रतधारे न बिसारे रीति पनकी॥ आजुलौं न ऐसी भई कैसी करौं धनीराम औसर बिताय साध पूरी निजपन की। संगकी बधूटी रहीं अंग माहिं जूटी आजु कमलन लूटी छबि बालके बदन की॥

टी०। इहां बधूटी सब प्रतिबन्धक तऊ कमलन मुखकी छबिलूटिली। मुग्धाविप्रलब्धा नायिका है॥

सूने घर परम परोसी के सुजान तिय आई सुनि सु-निकै परोसिनि मनो अराति। कहै पदमाकर सुकंचन लतासी लचि ऊंची लेति श्वासको हियेमें त्यों नहीं स-माति॥ बैठि उठि जैसे तैसे जाइ आइ जहां तहां दिन तो बितायो सखी बीततिहै कैसे राति। ताप सरसानी

देखि अति अकुलानी जऊ पति उर आमी तऊ सेजमें बिलानी जाति ॥

टी० । इहां पतिप्रतिबन्धकहै तऊ बिलानो पूरण कार्य भयो । अनुसयना नायिका है ॥

अथ चतुर्थ बिभावना ॥

(दो०) जबै अकारण बस्तुते कारज प्रगटै होत ।
तहां चतुर्थ बिभावना कहत कविन के गोत ॥

उ०—अचरज एक सुनीजिये हे महराज प्रवीन ।
दान वृक्षमें देखिये जस फलरूप नवीन ॥
चंपक लतिका में फले श्रीफलरूप उतंग ।
यक सोनेकी बेलिमें विद्रुम फलित सुरंग ॥
हँसत बालके बदनते यों छबि बढ़ी अतूल ।
देखे चंपक बेलिमें झरत चमेली फूल ॥
छुटै छुटावै जगतते सटकारे सुकुमार ।
मन बांधत बेनी बँधे नील छबीले बार ॥

टी० । इहां बार छूटे अकारण ते मन बँधनो कार्य प्रकट भयो ऐसे सब दोहनमें जानिये ॥

अथ पञ्चम विभावना ॥

(दो०) काहू कारण ते जहां कारज होय विरुद्ध ।
तहँपाँचईं विभावना भाषत जे मति शुद्ध ॥

उदा०—कहाकहौं सजनी विपति सजिकरिसबै समाज ।
बरसत बारिद आगिआनि जारनही के काज ॥

टी० । इहाँ बारिद को बरसनो कारण तासे सुख होना चाहिये ताके विरुद्ध दुःख भयो ॥

ज्यों ज्यों पावक लपटसी तियहियँसों लपटाति ।

त्यों त्यों जुही गुलाबकी छतिया अतिसियराति ॥

टी० । इहां प्रोषितपतिका को नायक आयो है तासों मिले है । पात्रक लपट कारण ताते सियराना कार्य विरुद्ध भयो पूर्ण उपमालङ्कार ते विभावना । आगतपतिका नायिका है ॥

(स०) वे जग अन्धन को मगदा चलिवो इन नीकनहू को नेवाऱ्यो । वैबलिबास बसावत हैं इन बास उजारि कुवासन पाऱ्यो ॥ सूरति थाह जतावत वे इन प्रेम अथाह के बारिधि डाऱ्यो । देखहु री हरिकी बँसुरी इनकैसे सुबंस को बंस बेगाऱ्यो ॥

टी० । इहां बांस बंशहित कारण ताते अहित करनो बाँसुरी कार्य विरुद्ध है याते पञ्चम विभावना जानिये ॥

अथ षष्ठम विभावना ॥

(दो०) पुनिकछु कारजते जबै उपजै कारण रूप ।
षष्ठम तहाँ विभावना सुकविन कही अनूप ॥

उ०-(क०) कलन परत कहूं चलन ललन कहो विरह दवासो देह दहकै दहक दहक । लागीरहै हिलकी हलकि सूखिहाले हियो देयकहै गरो भरिआवत गहक गहक ॥ दीरघ उसास लैलै शशिमुखी ससकति सुलप सलोनो लंकलहकै लहक लहक । मानै बरजो न इन लोचन सरोजन ते वारिको प्रवाह बह्यो आवत बहक बहक ॥

टी० । छेकानुप्रास। प्रवत्स्यतप्रेयसी नायिका। लोचनसरोज कार्य ताते वारिप्रवाह कारण उपज्यो ॥

(दो०) राधा मगको देत पग लालन अचरज होत ।
फैलिजात पग कमलते सरस्वती को सोत ॥

भयो सिन्धु ते विधु सुकवि बरणत बिनाविचार।
उपज्यो तुव मुखचन्द ते रूप पयोधि अपार॥

टी०। इहां विधुकार्य मुखचन्द ते रूपपयोधि कारण उपज्यो इसीभाँति सबमें कारजसे कारणरूप उपजनो षष्ठ विभावनाहै॥

अथ विशेषोक्तिलक्षण॥

(दो०) कारण रहत बनो जहां कारज होतो नाहिं।
विशेषोक्ति तहँ जानियो उदाहरण के माहिं॥

उदा०-लिखन बैठ जाकीसवी गहि गहि गर्व गरूर।
भये न केते जगत के चतुर चितेरे कूर॥
अलि इन लोयन को कछू उपजी बड़ी बलाय।
नेहभरे नितप्रति रहैं तऊ न प्यास बुझाय॥

(क०) कैसी है लगन जामें लगन लगाई वह प्रेम के पगन के परेखे हिये कसके। केतकौ छपाय कै उपाय उपजाय प्यारे तुमसों मिलाप के बढ़ाये चोप चसके॥ भनत कविन्द हमें कुञ्जन बोलाय आप बसे कित जाय चितदैकर अबसके। पाँयन में छाले परे नाँघिबे को नाले परे तऊ लाल लाले परे रावरे दरसके॥

टी०। परकीया विप्रलब्धा नायिका। नायककी दूतीते वरहनो कहि पठयो है यह सब कहनूति हेत जानो नायक न मिल्यो कार्य न भयो॥

(स०) धायके सङ्गमें सोय निशङ्कह्वै पङ्कज सी अँखियान झकाझकी। यों सपने में मिल्यो पिय प्रीतम बाढ़ी दुहूंके हिये में छकाछकी॥ ठाढ़ेहिठाढ़े गहे कुच गाढ़े सो बाढ़ी बधूके हियेमें सकासकी। देवजगे रतिया हू गई न तियाकी गई छतियाकी धकाधकी॥

मञ्जनकै दृग अञ्जन दै हँसि पायँन जावक चारु देवावै । और शिंगाररचै रुचिकै अरु भूषण भूषित कै फुरमावै ॥ देखी अनोखी नई नवला भवनेश धौं सीख कहा केहिपावै । नाइनिहारी हंहाकरिकै ठकुराइनि भाल न ईंगुरु छ्वावै ॥

टी० । ईंगुरमें पाराको मिलान जानि पारा महादेवको वीर्य है याते दूसरे पुरुषको वीर्य नहीं स्पर्श करती स्वकीया नायिका है नाइनि देती है हेतसों कार्य नहीं देवावनो उपजो प्रतिबन्धक दूसरे पूर्वरूप इन तीनों की एकसी रीति है ॥

अथ असम्भव लक्षण ॥

(दो०) कहे असम्भव होत जब बिन सम्भावन काज ।
गिरिवर धरिहैं गोपसुत को जानै यह आज ॥
मिथिलापुर संभ्रम पर्‍यो कहत परस्पर बात ।
को जानै धनु तोरिहैं राम सुकोमल गात ॥

(स०) यों दुखदै ब्रजवासिन को ब्रजको तजिकै मथुरै सुख पैहैं । वा रसकेलि खवासिनि की वन कुञ्जन की बतियां बिसरैहैं ॥ योग सिखावन को बहुरयो हमको तुमसे उठि धावन धैहैं । ऊधो न पै हम जानती हैं सब मोहन कूबरी हाथ बिकै हैं ॥

सोवत पूतनाको यमलोक पठाई लग्यो नहिं कोऊ गोहारि है । और बकासुर त्यों बतसासुर खेलतही हन्यो को रखवारि है ॥ कालीकरै फनको भ्रम दूरि कहौ मदनेश इतो को विचारि है । जानत को रह्यो बारहीं वर्ष में दन्त उखारि हैं कंसको मारि हैं ॥

टी० । ये सब बातें असम्भव हैं याते असम्भव अलङ्कार है ॥

अथ असंगतिलक्षण ॥

(दो०) तीनि असंगति काज अरु कारण न्यारे ठाम।
और ठौरही कीजिये और ठौरको काम ॥
और काज आरंभियत औरै कीजत दौर।
कोयल मदमाती भई झूमत अंबा बौर ॥
नवल नवेली अंग में उठे उरज भरुआय।
देखिदेखि सौतीन उर अधिक अधिक गरुआय॥

टी०। इन दोहनमें कारण कार्य भिन्न २ है नायिका के उरोजन को भारभयो सौती बोझसे गरुआती हैं ॥

(स०) दीन्हो चहै करतार जिन्है सुख कौन रहीम सकै त्यहि टारे। कोऊ उपाय करो न करो धन आवतहै बिन हाथ हँकारे ॥ देव हँसैं मिलि आपुस में विधि को परपंच न कोऊ निहारे। बालक आनि सु औरइके भयो दुंदुभी बाजत औरके द्वारे ॥

सोय अकेले रहै दिनमें ससुरारि में काहु वै नाहिं सकातहै। भोजन काज जगाये नेवाज उठे रति केलि थके अलसातहै ॥ सारी निशाके जगे ढिग सासुके ज्यों ज्यों लला अँगरान जम्हातहै। त्यों त्यों इतै लखि लाड़िली के वड़े लोचन लाजनहीं गड़ेजातहैं ॥

बैठी सलोनी सोहाग भरी सुकुमारि सखीन समाज बढ़ीसी। देव जू सेज सोवाय लला मुख में सुखमा उमंड़ी घुमड़ीसी ॥ प्यारीकी पीक कपोलन पीके बिलोकि सखीन हँसी उमड़ीसी। शोचन सों हैं न लोचन होत सकोचन सुन्दरि जात गड़ीसी ॥

अलसात जम्हात अठपरते इतरे निशिमें करि केलि

बड़ी । यहि भाँतिहि रावरो रूप लखे अति आनँदराशि हिये उमड़ी ॥ नृप शंभु जू केशरिया दुपटो हठि माँगति है अँगना में अड़ी । इत हासी जेठानी ललासों करै उत लाड़िली लाजन जात गड़ी ॥

टी० । इन सब छन्दन में कारण कार्य न्यारे न्यारे ठाममें हैं इससे असङ्गति जानिये ॥

छाप छला नवलाको गिरै तौ उठाय लला धरि राखत जीकै । धोखेहु पायँ धरामें धरै अजवेश सरोष सहेलिन ठीकै ॥ काननहूँ न सुनी अबलौं न लखी सखी नैनन ऐसी अलीकै । लागै धुवाँ अलबेलीकी आँखिन धावैं ललाके ललाई कि लीकै ॥

टी० । स्वाधीनपतिका मुग्धा है सखीप्रति सखी को कथन यहां कारण अन्त और कार्य अन्त है धुवां अलबेली की आंखों में लगै और ललाकी आंखों में ललाई की लीकैं होती हैं ॥

अथ दूसरी असंगति उदाहरण ॥

(दो०) आजु कहा उलटी करी अरी खरी नव बाल ।
करि सोहाग नैनानि में अंजन भाल विशाल ॥
अधरनमें अंजन लग्यो दृगन पानकी पीक ।
ललन तिहारे चलन में निरखे सबै अलीक ॥

अथ तीसरी असंगति उदाहरण ॥

(दो०) ऊधो व्रजवासीन को कहा कहतहो आनि ।
योग पठायो ना हमैं भोग पठायो जानि ॥
उदित भयोहै जलद तू जगको जीवन दैन ।
मेरो जीवन लेतहै कौन सु बैर कहैन ॥
प्रकट भये धनश्याम तुम जग प्रतिपालन हेत ।

नाहक व्यथा बढ़ाय जग अबलनको जिय लेत॥
टी०। इन सब दोहनमें और कार्य आरम्भन और करनाहै॥

अथ विषमअलंकार॥

(दो०) विषम अलंकृत तीनि विधि अनमिलते को संग।
प्रथम भेद बरणत सबै जे कविता रस रंग॥
उ०—जगमें विधि रचना कठिन देखी आंखि पसारि।
कहां भीमसे प्रबल तन कहँ द्रौपदि सुकुमारि॥
मेघनाद रावण सुतौ राक्षस महा बखान।
कहां नागकन्या कहां मन्दोदरी सुजान॥
(स०) ऊधोजी सूधो विचारहु धौं जो कछू समुझैं हमहूं ब्रजवासी। मानिहैं जो अनरूप कहौ मतिराम भली यह रीति प्रकासी॥ योग कहा मुनि लोगन योग कहा अबला मतिहै चपलासी। श्याम कहां अभिराम स्वरूप कुरूप कहां वह कूबरी दासी॥
टी०। इहां सबठौर अनमिलतको सङ्गहै॥
(दो०) को कहिसकै बडे़नसों लखे बड़ेही भूल।
दीन्हो दई गुलाब की इन डारन वै फूल॥
(स०) पति प्रीतिके भार न जातीउनैमतिसो दुख मारन साले परी। मुख सांसते होत मलीन सदा सोइ मूरति पौनके पाले परी॥ द्विजदेव अहो करतार कछू करतूति न राउरि आले परी। हकनाहक गोरी गुलाब कलीसी मनोजके हाथ हवाले परी॥
टी०। इहां स्वतः सम्भवी वस्तुते अलङ्कारहै। मुग्धा नायिका है। सखीप्रति सखी को कथनहै सबठौर अनमिलतको सङ्गहै॥

अथ विषम द्वितीय भेद ॥

(दो०) हेतु रंग औरै कछू कारज को रँग और ।
तहां दूसरो विषम कहि सुकविनके शिरमौर ॥

उ०—मदन कदन उज्ज्वल बदन उज्ज्वल तन सब काल।
देखि सुन्दरी को भयो अनुरागी मन लाल ॥

(स०) नेह किये भई रूखी अनेक कहे केहिसों अपनी दुचिताई । जे सुर लीन भई मुरली भई बेसुरहै छविता छवि छाई ॥ कौन परेखी करे मदनेश विचार यहै मनमें ठहराई । सांवरे रावरे अंग पगेही परी तिय अंगनमें पियराई ॥

(क०) वारने सकल एक रोरिही की आड़पर हाहा ना पहिरु और आभरन अंगमें । कवि मतिराम जैसे तीछन कटाच्छ तेरे ऐसे कहा शरहैं अनंग के निषंग में ॥ सहज सुरूप सुघराई रीझो मेरो मन डोलतहै अति अद्भुतकी तरंग में । श्वेतसारिही सों सब सौति रँगे श्यामरंग श्वेतसारिही सों रँगे श्यामलाल रंगमें ॥

टी० । इहां विक्षिप्त हावको रूपहै ॥

अथ तृतीय विषम लक्षण ॥

(दो०) इष्ट बात उद्यमहिं करि जहँ अनिष्ट ह्वैजात ।
तहां तीसरो विषम कह कविता के अवदात ॥

उ०—मोहन के वश करन को गई चतुर सखि बाल ।
आप विवश देखत भई रूप अनूपम लाल ॥
सखी करति उपचार बहु चन्दन चारु सुगंध ।
शीतल करिवेको हियो बाढ़ो विरह प्रबंध ॥

(स०) मनमें किन कीन्हे विचार महा मुद मानि

समूह ठिकान ठई। मत मारग में अनुमान अनेक वि-
वेक करे कबहूं न दई ॥ मंदनेश मिली नँदनंदन जाय
हियोसों हियो लपटाय लई। बरसाने गई दधि बेंचिबे
को तहँ आपहि आप बिकाय गई ॥

टी०। इहां इष्टमें अनिष्टभयो याते तीसरो विषम है ॥

अथ सम अलंकार लक्षण ॥

(दो०) तहँ सम को वर्णन करै संग यथोचित योग।
जिमि सीता शुभ राम तिमि सुन्दर बनो सँयोग॥
को कासों बढ़ि घटि कहै अधिक अधिक अभिराम।
राधे जिमि अभिराम तन तिमि सुन्दर रुचिश्याम॥
मृगछाला माला न शिर ब्याल निर्जनी शैल।
जैसे बूढ़े शिव सुने तैसो बूढ़ो बैल॥

(स०) मेघ जहां तहँ दामिनीहै अरु दीप जहां
तहँ ज्योतिहै भाते। केश जहां तहँ मांग सुबेशहै है गिरि
गेरु तहां रंगराते॥ मोहनको मिलिबेको बलाय ल्यों मैं
रघुनाथ कहौं रहियाते। होत नयो नहिं आयो चलो यह
सांवरे गोरेको संग सदाते॥

पांयन जावक की रुचि तैसहि किंकिणि लंक सदा सु-
खपाये। माल हिये अँगरागसों केशरि कंठमें कंठी त्यों
स्वर्ण सुहाये ॥ ओंठन मोल सु दंत मिसी नकबेशरि
अंजन नैन लगाये। बेंदीहै भाल समानये संग सुराधे
के अंगनमें छवि छाये॥

अथ द्वितीय सम॥

(दो०) कारजही में पाइये कारणही को अंग।
तहां होत सम दूसरो बरणत काव्य प्रसंग॥

उ०—याके बाजन न्यायही उठत हिये विच आगि।
घसत बांसही बांसते उपजत है बन आगि॥

अथ तृतीय सम॥

(दो०) श्रम बिन कारज सिद्ध जब उद्यम करते होय।
तहँ तृतीय सम कहतहैं कवि कोविद सब कोय॥
उ०—खबरि हेत पतिया लिखी सो ऊधो तुम दीन।
योगिनि ब्रजबनिता बिनैं तुम सहायता कीन॥

टी०। इहां गोपियों ने योग साधन विचारो तबताईं ऊधो सन्देशाही लाये श्रम बिन कार्य सिद्धभयो॥

(स०) कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहौ जितहीं तितहीं मन भायो। काहेकू सौंहैं हजार करौ तुम तौ कबहूँ अपराध न ठायो॥ सोवन दीजै न दीजै हमैं दुख योंहीं कहा रसवाद बढ़ायो। मान रहोई नहीं मनमोहन मानिनी होय सो मानै मनायो॥

टी०। इहां नायक को विचारांश मनाइबे को रह्यो तबताईं नायिका देखतही बोली कि कोई तुमको बर्जनेवाला नहीं श्रम बिन कार्य सिद्धभयो॥

अथ विचित्र अलंकार लक्षण॥

(दो०) इच्छाफल विपरीतको किये विचित्र विचार।
आप मानकी बेरही कियो मान भरतार॥
राम बैर साधन कियो युद्ध जुरे बरजोर।
तिनहीं को सुगती दई कौशलराजकिशोर॥

(क०) नमत उँचाई काज लाजही बड़ाई जिय गुरुताके हित नित लघुता करतहैं। सुखही के काज सब सहै दुखदन्दन को शत्रुनके जीतिबे को शांतही धरतहैं॥

कहै कवि निरमल जे हैं सन्त बड़भागी वाते आनि कोऊ अरो तासों न अरत हैं । धन पाइबे के हेत धनहीं को त्याग करैं मान पाइबे के हेत मानको धरतहैं ॥

टी०। इहां सबठौर विपरीत फलहै याते विचित्र जानिये ॥

अथ अधिक अलंकार द्विधा ॥

(दो०) अधिकाई आधारकी जहँ अधेय ते होय।
जहँ अधेय आधारते अधिक अधिक ये दोय ॥

आधारकी अधिकता यथा ॥

सब जग जामें बसत है सो हरि हृदै समाय।
प्रभु मूरति चित सन्तके मोदित बसत सदाय ॥

आधेय की अधिकता यथा ॥

(स०) अँगअङ्ग अनङ्ग उमङ्गनसों मृदुहास विलास भरेसे परैं। मन रञ्जन खञ्जनसे दृगको मृगमीन निहारि तरेसे परैं ॥ पियप्यारे प्रवीन सुनौ त्यों प्रवीन सुगन्धन रङ्ग ढरेसे परैं। चितचोर वशीकर जोरभरे कुच कञ्चुकी ते निकरेसे परैं ॥

अथ अल्प अलंकार लक्षण ॥

(दो०) अल्प अल्प आधेयते सूक्षम होय अधार।
अँगुरी की मुँदरी हती भुजमें करति विहार ॥

(क०) भूली गति तनकीहै औरै दशा मनकी है पीरी पीरी पान की लकीरी तैसो गातहै। धरत न खात धीर कहत न कोऊ पीर नैनन ते नीर ज्यों बहीर बही जातहै ॥ क्यों कर रह्यो है जीव सुनौ परवीन पिय मुई जैसी मूरति मुयेही में कहात है ।.सांची जों न मानो

बात जाय आप देखौ नाथ दुहूं हाथ हाथकी अँगूठी में समातहैं ॥

टी०। इहां भेदकातिलुप्ता पूर्ण उपमा छेकानुप्रास संसिष्ट को शङ्कर है ॥

(दो०) कटि सूक्षम अरु है अलप ये मृणाल के तार।
तेऊ कुच युग सन्धि में होत न पारावार॥

अथ द्वितीय अल्प लक्षण॥

(दो०) जहँ सूक्षम आधार ते अल्पहोय आधेय।
तहां दूसरे अल्पको बरणत सुकवि जितेय॥

उदा०-ये मृणालके तारहू सुई बेह नहिं जात।
विरह तिहारे नजरि बिन भये अधिक कृशगात॥
लाल लुकावतहौ कहा प्रकट प्रभा सरसाति।
लखी अँगूठी साँकरी छँगुनी में न समाति॥

टी०। इहां आधार ते आधेय अल्पहै याते द्वितीय अल्पहै॥

अथ अन्योन्यालंकार लक्षण॥

(दो०) जहां परस्पर करतहैं एक एक उपकार।
तहँ अन्योन्या कहतहैं जे कवि सुमति उदार॥

उदा०-सोहत हरि सँग राधिका राधे सँग नँदनन्द।
लसत चन्दसों यामिनी यामिनिहीसों चन्द॥

(स०) मैं मुरलीधरकी मुरली गही मेरी गही मुरली धर माला। मैं मुरलीधरकी मुरली लई मेरी लई मुरली धर माला॥ मैं मुरलीधरकी मुरली दई मेरी दई मुरली धर माला। मैं मुरलीधरकी मुरली भई मेरे भये मुरली धर माला॥

दोऊ दुहूँ पहिरावत चूनरी दोऊ दुहूँ शिर बाँधत

पागैं। दोऊ दुहूं के शिंगारत अंग गरे लगि दोऊ दुहूँ अनुरागैं॥ शंभु सनेह समोयरहे रस ख्यालनमें सिगरी निशिजागैं। दोऊ दुहूनसों मानकरैं पुनि दोऊ दुहून मनावन लागैं॥

(क०) चारु मुख चन्द दोऊ दुहुनको चाहैं बाहैं दोऊ छ्वै दुहूनको अनन्द वृन्द लहिजात। रहिरहि बूझैं दोऊ दुहुन कुशल चाहैं चाहैं और बैन कहिबे को पै न कहिजात॥ कहै परसाद बहु दिनमें बिछुरि मिले हिले मिले दुहुँ सों दुहूँ के दुख दहिजात। छाती छाती लाय मुख मुखसों मिलाय करि दुहुँन के दोऊ गरे लगि रहि रहि जात॥

छूटो गृहकाज लोक लाज मनमोहनी को छूटो मन- मोहन को मुरली बजाइबो। अबै दिन द्वै ते रसखानि बात फैलि गैहै सजनी कहाँलौं चन्द हाथन दुराइबो॥ कालिहते कलिन्दी कूल चितयो अचानकहीं दुहुनको दोऊ ओर मुरि मुसक्याइबो। दोऊ परैं पैयाँ दोऊ लेत हैं बलैयाँ उन्हें भूलिगईं गैयाँ उन्हें गागरी उठाइबो॥

टी०। इन सब में अन्योन्यालङ्कारहै। परस्पर को भाव है॥

अथ अन्योन्यालंकार द्वितीय॥

(दो०) जहां परस्पर करत हैं अपकारहि अपकार।
तहँ अन्योन्या दूसरो सुकविन कर्यो विचार॥

उदा०—नर सरपन दुख देतहैं सर्प नरन दुख देत।
सुर असुरन साँसति करैं असुर सुरन के हेत॥

अथ भूषणअलंकार लक्षण॥

(दो०) जहँ द्वैवस्तु अन्योन्य ह्वै औरहि शोभा देत।

अलङ्कार भूषण तहां बरणत सुकवि सचेत ॥

उदा०—कज्जल सों नैना लसैं नैना कज्जल ऐन ।
नैना कज्जल मिलिकैं चितवनि शोभा सैन ॥

(क०) हेमते लसत मणि मणिते लसत हेम हेम अरु मणि ते तियाकी छवि छाई है । कञ्ज ते लसत जल जल ते लसत कञ्ज कञ्ज अरु जलते तड़ाग की बड़ाई है ॥ शशि ते लसत निशि निशि ते लसत शशि शशि अरु निशिते गगनकी गुराई है । भूपते लसत कवि कविते लसत भूप भूप अरु कविते सभाकी गरुआई है ॥

टी० । इहां द्वै वस्तु अन्योन्यहैं याते भूषण अलङ्कारहै ॥

अथ विशेषलक्षण ॥

(दो०) तीनि भांति सुविशेष है बिन अधार आधेय ।
थोरेही में सिद्ध बहु भेद दूसरो लेय ॥
एकै वस्तु अनेक थल वर्णन जहां देखाय ।
तहँ तीसरे विशेषको भाषत कवि समुदाय ॥

बिन आधार आधेय वर्णन ॥

(दो०) महाबली जगमें विदित करिवर फेंक्यो बाँह ।
भीम करी ये आजलौं इत उत छुवत न छाँह ॥

टी० । भीमके फेंके हाथी न ऊपर रहे न तरे आये अनाधार आधेय याते पहिलो विशेष है ॥

फँसी प्रेम नँदनन्द के कहत बनै नहिं बैन ।
इत उत मन टाँगो रहै परत घरी नहिं चैन ॥

टी० । इहां मन आधेय आधार विना टाँगो रहैहै ॥

आये आज सभाग मों सोहत रूप विशाल ।
किनरधि पहिरायोहिये यह बिन गुनकी माल ॥

टी०। गुनकहे डोरा आधार बिन माल हिय में है। धीरा नायिका है॥

(स०) अब ह्वैहै कहा अरविन्द सो आनन इन्दुके हाय हेवाले पस्यो। पद्माकर भाषे न भाषेबनै जिय ऐसे कछू बकसाले पस्यो॥ इन मीन बिचास्यो बिध्यो बन-शी पुनि जालके जाय दुमाले पस्यो। मनतौ मन मोहन के सँगगो तन लाज मनोजके पालेपस्यो॥

टी०। मन आधेय बिन आधार है याते प्रथम विशेष है॥

अथ द्वितीय विशेष उदा०॥

(दो०) सखिनसंग पनिघटगई भरन यमुन जलवीर।
तनकबोलि हरिवशकियो शिथिलसनेह शरीर॥
गजमुख सनमुख होतही विघनविमुख ह्वैजात।
ज्योंपग परत प्रयाग मग पाप पहार बिलात॥

टी०। तनक गजमुख के सामुहें भये विघ्न विमुख होजाते हैं औ प्रयाग के मगमें पावँ धरते पाप के पहार विलाय जाते हैं थोरे आरम्भ में अधिक सिद्धभयो॥

अथ तृतीय विशेष लक्षण॥

(दो०) एक वस्तु बहुठौर में बरणत जहां विचारि।
तहँ तीसरे विशेषको कह्यो कविन मतिधारि॥
उ०-घाट बाट चौहट बगर वन उपवन सबठौर।
सोवत जागत ध्यानमें ठाढ़ो नन्द किशोर॥

(क०) चहुँकित कुंजनमें परम निकुंजनमें पुंजन पलासन पतान लगो परसन। कवि मदनेश ठौर ठौर भौंर भीरनमें सुरभि समीरन सुसीरनपै सरसन॥ अंबन पै अवनि कदंबनपै कोकिलपै विदित बसंत यों दिशान

लख्यो दरशन। कामकरि केलिनमें सकल सहेलिन में बिरह नवेलिन में वेलिनमें बरसन॥

टी०। एक वस्तु बहुत ठौर वर्णन है याते तीसरो विशेषहै॥

अथ व्याघात द्वैप्रकार लक्षण॥

(दो०) व्याघात जो कछु औरते कीजै कारज और।
बहुरि विरोधी ते जबै काज ल्याइये ठौर॥

प्रथमको उदा०॥

(दो०) जिनहीं सों सब जगतको शीतल होत शरीर।
तिनहीं लगि जारतहियो घसिघनसार पटीर॥
सुखीहोत सब जगत है जिनको सौरभ पाय।
तिनहीं फूलनसों मदन कदन करतहै आय॥

टी०। यहां औरे ते और कार्य्य विरुद्ध है याते प्रथम व्याघात है॥

अथ द्वितीयव्याघात॥

टी०। बिरोधीते कार्य्य और ठौर में लानेको व्याघात द्वितीय कहते हैं॥

(दो०) जो हमको सुकुमारसी कहि छोड़त रघुवीर।
तौरहिहै सहिहै सुक्यों विरह अनलकी पीर॥

टी०। विरहागि की पीर कैसे सुकुमारि सहिसकैगी॥

(दो०) क्यों सहिहै सुकुमारि वह पहिलो विरह गोपाल।
जबवाके चित हित भयो चलन लगे तब लाल॥

टी०। सुकुमारि पहिलो विरह न सहिसकिहै॥

अथ गुंफा लक्षण॥

(दो०) कहिये गुंफा परंपर कारण की जब होत।
कारणमाला याहिको सब कविकरत उदोत॥

परंपरा जहँहेतु को पहिलो भेद सुजान।
उत्तर उत्तर पूर्व सों दूजो भेद बखान॥
उ०—सतसङ्गति वैराग्य है ताते मन सन्तोष।
सन्तोषहि ते ज्ञानहै होत ज्ञान ते मोष॥
योवनते छवि होति है छविते चाहत नाह।
होत नाहकी चाहते मन में बड़ो उछाह॥

द्वितीयभेद॥

उ०—(दो०) भई चन्दते चांदनी मनते उपज्यो चन्द।
मनउपज्योनिजप्रकृतितेसुधागरलकोकन्द॥
नरकहोतहै पापसों पाप सो दारिद जान।
दारिदहोत अदान ते दान भूप तू ठान॥
टी०। इहां उत्तर उत्तर पूर्व है याते दूसरो कारण मालाहै॥

अथ एकावली लक्षण॥

(दो०) ग्रहित मुक्तपद रीतिजहँ एकावलि तब मान।
दृगश्रुतिपै श्रुति बाहुपै बाहु जंघलौं जान॥

(क०) सुरसरि धारपै कगार बने कञ्चन के कंचन करारन पै पादप सुपासनी। पादप सुपासनी पै विमल तड़ाग दीसै विमल तड़ाग पै बनाई शम्भु आसनी॥ शम्भु आसनी पै शिवराम स्वच्छ सीढ़ी लसै सीढ़िन पै बिन्ध्यगिरि पूरण प्रकासनी। बिन्ध्यगिरि तामें विश्वकरमा विबर रच्यो बिबर के भीतर विराजै बिन्ध्यबासनी॥

टी०। इहां पद लेनो औ छोड़नो इस क्रम से एकावली जानिये॥

(स०) पीरहै दूर पपीहा रहौ जनिजाउ उहां जहां

स्वाती को तीर है । तीर है पौन तंबोलि पे कोकिल बौ-
रन गुञ्जत भौंर की भीर है ॥ भीर है धीरज राखिवेकी कविलाल वसन्त मनोज को वीर है । वीर है कोउ नहीं यहि गाउँमें कोऊ न काहू की जानत पीर है ॥

टी० । यह वाग्विदग्धा नायिका है नायक को सुनावै है ॥

(स०) चूनरी चारु चखोवनि तानिकै वानिकै मौहिं यशोमति सूनरी। सूनरी लागै बिलोके विना व्रजयोवन की अंकुरी उन ऊनरी ॥ ऊनरी सौतिनके उर में कविराम जू देखे बढ़ै दिल दूनरी । दूनरी लंकलखे मखतूनरी चूनरी चारु चुईपरै चूनरी ॥

टी० । इसी भांति एकावली जानिये ॥

अथ द्वितीयभेद उदा० ॥

(दो०) कहूँ कह्यो अधरान में तियमुख लाग्यो ठीक ।
तियमुखमें लागी पलक पलक न लागी पीक ॥

टी० । इस तरह भी एकावली जानिये ॥

अथसार अलंकार लक्षण ॥

(दो०) एक एकते सरस जहँ अलङ्कार तहँ सार ।
एक एकते घटि जहां दूजो भेद निहार ॥

उदा०--ऊखहु ते जु मयूख ते तेहिते अधिक पियूख ।
तेहिते बढ़ि अधरानरस मिलत न मनके रूख ॥
परबत ते सागर बड़ो तेहिते गगन बखान ।
ताहू ते आशाबड़ी जानत सकल जहान ॥

द्वितीयभेद ॥

उ०--(दो०) वहुआयुधके घातसों दुसह वज्र को घात ।

१--[illegible] बुरे [illegible] गुण [illegible] भांति किसी २ ने सार के चार भेद कहे हैं ॥

ताहूते दुस्सह समुझ खलमुख निकसी बात॥

(क०) नरते अधिक दौरें पक्षी अन्तरिक्षही में पक्षी ते अधिक दौरें बेग नद नीर के। नीर ते अधिक दौरें वंशी कहे सिंहबली सिंहते अधिक दौरें तीर महाधीर के॥ तीर ते अधिक दौरें पौन झकझोर और पौन ते अधिक दौरें नैनहुँ शरीर के। नैन ते अधिक दौरें मन तिहुँलोकन में मन ते अधिक दौरेंबाजी रघुवीरके॥

टी०। इहां एक ते एक घटिहै याते दूसरो भेदहै सरस भी है सके है॥

अथ मालादीपक लक्षण॥

(दो०) दीपक एकावलि मिलित मालादीपक नाम।
काम धामतियहिय भयो तियहिय को तूधाम॥

(क०) कानन के रँगे रँग नैनन के डोलो संग नासाअग्र रसना के रसही समाने हौ। और गूढ़ कहा कहौं मूढ़होय जानि जाय प्रौढ़ रूढ़ केशौराय नीके करि जाने हौ॥ तन आन मन आन कपट निधान कान्ह साँची कहो मेरी आन काहे को डेराने हौ। वेतो हैं बिकानी हाथ मेरे हौं तिहारे हाथ तुम बृजनाथ हाथ कौन के बिकाने हौ॥

टी०। अधीरा नायिकाहै नायक प्रति कहतीहैं कि हे कपट निधान कान्ह साँची कहो तुम्हें मेरी कसम। कानन कहे बनके रँगमें रँगेहो तो क्या मृगाहो या पशुहो। नैननके संगमें डोलते हो क्या सर्पहो। रसना के रसही में बिकानेहो तो क्या कुत्ता बिलारहो इससे गूढ़ और क्या कहूं कुछ मूढ़ तो हो नहीं जानि जाय वेतो सब मेरेहाथ बिकातीहैं अर्थात् मेरेरूप गुणकेआगेसब के गुण बिकेहैं और मैं तुम्हारे हाथ बिकीहूं पर तुम किसके हाथ.

बिकेहो सो कहो । कठोर वचन तें अधीरा नायिका है पाछे के चरण में मालादीपक है ॥

अथ यथा संख्य लक्षण ॥

(दो०) यथा संख्य वर्णन बिषे वस्तु अनुक्रम संग।
करि अरिमित्र विपत्तिको गंजन रंजन भंग ॥

(क०) प्यारो परोपायँ शीश नाय कै लजाय जिय औगुन की चीठ ईठ अब तो लपेटिये । लोयन ललौंहैं कीजै सोहैं सखी दूषत ये दुचित परी है द्वार बोरौ घर चेटिये ॥ करिये न फेर ऐसो जैसे रिसहोहि तोहिं लीजैरी मनाय याहि एतो ना झझेटिये । पलकापै नाह मनमान बंक भौंहन को लेटिये री भेंटिये री मेटिये समेटिये ॥

(क०) श्री प्रयागनारायण जी रावरी सुयशमाल विविधप्रकार जगै जगमें अमन्दसी । त्योंहीं सुप्रतापकी पुनीत थाप पेखियत लेखियत चित्त में विचित्र दृष्टि बंदसी ॥ कविकुलवृन्दन त्यों विवुध मलिन्दन सुजन सेवकन सतमित्रन सुछन्दसी । वन्दी कविकन्द अरविन्द मकरन्दसी अनन्द नँद नंदसी सुचन्दन सी चन्दसी ॥

टी० । इहां वस्तु अनुक्रम सङ्ग ते यथा संख्य अलङ्कार जानिये ॥

अथ पर्याय अलङ्कार ॥

(दो०) है पर्याय अनेककी क्रमसों आश्रय एक।
फिर क्रमते जब एक वह आश्रय होय अनेक ॥

प्रथम को उदा० ॥

(दो०) रह्यो कछू दिन समुद में पुनि सुरपति के धाम।
अब तिय तेरे अधरमें कियो सुधा विश्राम ॥

टी०। यहां अनेक को एक आश्रय है ॥

(क०) अलकैं विशाल ह्वैकै लंकलहरान लागी लंकते परानलागी द्युतिघन बालकी। लाली महुरेठी के अधर सरसान लागी अधरस वानलागी बतियां रसाल की॥ रघुनाथ छाती कुचरुचि दरशानलागी छवि सरसानलागी छाती मणिमालकी। रीझि आँखैं आनलागी आँखै बढ़ि कानलागी कानन सुहान लागी चरचा गोपाल की॥

(क०) कानलागी अँखियां मधुर मुसक्यानलागी कामलागी करन सकान लागी सबते। सैन ईश जान लागी लखे ते लजान लागी गुरजन भीरसों भजनलागी तबते॥ बतियां गढ़नलागी छतियां बढ़नलागीं प्रेम पाठ प्यारे के पढ़नलागी ढबते। नीकी लागी लगन ठगन मन आनलागी तन ज्योति योवन जगन लागी जबते॥

टी०। एक नायिका अनेक सर्वाङ्गों को आश्रय जानि करिकै वर्णन कियो याते पर्याय प्रथम है॥

(स०) बुद्धि विवेक बढ़ैलगो नित्त चढ़ैलगो चित्त में शील सुभायन। धर्म सुकर्म में प्रीति पगैलगी भर्म भगै लगी शर्म सुहायन॥ दान विधान में ध्यान लगै लगो ज्ञान जगैलगो मान परायन। कीरति कोरि लह्यो जबते पितुको पद पायो प्रयागनरायन॥

टी०। अनेक को एक आश्रयहै याते प्रथम पर्यायहै॥

अथ द्वितीय पर्याय ॥

अनेकको एक आश्रय यथा

(दो०) पहिले बसि वसुदेवगृह फिरि मथुरामें आय।
ते मोहन अब द्वारिका भये फिरत यदुराय ॥

अथ परिव्रत अलंकार ॥

(दो०) थोरो दै बहु लीजिये बहु दै थोरो लेय।
दोयभाँति परिव्रतकहैं परम सयाने लोय ॥

उदा०—जो पदार्थ योगी लहैं सहैं महादुख जौन।
सेवरी फलदै जूंठ सो लह्यो मोक्षपद तौन ॥

(स०) दीनदुखी कृशगात महा नहिं गेहहुमें जिनके कछु सामा। कोटि उपाय किये गृहलागत भोजन को भ्रमि आठहु यामा ॥ प्रेम पतिव्रत भामिनि बोलि कह्यो पिय जाहु जु द्वारिका धामा। तण्डुल मूठिदई हरिको सो लई बहु संपति विप्र सुदामा ॥

(दो०) अब कीजो चितकर चढ़ै बहुरि न काहू देहु।
यह सखि कौन सयान है चितदै चिंता लेहु ॥

अथ परिसंख्या लं० लक्षण ॥

(दो०) एक ठौर बर्जित किये दूजे थलमें राखि।
परिसंख्या ताकोकहैं सुकविनको मतभाखि ॥

उ०—केशनही में कुटिलता संचारिन में शंक।
लख्यो रामके राजमें यक शशिमाहिं कलंक ॥

(क०) खंभ नहिं फाख्यो फाख्यो वद्र हरणाकुशको बकको न हन्यौ बलहन्यो कंस मामाको। वारिधि न बाँध्यो बाँध्यो प्रणदेव छोरिबेको सिय न हरायो हख्यो शीश हेमधामाको ॥ कहै कविमल्ल बलिछल्यो न छला-

यो आप पूरण कियो सो हरिभक्तनके कामाको। गज न उबाख्यो सब जगको उबारकीन्ह्यो चांउर न चाब्यो चा- ब्यो दारिद सुदामाको ॥

अथ विकल्पा लंकार ॥

(दो०) यहकै वह कहनूति जहँ तहँ विकल्प ठहराय।
मैं बरण्यों ताते इहाँ सुकविनको मत पाय ॥

उदा०--मनुजजन्म जगपायकै जनि दिन वृथा गवाँय।
मृगछाला बाला कितौ अपने तन लपटाय ॥

(स०) दृगनासा नतो तप ज्वालखगी न सुगंध सनेहके ख्याल खगी। श्रुतिजीह विरागे न रागे रँगी मतिरामै रँगी औनकामै रँगी ॥ बपुमें व्रत नेम न पूरण प्रेम न भूतिजगी न त्रिभूतिजगी। धिकजीवन जन्म वृथा जिनके गरे सेलीलगी न नवेलीलगी ॥

टी०। किसी किसी ने इस भाँतिसेभी कहाहै ॥

(स०) संगरह्यो सुख संगलह्यो कबहूं न भयो कसुकै पल न्यारो। छोड़िके ताहि चल्यो पियचाहत कैसे बनै बलि कोऊ विचारो ॥ प्रीतमको अनुमाननिको हठ देखिबे है अबहोत सवारो। कैधौं अगार चलैंगे सखी यहि देहते प्राणके गेहते प्यारो ॥

अथ समुच्चयअलंकार लक्षण ॥

(दो०) दोय समुच्चय भाव बहु कहुँ उपजै यक अंग।
एक काज चाहे कियो है अनेक यक संग ॥

(क०) छलकै सखीरी सब अलकै सुधारि बुधि बलकै लैआई पास मदनगोपालके। कहै कवि दूलह विलोकि नँदनंदनको छाई धकधकी उर राधिका रसा-

नके॥ बिधीसी बँधीसी छीनिलीन्हीसी भुलानी सुधि अतिअकुलानी नेक निरखत लाल के। पीरी तन मण्डित अखण्डित रही री देखु वीरी अधखण्डित रही री मुख बाल के॥

टी०। इहां न वोढ़ा नायिका स्वतः संभवी वस्तु ते अलंकार एक नायिका में बहुत भाव हैं याते समुच्चय है॥

(स०) ऊंचे अटापै घटा लखैं दोऊ दुहून की बैरही रूप कलासी। बेनी बड़े बड़े बूंदन ते यक बारहिं बारिध कीन हलासी॥ चौंकि चली बिचली गचपै लचकी करिहाँ कुचभार छलासी। त्यों घनश्याम गही नवला फिरिकै गरलागि गई चपलासी॥

(क०) बैठी शीश मन्दिर में सुन्दरि सवारही ते दैकरि केवाँर देव छविसों छकति है। पीतपट लकुट मुकुट वनमाल गरधर वेषही को प्रतिबिंब में तकति है॥ होत न निशंक उतै अङ्कभरि भेटिबेको भुजनि पसारति समेटति जकति है। चौंकति चकति झझकति उझकति तऊ भूमि लचकति मुखचूमि ना सकति है॥

(क०) सोयगई सुन्दरि जगाई सब यामिनी की चौंकिपरी भोर शोर सुकहि बगारे सों। देखिकै उजेरी रही ठगिसी गोविन्द अरविन्द ठाकुरहि औनि आतप उतारे सों॥ कढ़ि ना सकति रति मन्दिर ते इन्दुमुखी गुर गुरजनन की लाज उरधारे सों। बकति सखीन को बिसूरति दुचित ठाढ़ी हरे हरे रोवति रिसाति प्राण प्यारे सों॥

(क०) जबते कुँवरकान्ह रावरी कलानिधान वाके

कानपरी कछु सुयश कहानी सी। तबहीं ते देखो देव देवतासी हँसतही खीझति सी रीझति सी रूसति रिसानी सी॥ छोही सी छली सी छीनि लीन्हीं सी छकीसी छीन जकी सी टकीसी लागी थकी थहरानी सी। बीधी सी बँधी सी बिषबूड़त बिमोहत सी बैठी बाल बकत बिलोकत बिकानी सी॥

टी०। इहां एक नायिका में बहुत भाव कहे गये इससे समुच्चय अलंकार है॥

अथ कारक दीपक अलं०॥

(दो०) कारक दीपक कहत हैं क्रमसों भाय देखाय।
मुदित गई आई सरुख बैठी नैन नवाय॥
बतरस लालच लाल के मुरली धरी लुकाय।
सौंहन त्रासति मुखनटति देनकहै नटिजाय॥

टी०। इन सब दोहन में क्रमते अनेक भाय हैं याते कारक दीपक है॥

अथ समाधि लक्षण॥

(दो०) सो समाधि कारज सुगम और हेत मिलिहोत।
उतकंठा तिय को भई अथयो दिन उद्दोत॥
बंक लङ्कगढ़ तोरिबो चाह्यो श्री रघुराय।
तौलौंनिजमन्त्रिनसहितमिल्योविभीषणआय॥

(क०) तौलौं हौं न बोली जौलौं चातक मयूर बोले कामकी मरोर कोर तनकौ न खोली मैं। खुलिरही खूबी खुशबोयोंकी लहरि लाल शीतलसमीर डोले तनकौ न डोली

१-समुच्चय और कारक दीपकमें इतना भेदहै कि समुच्चयमें एकै साथही बहुत भाव कहे जाते हैं और कारक दीपक में क्रमसे कहे जाते हैं॥

में ॥ सुकवि निहाल मैन मनते उमगि आयो फूलि उठे उरज उतंगयुग चोली में। कूकि उठी कोयल कसाइनि कहूं ते आनिदेखि घनश्याम घनश्याम तोसों बोली में॥

(स०) सातहु दीपन के अवनीपति हारिरहे जिय में जब जाने। बीसबिसे व्रत भंगभयो सो कहौ अब केशव को धनु ताने॥ शोक कि आगि लगी परिपूरण आइगये रघुनाथ बिहाने। जानकि के जनकादिक के सब फूलिउठे तरु पुण्य पुराने॥

टी०। जब सब राजा धनुष उठाय हारिगये तब जनकादिकों के शोक की आगि उठी तब रामचन्द्र घनश्याम तद्वत् बुझायबे आयगये कारज सुगम भयो याते समाधि अलंकार जानिये॥

अथ प्रत्यनीक अलं० लक्षण॥

(दो०) प्रत्यनीक सो प्रबलरिपु ताहित सों करिजोर।
चन्द समीपी श्रवणपै चन्द चढ़यौ करिदौर॥
तौ मुख छविसों हारि विधु भयो कलंक समेत।
शरदइन्दु अरि बिन्दमुख अरि बिंदन दुखदेत॥
हर जारयो तारयो मही भयो सुप्रेत सदंभु।
फिर फिर जारत मोहियो जानि उरोजन शंभु॥

टी०। काम महादेवसे नहीं जीता तब उसीरूप वाले को जरावता है किसी २ ने ऐसा भी वर्णन किया है कि जब उससे उपाय न चले तब उसके हेती से बैर लेवै तहीं प्रत्यनीक है॥

अथ काव्यअर्थापत्ति अलं०॥

(दो०) काव्यअर्थ पति मुख्यमें गौणजु बरणतजात।
मुखजीत्यो वा चन्दको कहा कमलकी बात॥
भृगुनन्दन सांचो कहत भूमिदेव शिरमौर।

शिरकाट्यो निजमातको कहाजगतजन और ॥
अपने उरको भेदिकै निकरे हैं कुच बाल।
भेदत औरन के हिये अचरज कहा विशाल ॥

टी०। इन सब दोहन को भाव मुख्य गौण है ॥

अथ काव्यलिंग लक्षण ॥

(दो०) समर्थ नीय पद अर्थको जहां समर्थ न होय।
काव्यलिङ्ग तासों कहैं परम पुराने लोय ॥

उदा०–जनकसभासदसाखिनकहिसीयगुणनकीखानि।
गौतमतियगतिसुरतिकरि नहिंपरसतिपदपानि॥

(स०) अतिक्षीन मृणाल के तारहुते त्यहि ऊपर पावँ दै आवने है। सुई बेहते द्वार सकीम तहां परतीत को टांड़ो लदावने है ॥ कवि बोधा अनी घनी नेजहु ते चढ़ि तापै न चित्त डगावनेहै। यह प्रेमको पन्थ कराल महा तरवारि कि धार में धावने है ॥

टी०। इहां प्रेमको पंथ समर्थनीयको तरवारिकी धारको धावनो समर्थ न कियो याते काव्य लिंग है ॥

(स०) झांकती का है झरोखेलगी लगलागिबेकी इहांभेल नहीं फिर। त्यों पद्माकर तीषे कटाक्षन की सरिकोशर शेल नहीं फिर ॥ नैननही की घलाघली में घने घायनको कहूं तेल नहीं फिर। प्रीति पयोनिधि में धँसिकै हँसिकै कढ़िबो हँसी खेल नहीं फिर ॥

टी०। इहां प्रीति पयोनिधि समर्थनीय पदको न निकासिबो समर्थ न कियो कि समुद्र ते निकसनो मुश्किल है ॥

(दो०) मोहिं करत कत बावरी किये दुराव दुरैन।
कहे देत रँगराति को रँग निचुरत से नैन ॥

टी०। इहां रँग निचुरत से नैनन में राति को जगना समर्थ न कियो। अधीरा वा खंडिता नायिका है॥

(दो०) धूरि जु डारत शीश पर कहु रहीम केहिकाज।
ज्यहिरजं ऋषि पत्नीतरी सो ढूंढ़त गजराज॥

अथ अर्थान्तरन्यास लक्षण॥

(दो०) एक समान्य विशेषहै द्वितिय विशेष समान्य।
यह अर्थान्तरन्यासको कह्योकविन मतठान्य॥

(स०) दीन्हो बुलाय जबै उनने तब गाउँ कहा सिगरो बहिरोतो। नन्दहुते औ हुती यशुदा दर कुल्यजुरो सिगरो अहि रोतो॥ नाथजू साथहती तुमहूं हमहूं जब ज्वाब करो गहि रोतो। घेरघरा घर माचो फिरै सखि हौं न हगाहरिको पहिरोतो॥

टी०। इहां सबके आगे लेनो सामान्य ते विशेष घर घर चवाव चलने लगो है सखी होनदे अब तो पहिरो विशेष याते अर्थान्तरन्यास है॥

(स०) आई हुती वह सेजको मोहनी सो मनमोहन रीझि खिझाई। वाखुनसाय गई तौ कहा पै नहीं तुमहूंसों कछू बनि आई॥ ठाकुर रीतितौ ऐसी चलौ ज्यहि प्रीति बढ़ै दिन दूनी सवाई। राखिबो तौ कठिनाई नहीं रसु राखि बिदा करिबो कठिनाई॥

टी०। राखने तौ सभी जानते हैं यह सामान्य रस राखनो विशेष कह्यो॥

अथ द्वितीयविशेषतेसामान्य॥

(स०) उमड़े नभ मण्डल मण्डित मेघ अखण्डन धारन सों मचिहै। चमकैगी चहूँदिशि सों चपला अ-

बला कहु कौन कला बचिहै ॥ अकुलायमरैगी बलाय ममारख आजु उपाय यहै रचिहै । पहिले अँचवैगी हलाहल को पुनि केकी कोलाहल कै नचिहै ॥

टी० । प्रोषित पतिका नायिका है । पहिले जहर पियैगी सो विशेष पीछे मोर बोलने नाचने पावैंगे यह सामान्य है ॥

(क०) बड़ेनसों जानपहिंचान तौ रहीमकहा जोपै करतार हौंन सुखदेन हारहै । शीतहर सूरजसों प्रीति कीन्ही कमलन तऊ तौ कमल बनजारत तुषारहै ॥ उदधिके बीचबस्यो शङ्कर के शीशलस्यो तऊ न कलंक खस्यो शशिकोसदार है । बड़े रिझवार हैं चकोर दरबार आय सुधाधर प्यार तोपै भाषत अँगार है ॥

टी० । इहां बड़े सूरज चन्दादि तिनसों प्रीति विशेष ते सामान्य । करतार देनहार । नहीं तो नहीं मिलतो सामान्य ताते अर्थान्तरन्यास है ॥

(स०) मीन अधीन रहै निशिबासर वारिधि नीरजऊ अतिखारो । दीपक देखे जरै जो पतंग मुरै नहिं अङ्ग जरावत सारो ॥ रागके रङ्ग कुरङ्ग बँध्यो गहिबान कमानसों पारधिमारयो । नेकलगेते छुटै नहिं कैस्यहु नेहनिगोड़े को नातहि न्यारो ॥

टी० । मीन पतङ्गादि विशेष ते नेहको नातो सामान्य दृढ़ कियो ॥

(स०) रावरे नेह कि लाजतजी अरुगेहके काज सबै बिसराये । डारि दियो गुरुलोगन को डरु गावँ चवावमें नावँ धराये ॥ हेत कियो हमजो तौकहा तुमतौ मतिराम सबै बिसराये । केतिकौ कोऊ उपाय करै कहुँ होतहैं आपने पीउ पराये ॥

टी० । किसी २ कवि ने अर्थान्तर न्यासके औरभी चारिभेद कहे हैं अर्थात् १ युक्त २ अयुक्त ३ युक्तायुक्त ४ अयुक्तायुक्त ॥

युक्त लक्षण ॥

(दो०) जैसो जहाँ न बूझिये तैसो तहां सुआनि ।
रूपशील गुण युक्तिबल ऐसो युक्तबखानि ॥

(क०) गरुवो गुरूको दोष दुखित कलङ्ककरि भूषित निशाचरी न अङ्कनि भरत हैं । चण्डकर मण्डल में लैलैतो प्रचण्ड कर केशौदास मास मास प्रति निसरत है ॥ विषधर वन्धु है अनाथन को प्रतिवन्धु विषको विशेष वन्धु हियो हहरत है । कमलनयन कीसों कमलनयन मेरे चन्द्रमुखी चन्द्रमासों न्यायही जरत है ॥

अथ अयुक्त लक्षण ॥

(दो०) जैसो जहां न बूझिये तैसो तहां जो होय ।
केशवदास अयुक्त कहि वरणत है सबकोय ॥

(क०) केशौदास होतमार सीरिये सुमार सीरी आरसीलै देह देखि ऐसी है जुरावरी । अमल बतालासे हैं ललित कपोल तेरे अधर तमोल धरे दगति लचावँरी ॥ एही छवि छकिजात क्षन में छबीले लाल लोचन गवाँर छीनिलेहैं इत आवरी । बारबार बरजेते बारबार जातिकत मैलेबार वारौं आनि वारीहै तू बावरी ॥

अथ अयुक्तायुक्त लक्षण ॥

(दो०) अशुभै शुभह्वै जात जहँ केहूँ केशव दास ।
यहै अयुक्तायुक्त कहि वर्णत बुद्धि विलास ॥

उदा०-(स०) पातकहानि पिता सँग हारिबो गर्व के शूलनसों डरियेजू । तालनिको बँधिबो बधरोरको

नाथके साथ चिताजरियेजू ॥ पत्र फटैते कटै ऋन केशव कैसहुँ तीरथमें मरियेजू। नीकीलगैं सदागारी सगेन की डांड़भलो जो गया भरियेजू ॥

अथ युक्तअयुक्त लक्षण ॥

(दो०) इष्टै बात अनिष्ट जहँ ऐसेहू ह्वैजाय।
सोई युक्त अयुक्त कहि वर्णत सब कविराय ॥

उदाहरण-(स०) शूलसे फूल सुबास कुबाससी भाकसी से भये भौन सभागे। केशव गावँ महावन सों ज्वरसी चढ़ी जोन्ह सबै अँग दागे॥ नेह लग्यो उरनाहर सों निशिनाह घरीक कुहू अनुरागे। गारी से गीत बिरी विषसी सिगरेई शिंगार अँगारसे लागे॥

पाप कि सिद्धि सदा ऋण वृद्धि सुकीरति आपनि आप कहे की। दुःख को दान रु सूतक न्हान जुदासी की संतति संतति फीकी। बेटी को भोजन भूषण रंडको केशव प्रीति सदा परतीकी। युद्धमें लाज दया अरिके उर ब्राह्मण जाति सों जीति न नीकी ॥

अथ द्वितीय भावसों अर्थांतरन्यास ॥

उदा०-(क०) गेहिन दरिद्र गृहत्यागिन विभूति दीन्ह्यो पापिन प्रमोद पुण्यवन्तन छलोगयो। ग्रसित ग्रहेश कियो शनिको सुचित्त लघु व्यालन अनन्द शेश भारन दलो गयो॥ गुणिन गरीब कै फिरावतहैं द्वारद्वार गुणते विहीन तिन्हें बैठिबो भलो दयो। काह काह कहौं तेरी चूक एक आनन सों नाम चतुरानन पै चूक तें चलोगयो॥

टी०। इहां जैसो जहां चाहिये तैसो नहीं याते अयुक्त है॥

(क०) अनलशिखा में कऱ्यो धूम मलिनाई कीन्ह्यो अम्बर निकाईको बिमल बारिबर में। कोमल कमल नाल कण्टकनिहारो कीन्हो जलनिधि खारो यों निहारो भूमि थर में॥ बैनकहें जगत कुबोली ठहरै है घनी राम कोऊ काहू को न जानै कछू मरमैं। बंक बुधि विधिकी निशंक कहियत कान्ह पंक कीन्ह्यो सर में कलंक सुधाधर में॥

(स०) काबुल जाय के मेवा रची अरु आपने गावँ करील लगाये। व्यंजन त्यागि सुयोधनके अरु दासके साग अलोनहुँ खाये॥ नेह कियो कुबरी सों घनो अरु राधिकाको तजि द्वारिका धाये। ठाकुर ठाकुर की न कहौं सब ठाकुर चूतिया होतहि आये॥

टी०। यहांभी वही अयुक्त को भाव जानना चाहिये॥

अथ विकस्वर लक्षण॥

(दो०) विकस्वर होत विशेष जब फिरि सामान्य विशेष।
हरि गिरि धाऱ्यो शतपुरुष भारसह्यो सब शेष॥

टी०। इहां हरि गिरि धाऱ्यो यह विशेष सतपुरुष ऐसा करते ही हैं यह सामान्य शेष भारसह्यो यह विशेष है याते विकस्वर है॥

भावी बड़ी सुप्रबल है तजत न अपनो अंग।
रामचन्द्र धावत भये कनक मृगा के संग॥

(स०) नागरहौ गुन आगरहौ रिझवार ज्यों रीझत बात सुनाये। एकनिदान को जानै नदान सुयाते सबै गुण देत बहाये॥ होय जऊ सबही गुणपूर तऊ इक औगुण राखत छाये। चातुरता कवितादिक के गुन के गण दारिद देत दबाये॥

टी०। इहां नागर गुनागन विशेष ले और सबै बातैं सामान्य त्यहिते दारिद दबावनो विशेष याते विकस्वर है ॥

(क०) कौरौ दल पांडव सगरसुत यादौ जेते जा-तहू न जाने ज्यों तरैयाँ परभातकी। बलि वेणु अंबरीष मानधाता प्रह्लाद कहांलौ गनावों कथा रावण ययात की ॥ तेऊ न बचन पाये काल कौतुकी के हाथ भाँति २ सेना रची घने दुख घातकी। चारि चारि दिनाको चबाव चाहे तौन करै अन्त लूटि जैहे जस पूतरी बरातकी ॥

भूषण वसन बेशरतन अनेक जाति घोड़े पील पाल-की अनूप छवि धामकी। कहा नरनाह कहा भये बाद-शाह कहा शाहन के शाह जो न जानै परिणाम की ॥ वेनी कविकहै खाल फालमें बितावै दिन पालै खल खाल को पखाल जैसे चामकी। मनकी मनहिं रहिजातीं अभि लाखैं जब मूँदिगईं आँखैं तब लाखैं केहि कामकी ॥

टी०। इहां भूषण आदि विशेष ते शाह बादशाह आदि सा-मान्य ते जब आँखैं मूँदीं तब सब वृथा ह्वैजाना विशेषहै। शान्त रस निर्वेद स्थायी है।

अथ संभावना लक्षण ॥

(दो०) जोयों जोयों होय तौ संभावना विचार।
जोयों होय न होय तौ द्वितिय भेद निरधार ॥

अथ प्रथमको उदाहरण ॥

(क०) सांझ के सलोने श्याम सबुज सुरंगन सों कैसे ह्वै अनंग अंग अंगन सतावतो। कहै पदमाकर झकोर झिल्ली शोरन सों मोरन की महत न कोऊ मन लावतो ॥ काहू विरही की कही जोपै मानिलेतो दई

जग में दई तौ दया सागर कहावतो। विरह बनावतो न पावस बनावतो जो पावस बनायो तौ न विरह बनावतो॥

टी०। विरहिनी नायिकाहै। इन भावोंमें भी सम्भावना दर्शै है॥

अथ द्वितीय भेद॥

(श्लो०) असितगिरिसमस्यात्कज्जलंसिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखालेखनीपत्रमुर्वी। लिखतियदिगृहीत्वांशारदासर्वकालंतदपितवगुणानामीशपारंनयाति॥

टी०। ऐसे भावोंमें भी सम्भावना है॥

(दो०) बड़े कहावत आप सो गरुये गोपीनाथ।
तौ बदिहौं जो राखिहौ हाथनि लखि मनुहाथ॥

अथ प्रौढ़ोक्ति लक्षण॥

(दो०) प्रौढ़ उक्ति उतकर्षता बरणै हेत अहेत।
यमुना तीर तमाल से तेरे बार असेत॥

(क०) श्याम घन घटन करी है निशा श्याम तामें श्याम अंगराग श्याम श्याम भरिदई है। श्याम कर्ण फूल श्याम पहिरे दुकूल श्याम भुजमूल गुहिकै भुंजन भरि लई है॥ मरकत मणिही को कियो गहनो है श्याम बिधि मरकत मणिही सो निरमई है। आजुलौ तौ श्यामा तुम झूठही कहावतही श्यामही पै आई आज सांची श्यामा भई है॥

(स०) चंदन चारु घनो घनसार सुहारहु हीरन के छबि छैहै। बेला चमेलिन फूलनके मदनेशजु भूषण अंग हितैहै॥ सारी सपेद गुहे मुकता नखतावलि भेद यहै अधिकैहै। जोन्ह में जोन्ह छटा में छटा निशि चंद में चंदमुखी छपि जैहै॥

सारी जरी जरतारी अनूप किनारीचहूं मुख मंडल लोने। केशरि राग कियो अँग में द्युति दीप ज्योंदीपति भूषण सोने ॥ ज्योति जवाहिर बाहेर ये मदनेश न आतप बाहेर होने। जोनन योग अरी दिन में सिखि कोन पै जात बशीकरटोने ॥

टी०। ये त्रिधाभिसारिका अर्थात् कृष्णाभिसारिका शुक्लाभिसारिका पीताभिसारिका इनमें अधिकाई अधिकार है ॥

अथ मिथ्याध्यवसितलक्षण ॥

(दो०) मिथ्याध्यवसित झूठहित कहैजु झूठी रीति।
धरैजु माला नभ कुसुम करै नगर त्रिय प्रीति ॥

(क०) परै ऊपरारध ते पेखे है जनम अंध बधिर सुनै है ताहि धरि चितधीर जू। लिखी बेद पाँचवें उनीसवों पुरान शशी सींगकी कलम मसी तृष्णा मृग नीरजू ॥ रावरी अकीरतियों राजे महिमण्डल में परम पुनीत एहो रघुकुल वीरजू। बाँभन के बेटे गूंगे गावें स्वर आठवें में कछुई के छीर छीर नीरधि के तीरजू ॥

अथ ललित लक्षण ॥

(दो०) ललित कह्यो कछु चाहिये ताहीको प्रतिबिंब।
सेतु बांधि करिहो कहा अब तू उतस्यो अंब ॥

(चौ०) तृषित बारि बिन जो तन त्यागा।
मुये करहि का सुधा तड़ागा ॥
का बर्षा जब कृषी सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने ॥

(दो०) चाख्यो चाहत अमृत फल बिषके बियन बवाय।
सोयो चाहत नींद बश सेज अँगार बिछाय ॥

अथ प्रहर्ष लक्षण ॥

(दो०) तीनि प्रहर्षन यतन बिन बांछित फल जो होय।
बांछितफल तेअधिकफलश्रमबिनलहियतसोय॥
शोधत जाके यतनकै बस्तु बढ़ैकर सोय॥

अथ प्रथमभेदको उदाहरण ॥

(क०) हँसत खेलत खेल मंदभई चंद द्युति कहत कहानी अरु बूझत पहेली जाल। केशौदास नींद बश अपने २ घर हरे हरे उठिगये बालिका सकल बाल॥ घेरि उठे गगन सघन घन चहूं ओर उठि चले कान्ह धाय बोली उठि त्यहि काल। आधी राति अधिक अँध्यारेमाहिं कैसे जैहो राधिका कि आधी सेज सोय रहो प्यारे लाल॥

टी०। इहां वांछित फलभयो याते प्रहर्षण को प्रथम भेदहै॥

अथ द्वितीय प्रहर्षण॥

वांछित फलते अधिक फल यथा॥

(स०) लोग बरातगये सिगरे तुम राति जगैकोचली सब कोऊ। सुंदर मंदिर सूनो इहां अबको रखवार है ताहि न जोऊ॥ सासु कही तबहीं लखियों लहुरी दुलही घरही रहै सोऊ। फूलिगये सुनि बातन गात समात न कंचुकी में कुच दोऊ॥

टी०। इहां दुलहीके मनमें रही कि हम कहीं मिलैं तौलौ घरही में रहना सूनाकरि वाञ्छित फलते अधिक फलभयो॥

(स०) श्रीयुत प्रागनरायण के यह नाम कि बन्दि बिलास बनाई। जाय समीप सुनाई यथा कविता विधि

की यहि में चतुराई ॥ रीझे बनाय किया परमादर काह कहों गुणगाहकताई। चाहते चौगुनी संपति दै अतिशै पति दै तब कीन्ही बिदाई ॥

अथ तृतीय प्रहर्षण ॥

(दो०) बोलि पठायो दूतिका हरिहि बुलावन काज।
तौ लौं वा बिच मिलिगये नँद नन्दन ब्रजराज ॥
सगुनहोत बीते अवधि ब्राह्मण पूंछन जात।
तौलौं पिय आये कह्यो द्वारे काहूं बात ॥

टी०। जिस वस्तुको उपाय कियो वह मिलि गई यह तीसरो भेद है ॥

अथ विषाद लक्षण ॥

(दो०) जो विषाद चित चाहते उलटो कछु ह्वै जाय।
नीबी परसत श्रुतिपरी चरनायुध धुनिआय ॥

(स०) भेंटतही सपने में भटू चप चञ्चल चारु अरेके अरेरहे। त्यों हँसिकै अधरानहूंपै अधरान धरेते धरेके धरेरहे ॥ चौंकि नवीन चकी उचकी मुखस्वेद के बुन्द ढरेके ढरेरहे। हाय खुलीं पलकैं पलमें मनमें अभिलाष भरेके भरेरहे ॥

(क०) सोवत स्वपन बीच साँवरे कि टेर सुनी बाढ़ी उर उमग उछाह हिय में नई। हौंतौ दौरि पौरि लौं पसारी बाँह मिलिवे को मोहन जू मोहनी बिलोकनि चितै दई ॥ बस्तीलाल ताहीसमै प्रेमको प्रवाह बढ़्यो कामके करत ताते जानौं ना कहा ठई। जौलों हिये हँसिकै लगावैही रसिकलाल तौलों नैन छोंड़िनींद बैरिनि बिदाभई ॥

आये कान्ह द्वारपर राधे उठि वेगि देखौ काहूं यह बात कही आनँद सुधामई। केतकौ दिनाकी देह तलफ मिटाइबे को होहूं परसाद प्यारो देखन तहांगई॥ झूठो सुख सपनेहू करन न पायो आली दई निरदई ऐसी तुरत दगादई। जौलौं वह नैन भरि मूरति निहारि देखौं तौलौं नैन छोंड़ि नींद बैरिनि बिदाभई॥

गौरि पूजिबेके मिसकरिकै सखीन सब अङ्ग२ भूषण वसन पहिरायो आय। तैसे तर तर तर अतर सुगन्ध सींचि केशरि कपूर चूर चन्दन लगायो चाय॥ लाल जी कहत केलि मन्दिर हँसाहँसी के पलँग बिछाये छाये परदे सोवाये लाय॥ जौलौं हिय बालको लगायवो चहत तौलौं गजब गवाँर गैर गज्जर बजायोहाय॥

अथ उल्लास लक्षण॥

(दो०) गुन औगुन जब एकते और धरै उल्लास।
सोऊ चारि * प्रकार को वर्णत कवि मतिरास॥

एक के गुणते और को गुण यथा॥

(स०) गुच्छन के अवतंस लसै शिखि पच्छन अच्छ किरीट बनायो। पल्लव लाल समेत छरी करपल्लव से मतिराम सुहायो॥ गुञ्जनके उर मंजुलहार निकुञ्जन ते कढ़ि बाहेर आयो। आजको रूप लखे ब्रजराज को आँखिन को फल आजुहि पायो॥

टी०। नायक के सुन्दरता गुणसे नैनको सुखहोनो गुण॥

---

* १—एक के गुण ते और को गुण. २—एक के दोष ते और को दोष. ३—एक के गुणते और को दोष ४—एक के दोष ते और को गुण॥

एक के दोषते और को दोष यथा ॥

(क०) जाके निशि बासर बसे हौ बास घनश्याम हम बास बासमें दरश लहियतुहै। लाज ना लगति वाहि छ्वैकरि छुवत मोहिं कालिदास एतो अपराध सहियत है॥ जाहु जाहु बलिजाहु वाहीके बसोहो पास वाही हमैं रावरो सोहाग चहियतुहै। कुच कुलटा के जिन करन ते गहे तिन करन ते हाय मेरे पायँ गहियतुहै॥

टी०। इहां नायक के दोषते नायिकाको निरादर होना दोष। प्रौढ़ा खण्डिता अथवा अधीरा नायिका है॥

एकके गुणते औरको दोष॥

(स०) वरुणीनमें नैनभकें उझकें मनौ खंजनमीन के जालेपरे। दिन औधिके कौलों गनौं सजनी अँगुरीन के पोरन छालेपरे॥ कहि ठाकुर कासों कहा कहिये हमैं प्रीति किये के कसालेपरे। जिन लालन चाहकरी इतनी तिन्हैं देखिबे को हमैं लालेपरे॥

टी०। इहां प्रीति करनो गुण तहां कसालोपरनो दोषहै॥

और के दोषते औरको गुण॥

(दो०) बन में बन जारतहुती है बँसुरी दुखदानि।
गाअँन जानतती सबै यहै लाभ जियजानि॥

(क०) झाँकी फूलबाग की झरोखे अनुराग भरी देखे तहां आनि ऐसे चरित बिहारीके। कहै कविदूलह बखानत बनै न जैसे लहलहे लोचन ललित सुकुमारीके॥ फूले अंग अंग उठे उरज उतंग फैली छबिकी तरंग मुखचन्दकी उज्यारीके। ज्यों ज्यों परनारी पिय लेत भरि २ गोद त्योंत्यों होत परमप्रमोद प्राणप्यारीके॥

टी०। इहां परनारीको पिय गोदभरनो दोषते प्रमोद होनों गुण नायिका को याते चौथो उल्लास है॥

अथ अवज्ञालंकार लक्षण॥

(दो०) होत अवज्ञा और के लगै न गुण अरु दोष।
परशि सुधाधर किरण ते खुलेन पङ्कज कोष॥

(स०) बैठो उलूक कहूँ छिपिजाय कहा गुण ज्ञानै प्रभाकर केरो। पीनस वारो कहालैकरै किन घोरि धरौ घनसार घनेरो॥ बैठि अबूझन के ढिगमें अपनो गुण जात वृथा बहुतेरो। आँधरे साहब की सरकार कहाँलौ करै चतुराई चितेरो॥

टी०। इहां सब ठौरन में किसीका गुण दोष किसीके न लगो याते अवज्ञा है॥

अथ अनुज्ञा लक्षण॥

(दो०) होत अनुज्ञा दोषको जो लीजै गुणमानि।
होहि विपति जामें सदा हिये बसै हरिआनि॥

(क०) हैं तो रावरेई हम ओई उन्हें राज धन दीन्हों हमैं पेटकाज पायँ गहिबेपरे। रावरे लुटाये लूटै गाढ़ या अपाढ़ पर्‍यो ठाकुर कृपाते रोज राजी रहिबेपरे॥ झूठो कै बखान बिन मानमद अंधन को झूठे रूठे बचन अ-योग सहिबेपरे। एहो माता लछिमी तिहारे हेत पाय हमैं बड़े २ चूतिया चतुर कहिबेपरे॥

टी०। इहां मदअन्ध चूतियादोषते चतुर कहनो गुणमान्यो॥

अथ लेशअलंकार लक्षण *॥

(दो०) गुण में दोषरु दोषमें गुण कल्पना सुलेश।

* लेश के चारिभेद यथा-१ गुणमें दोष. २ दोषमें गुण. ३ गुणमें गुण. ४ दोषमें दोष॥

शुक यहि मधुरीबानिते बन्धनलह्यो विशेश ॥
रूख रूखके फलन को लेतस्वाद मधुकाक।
बिन यह मधुरीबानि ते निधरक्क डोलतकाक ॥

टी०। शुकमधुरीबानि गुणते बन्धन लह्यो याते गुण में दोष कल्पना और काक कठोरवाणी दोषते निधरक फिरनो गुण कल्पना ये लेशके दूनौं भेदहैं ॥

अथ प्रथमलेशगुणमेंदोष ॥

(क०) देखे अनदेखे सुखदानि भये दुखदानि सुखतन आँशू सुख सोइबो तरे परो। पानी पान भोजन सजन गुरजन भूल्यो देव उरजन लोग लरन खरेपरो ॥ लागैना उपाय कल परत न एकौ छन छूटि गयो गेह नयो नेह नियरेपरो। होतोजो अजान तौन व्यापती अनेक व्यथा येरे जियजान तेरो जानिबो गरेपरो ॥

टी०। इहां जानिबो गुणते गरे परनो दोष कल्पना है ॥

अथ द्वितीयलेशदोषमेंगुण ॥

(स०) रसबोलनि चारु चितौनि हँसी तरुणाइन के गुणजानि लिये। सो अचानक मंडन लोगन देखि दुरैबे परे अब गात नये ॥ नितही उठि जेठी बड़ीन पै जाय सयानपही सिखिबेको भये। अब क्योंकर खेलन जैये भटू सुतौ खेलिबे के दिन खेलिगये ॥

टी०। इहां खेलिबे वाले दिन दोषते सयानप सिखनो गुण कल्पना ॥

अथ तृतीयलेशदोषमेंदोष ॥

(क०) ये अलि इकंत पाय पायँन परेहैं-आय हौं न तब हेरी या गुमान बजमारे सों। कहै पदमाकर वै

रूठिगे सु ऐसी भई नैनन ते नींद गई, दाह के दवारेसों॥ रैनि दिन चैन है न मैन है हमारे वश ऐन मन सूखत उसास अनुसारेसों। प्राणनकी हानिसी देखानसी लगी है हाय कौन गुण जानि मान कीन्ह्यो प्रानप्यारे सों॥

अथ चतुर्थलेशगुणमेंगुण॥

(क०) वैसी मृदुबोलनि बिलोकनि मधुर वैसी कोकनि कथारस में वैसिये फँसतजात। वैसिये सुधासे सोधे सुन्दर सुभाय सब वैसे हाव भावन में रस बरसत जात॥ वैसिये सु हिलि मिलि वैसे पिय संग अंग मिलत कछू न मिस पीछु उकसत जात। वैसिये लसत जात वैसे हुलसतजात हँसत त्यों जात प्यारी कंचुकी कसतजात॥

टी०। इहां सर्वत्र वाही गुण सों वाही को गुणहै॥

अथ मुद्राप्रस्तुतलक्षण॥

(दो०) मुद्राप्रस्तुत पद विषे औरे अर्थ प्रकास।
अली जाय किन पीव तहँ जहां रसीली बास॥
कोटि यतन कीन्हें ललन नेकन छाँड़त मान।
पुलकि उठी व्रजनागरी दोहा कहे सुजान॥

टी०। प्रस्तुतपद में दोहाको अर्थ हाहा करनो प्रकाशभयो॥

(क०) परवीन प्रीतमको कैसे उड़ि मिलौं आली सो मति बिचारु जामें नेकुजक परैरी। अंबुधरे नैन जीव पलकन चैन याही लखि कविकुल कौनवर्णन करैरी॥ परी नेहवश निशा कैसेके विहांत चन्द हियराहुरष कहु कैसे धीरधरैरी। जाके अंग अंगन में वर्णत अनंग आग वाकेतन तापके संताप जग जरैरी॥

टी०। इहां रवि सोम कुज बुध जीव कवि शनि राहु केत इन नवोंग्रहों के नाम अनुक्रम ते कहे हैं ॥

अथ तद्गुण लक्षण ॥

(दो०) तदगुण तजिगुण आपनो संगति कोगुणलेय ॥
बेसरि मोती अधर मिलि पद्मराग छविदेय ॥

(स०) जाहिरै जागतिसी यमुना जब बूड़ै बहै उमहै वह बेनी। त्यों पद्माकर हीरके हारन गंगतरंगन को सुख देनी ॥ पायँनके रँग सों रँगि जातही भाँतिन भाँति सरस्वति श्रेनी। पैरै जहांईजहां वह बाल तहाँतहँ ताल में होत त्रिबेनी ॥

मुख चाँदनी चारु प्रकाशनतेनिशि द्योस उजास बढ़ोईरहै। तनकी मृदुमंजु सुबासनते भरि भौन सुवास मढ़ोईरहै ॥ घनश्याम निकुंज लेवावन को मन मैनउछाह ढढ़ोई रहै। बलि वा अँगनापगनारँग सों अँगना रँगना सो चढ़ोईरहै ॥

टी०। अभिसारिका नायिका है इन भावों से भी तद्गुण अलङ्कार जानना चाहिये ॥

अथ पूर्वरूप अलंकार लक्षण * ॥

(दो०) पूर्वरूपले संग गुण तजि पुनि अपनो लेत।
दूजेगुण जबना मिटै किये मिटन के हेत ॥

अथ प्रथम ॥

(दो०) पाणि लेत सुखदानि तिय मुकता विद्रुमकीन।
चषपुतरी गुंजाकियो हँसि मुकता करिदीन ॥
मुकत हार हरिके हिये मरकतमणिमय होत।

* १-संगकागुण लेकर फिरउसे छोड़अपना पूर्वरूप होना पहिला भेद है ॥
२-मिटने के लिये उपाय करै परन्तु पूर्वगुण नों मिटै वह दूसरा भेद है ॥

पुनिपाकतरुचिराधिका मुखमुसकयानिउदोत॥

टी०। हरिके गलमें मुकताकी माल सो उनके रंगते मर्कत-मणि द्युतिभई फिरि राधिका मुसक्यानि ते मुकता की माल होती भई॥

अथ द्वितीय॥

(दो०) गई कुंज मनभावती अथैगयो जब चन्द।
जोन्ह उदित ह्वै मुखप्रभा दूरिकियो तमछन्द॥
पतिरति चाह्यो सकुचि तिय दीपकदयो बढ़ाय।
तनभूषण अतिकैरहे नगन उजेरो छाय॥

अथ अतद्गुण लक्षण॥

(दो०) तौन अतद्गुण सँग लिये जबगुण लागै नाहिं।
भाष्यो कविन विचारिसो उदाहरणके माहिं॥
उदा०—हायदई कैसी भई अनचाहत को संग।
चन्दन विष व्यापै नहीं लपटेरहत भुअंग॥
लाल चित्त अनुरागसों रँगिदीन्ह्यों सबअंग।
तऊ न छोड़त रावरो रूप सांवरो संग॥

अथ अनगुन अलंकार लक्षण॥

(दो०) अनगुन संगतितेजबै पूरण गुणसरसाय।
कह्यो यथामति कविन सो उदाहरण दरसाय॥
(दो०) पँचरँग रँग बेंदीबनी उठीउमग मुखज्योति।
पहिरे चीर चुनौटिया चटक चौगुनी होति॥

टी०। इहां चीर चुनौटिया के संगते पूरण गुण दरशानो याते अनगुन है॥

अथ मिलित लक्षण॥

(दो०) मिलित जहां सादृश्यते भेद न जान्योजाय।

अरुणाकरीण तिय चरणमें जावकलख्यो नजाय॥

(स०) इतफूलनको विनवो ठहराय लेवाय लैदूती मिलायलई। नँदलाल निहारि निहाल भये वरचंपकमाल सी बालनई॥ करते छुटिभाजि गईपग हूँ बलि पै न चली कछुचातुरई। हरि हेरे नपावत भावतीशंभु कुसुंभ के खेत हेरायगई॥

अथ सामान्य लक्षण॥

(दो०) जहां बराबरि वस्तु है भेद न जान्योजाय।
तहां कहत सामान्य हैं सुकबिन के समुदाय॥

(स०) राधिका शीशा के मंदिरमाहिं विलोकत कौतुक नाकमोती को। ताही समै पियप्यारेको देखि दुरी तहांजायकै चित्र जु तीको॥ कान्हजू ढूँढ़िकै हारिगये करनेश्च विनैकरि बारकितीको। चित्रवती युवती न सरापि कै लागिसरापन मानवती को॥

अथ उन्मिलित लक्षण॥

(दो०) उन्मीलित सादृश्यते भेद फुरै तबमानि।
कीरति आगे तुहिन गिरि छुयेपरत पहिंचानि॥

टी०। कीर्त्ति औ तुहिन मिलित ते भेदफुरयो छुये जानोगयो याते उन्मीलित है॥

मिलिचंदन बेंदी रची गोरे मुख न लखाय।
ज्यों ज्यों मदलाली चढ़ै त्यों त्यों उघरतजाय॥

अथ विशेषलक्षण॥

(दो०) यहै विशेष विशेष जब फुरै जो समता मांझ।

इनअलंकारों में सादृश्य से भेद फुरता है जैसे मिलित में भेद फुरे उन्मीलित और सामान्य में विशेष फुरे विशेष होताहै॥

तिय मुख अरु पंकज लखें शशिदर्शनते सांझ॥

टी०। संध्याके उदैमें चन्द्रमाके तियकामुख और कमलजानो परे है चन्द्रोदय में कमल संकुचित होजाता है और तियमुखमें पतिमिलनाभिलाष से दीप्ति बढ़ै है यहसमता में विशेषताफुरी इससे विशेषालंकार हुआ॥

(दो०) दिनमें किन कैसे लखो नहिं विशेष दरशाय।
प्रभाकोक अरु कुचन की दिनमें जानीजाय॥

टी०। इहां कोक चकई चकवा और कुचनकी सादृश्यता ते रैनिमें विशेषता फुरैहै रैनिमें चकई चकवा जुदे है जाते हैं उरोज मुदितहोतहैं॥

अथ गूढ़ोत्तर लक्षण॥

(दो०) गूढ़ोत्तर कछु भावते उत्तर दीन्हे होत।
उतरबेत तरुमें पथिक उतरन लायक सोत॥

टी०। इहां अपने मनसे भाव समझिके कि उतरनेकी बेराहै इसजगह उतरनेकी चाह इसके मनमें है सो विना पूछे उत्तर देदियो अंगुली का इशारह करि कि उसबेत वृक्षके नीचे उतरने लायकहै सोतभीहै। जलकी चाहपथिकको रहीहै याते गूढ़ोत्तरहै॥

उ०-(क०) भावन पथिक सांझ जावन करौगे कैसे सावन कुहूकी निशि निपट अँधेरामें। आगे मग पगन देखात धरियत कहूँ देहै अंग पवन प्रचण्ड झकझेरामें॥ कहै मदनेशरनमहत भयो है नयो परिहै पिशाच भूत प्रेतन के फेरामें। नेरा है न नगर सबेरा उठि जैयो भले बसौ आजु पथिक हमारे यहि डेरामें॥

शहर मँझाये ते पहर द्वैक बीति जैहैं बसती के ओर पै सरायँ है उतारेकी। भनत कवीन्द्र मगमांझही परैगी सांझ खबरि उड़ानीहै बटोही द्वैक मारेकी॥ प्रीतम हमारे

परदेश को सिधारे ताते दयाकरि भतिहौं रीति राह वारे की। निकट नदीके वर बरके तरे में बसौ चौंकोभति इहां चौकी पाहरूहमारे की॥

आँखिन से देखै नहीं कान न सुनति सासु आठौ याम हौंतो यही शोचन मरतिहौं। एतोहै नगर यामें बगर बसन होत रैनि की कहाहै जामें चोरही डरतिहौं॥ नंद निज नाह घर धाबहू की आई आँखि निपट अकेली याते विनती करतिहौं। पति परदेश यह पाती पहुँचावो बलि हाहारे पथिक तेरे पायँन परतिहौं॥

(स०) पोथी लिये पुनिबाटचले हम बूझती जोहैं कहौ कित जैहौ। बैदहौ तो मेरी बाँहगहौ विरहानल औषधि मोहिं बतैहौ॥ ज्योतिषी हौ तो चलौ घरमें पिय आवनकी सुघरीशुभ दैहौ। आलम आगे घने बनमें घनके उनयेते घने दुख पैहौ॥

टी०। इनसब कबित्तों में गूढ़ोत्तरहै। स्वयंदूतिका नायिकाहै॥

अथ चित्रालंकार लक्षण॥

(दो०) चित्रप्रश्न उत्तर दुओ एक शब्दमें होय।
मुग्धा तियकी केलि रुचि कौन भौन में होय॥

टी०। इहां प्रश्नोत्तर एकही शब्दमें हुए। कौन भौन में होय अर्थात् भौन के कोन में होतीहै॥

अथ द्वितीयभेद॥

अनेक प्रश्नोंकाएकउत्तर॥

(सो०) पतरी लै घर आव आगि बारिदै गोदले।
करपात पहिराव कान्ह कह्यो बारी नहीं॥

बहिर्लापिका ॥

(दो०) राजसभा क्यों गयो नहिं दधिमन्थन नहिंपीन
बवाखेत क्यों जोतिये तियरति क्यों नहिंदीन ॥

उत्तर । जामाना ॥

अथ तृतीयभेद ॥

(दो०) प्रश्न प्रश्न प्रति उत्तरहि कहे सांकरा होय ।
तृतिय भेद यह जानिये कहत सयाने लोय ॥

(छ०) कौनके सुत बालिके वह कौन बालि न जानिये ।
काँख चापितुम्हें जो सागरसात न्हात बखानिये ॥
है कहां वह वीर अंगद देवलोक बताइयो ।
क्योंगयो रघुनाथबान विमान बैठिसिधाइयो ॥

टी० । इसमें पद पद पर प्रश्नोत्तर है ॥

अथ सूक्ष्मालङ्कार लक्षण ।

(दो०) सूक्षम पर आशयलखै करैक्रिया त्यहि भाय ।
मैं देखी वहि शीशमणि केशनि लई छपाय ॥

टी० । नायिकाने बालोंमें मणिछपाई भाव यह कि मणिरूपी सूर्य जब छिपजायँगे अँधेरा होजायगा तब तुम्हें मिलूंगी बालों से अन्धकारका भावहै ॥

(स०) सखि सोहत गोप सभा महँ गोविंद बैठेहुते द्युति को धरिकै । जनुकेशव पूरण चन्द लसै चितचारु चकोरन को हरिकै ॥ तिनको उलटो करि आनि दियो कहुँ नीरज नीर नयो भरिकै । कहु काहेते नेकु निहारि मनोहरि फेरि दियो कलिका करिकै ॥

टी० । श्री कृष्णको काहू सखी ने कमलके फूल में जल भरिकै दियो भाव यह कि तुम्हारे विरह से राधिका के कमल नेत्रों में

आँशू भरि रहे हैं दुखित है तब श्रीकृष्णने उसे उलटा कलीकरि फेरि दियो भावयह कि रात्रि में हम मिलेंगे रात्रि में कमल संकुचित होजाते हैं यह क्रिया पर आशयहै इससे सूक्ष्मालङ्कार है॥

अथ पिहित लक्षण॥

(दो०) पिहित छपी परबातको आनि देखावै भाय।
प्रातहि आये सेज पिय हँसि दाबत तियपायँ॥

टी०। पैर दाबने का भाव यह कि तुम थकिगयेहो छिपीबात का भाव प्रकट किया॥

अथ गूढ़ोक्ति लक्षण॥

(दो०) गूढ़ उक्ति मिस और के कीजै पर उपदेश।
काल्हि सखी हौं जाउँगी पूजन गौरि महेश॥

(क०) कातिकी नहानगये सासुरे के लोग सबै बापुरे परोसऊ में एकऊ न रहिगे। तीरथ त्रिरात्र वास होतई मदन कवि मानत न कैस्यो अंग आँचन सों दहिगे॥ ऐसे समै कैसे कहिजात को सुनत मेरी चेरिऊ चुगुल चित चातुरीसों बहिगे। गहिगे सयान तन त्रानहू न कोऊ मेरे अनभल चाहि पापी काहू से न कहिगे॥

टी०। वचन विदग्धा नायिका गूढ़ोक्ति व्यङ्ग्य है॥

अथ व्याजोक्ति लक्षण॥

(दो०) व्याज उक्ति कछु और विधि कहे दुरे आकार।
सखि शुक कीन्हो कर्मयह माणिक जानि अनार॥

(क०) आलीहौं गईती आज भूलि बरसाने कहूँ तापर परै हैं पदमाकर तनैनी त्यों। व्रज बनितान बनितान पैरची है फाग तिनमें जो उधमिनि राधा मृगनैनी त्यों॥ घोरि डारी केसरि औ बेसरि बिथोरि डारी बोरि

डारी चूनरि चुचातें रंग रैनी त्यों। मोहिं झक झोरि डारी कंचुकी मरोरिडारी तोरिडारी कसनि बिथोरिडारी वेनी त्यों॥

अथ युक्ति अलंकार॥

(दो०) यहै युक्ति कीन्हे क्रिया मर्म छपाये जाय।
पीय चलत आँशू चले पोंछत नैन जम्हाय॥

अथ लोकोक्ति॥

(दो०) लोक उक्ति कछु वचन ते लीजै लोक प्रवाद।
नैन मूँदि दशमास लौं सहिहौं बिरह विषाद॥

(स०) राधिका माधव एकहि सेजपै धायलै सोई सुभाय सलोने। पारे महाकवि कान्ह को मध्य में राधे कही यह बात न होने॥ साँवरिह्वैहौ न साँवरे के रँग बावरी तोहिं सिखाई है कौने। सोनेको रंग कसौटी लगै पै कसौटी क रंग लगै नहिं सोने॥

अथ छेकोक्ति॥

(दो०) लोक उक्ति कछु अर्थ युत सो छेकोकति मानि।
चोरी को गुरहै सखी अति मीठो जिय जानि॥

टी०। चोरी का गुड़ अतिमीठा होता है यह लोकोक्ति तिस में भाव यह कि निजस्त्री से परस्त्री अतिरुचै है॥

(स०) ब्याउरकी उरकी परपीर सो बाँझ समाज में जानतको है। पिंड में बोधा ब्रह्मांड लिख्यो दृग दीन्हे बिना पहिंचानतको है॥ पाहनपोत तरी सरिता कहिये विसवास तो मानत कोहै। जाके लगी दिल जानत ताहिं को जान पराये कि जानत को है॥

अथ विवितोक्ति लक्षण ॥

(दो०) श्लेष छयो परगट करै विवितोकति है ऐन।
पूजन देव महेश को कहत देखाये सैन ॥

टी०। नायिकाकी उक्ति नायक से कि ये जे महेशरूपी मेरे कुच हैं तिनको पूजन करो इसभाव से विवितोक्ति है ॥

(दो०) वृषभ बिराने खेत परि पल में क्यों न पराय।
रखवारो पहुंचो निकट यों कहि दियो जनाय ॥

टी०। इहां वृषभश्लेष बैलसों कहनूति एक अर्थ पुनः परकीया नायिकाकी कहनूति पर पतिसों इसभावसे विवितोक्ति है ॥

अथ वक्रोक्ति लक्षण ॥

(दो०) जहां काक श्लेप स्वर अर्थ फेर जहँ होय।
रसिक अपूरुबहो पिया बुरो कहत नहिं कोय ॥

(क०) खोलो जू केवांर तुमकोहो यहि बेरहरिनाम है हमारा बसो कानन पहारमें। हों हों प्यारी माधो तो जू कोकिलाके माथे भार मोहनहों एरी परो मंत्र अबिचारमें ॥ रागीहों रँगीली जाय याचो कहू दाता पास भोगीहों छबीली जाय बसो जू पतार में। नागरहों नागरी तो लादो क्यों न टांडो जायहों तो घनश्याम बरसो जू कोऊ खारमें ॥

अथ स्वभावोक्ति लक्षण ॥

(दो०) स्वभावोक्ति सो जानिये बरणे जाति स्वभाय।
हँसि हँसि हेरति फिरि हँसति मुहँ मोरति सतराय ॥

(क०) आई खेलि होरी घरै नवल किशोरी कहूं बोरी गई रंगमें सुगंधन भकोरै है। कहै पदमाकर यकंत चलि चौकी चढ़ि हारनते बारनते फंद बंद छोरै है ॥

घांघरेकी घूमनि सो ऊरु न दुबीचै दाबि कंचुकी उतारि सुकुमारि मुख मोरै है । दंतन अधर दाबि दूनरि भई सी जाति चौवर पचौवर सो चूनरि निचोरै है ॥

अथ अत्योक्ति लक्षण ॥

(दो०) दान युद्ध अरु दया पुनि धर्म सुयश परताप ।
गुण अरु रूप विशेषता है अत्योक्ति अमाप ॥

शूरता अत्युक्ति यथा ॥

(क०) माड़व उजैनि भनि भूषण औ भेलसा त्यों शहर सरावने परावने परतहैं । गिरिवाने गोंड़वाने तिलंगाने फिरंगाने हफसाने हिम्मतिकी हद हहरतिहैं ॥ शाहूके सपूत शिवराज बीर तेरी त्रास गढ़ धर भूधरते धीर न धरतहैं । गोलकुंडा बीजापुर आगरे दिलीके कोट बाजे बाजे दिन दरवाजे उघरतहैं ॥

कत्ताकी कड़ाकनि चकत्ताको कटक कूट कीन्ही शिवराज तू तौ अकह कहानियां । भूषण भनत सब मुलुक तिहारे त्रास दिल्ली औ बिलाइति सकल बिललानियां ॥ आगरे अगारनि वै नाघती पगारनि सम्हारती न बारनि मुख न कुम्हिलानियां । कीबी कहै यों कहि गरीबी गहि भागि चलौ बीबी बिन सूथन सुनीबी बिनरानियां ॥

अथ दानबीर यथा ॥

(स०) लेत न बेर कुबेर बनावत बित्त गुणीन को दै चितचायन । याचक होत अयाचक हेरत फेरत दृष्टि स सीधे सुभायन ॥ दान विधानं कथा अप्रमान करैं कवि वृन्द अमंद से गायन । दारिद दीन दवारिको बारिद भोजग एक प्रयागनरायन ॥

अथ निरुक्ति लक्षण ॥

(दो०) सो निरुक्ति जब योगते अर्थ कल्पना आन ।
ऊधो कुबिजा बश भये निर्गुण यहै निदान ॥

(क०) आप भये दूलह दुलहिया भई कुबिजा जू- योग पायो दाइजे सो इहां दै पठायो है । लेहु यह बैना औ निरौना करौ गोकुल में गोद डारो यशुदा के ऐसो सुत जायोहै ॥ तोरौ दुर तोरौ बीर तोरौ खगवारो यह तोरि डारौ कंकण जो कुदिन गढ़ायो है । लेहुरी सहेली गरेसेली डारौ सांवरेकी लेहुजू भसम खर्च खसम पठायो है ॥

काहेको अधीन होती नीचनको संगकरि काहे दूति- कानहूंको शीशन चढ़ावतीं । काहेको लगावतीं अतर अंग अंगन में बेनी शीशफूल नहीं मोतिन गुहावतीं ॥ जैसुख जरीकेचीर रंगन रुचिर चारु जरिया सुनारनसों गहनो गढ़ावतीं । आगेहीते जानतीं किरीझिहैं गोपाल तौ तौ यतन हजार ऊधो कूबर बढ़ावतीं ॥

अथ भाविक लक्षण ॥

(दो०) भाविक भूत भविष्य जब परतिछ होय बनाय ।
बृन्दाबन में आजु वह लीला देखी जाय ॥

टी० । इहां वह लीला आगे की भूत औ अबभी वह लीला वर्तमान औ ऐसीही आगेभी होवैगी यह भविष्य इससे भाविक अलङ्कार है ॥

(दो०) समरभूमि चलि देखिये देहधरे जनुवीर ।
लरे करन अर्जुन दुओ परे अजौं वे तीर ॥

अथ उदात्त लक्षण ॥

(दो०) सो है विधिको होतयक सम्पति चरितहि जान ।
उपलक्षण श्लाघ्य सो अधिक दुहून बखान ॥

श्लाघ्य चरित यथा ॥

(दो०) करतभये जाके तरे राधाकृष्ण विहार ।
क्यों न होय सो तरुनको वंशीवट शृङ्गार ॥

अथ संपति चरित यथा ॥

(दो०) जासु दन्तकी शुद्धिको नौलख भरत कहार ।
सो रावण प्यासो परो समरभूमि भुज भार ॥

अथ प्रतिषेध लक्षण ॥

(दो०) सो प्रतिषेध प्रसिद्ध जब अर्थ निषेधो जाय ।
मोहन कर मुरली नहीं है कछु बड़ी बलाय ॥

(स०) आजअली इकगोपसुता भइ बावरी नाहिंन अङ्ग सम्हारै । मातु मनावति देवन पूजति सासु सयानी सयानी पुकारै ॥ यों रसखानि खरो सगरो ब्रज आनहिं आन उपाय बिचारै । कोउ न कान्हरकेकरते यह बैरिनि बाँसुरिया गहिडारै ॥

अथ विधि लक्षण ॥

(दो०) अलङ्कार विधि सिद्धिजो अर्थ साधिये फेर ।
कोकिलहै कोकिल जबै ऋतु में करिहै टेर ॥
सरस रसभरे लसतहैं घुमरत घिरत अकास ।
तबये घन घनहैं जबै बरषैं प्रीतम पास ॥

अथ हेत अलङ्कार लक्षण ॥

(दो०) हेत अलंकृत दोय विधि कारण कारज सङ्ग ।
कारण कारज ये जबै लहत एकही अङ्ग ॥

(दो०) बिरही जन बनितानको मांन मरोरन सन्त।
बलितबास कुसुमित कलित आयो ललितबसन्त॥

टी०। इहां बसन्त कारण मानिनी को मानछूटिबोकार्य याते हेतुको प्रथम भेद है॥

अथ द्वितीय हेतु॥

(दो०) कोऊ कोटिक संग्रहै कोऊ लाख हजार।
मों सम्पति यदुपति सदा विपति बिदारनहार॥
तुलसी को सेवन सदा राधा हरिको ध्यान।
यही स्वर्ग अपवर्ग है मेरे यही निदान॥

इति श्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासी
पण्डितबन्दीदीनदीक्षितनिर्मित व संग्रहीत श्री
प्रयागनारायणविलास अलङ्कार
ग्रन्थः सम्पूर्णमगात्॥

इति॥